Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सामयिक साहित्य-सदन का १६वां पुष्प। संपादक—श्रीहरिकृष्ण 'प्रेमी'

आज का प्रेम

Aaaj ka pram

(कहानी-संग्रह)

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

लेखक—

श्री व्रजकिशोर 'नारायण'

Brij Kishoor Narayen

Samyet Sahity-Sadan
Lahoor

प्रकाशक—

सामयिक साहित्य-सदन,

लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक—
श्री उमाशंकर त्रिवेदी एम०, ए०
व्यवस्थापक—सामयिक साहित्य-सदन,
चेम्बरलेन रोड, लाहौर।

acc: no: 14302
Rs 2-9-0

199

प्रथम संस्करण—१९४४ 1944
मूल्य २।)

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक—
श्रीकृष्ण दीक्षित
बाम्बे मैशीन प्रेस,
मोहनलाल रोड, लाहौर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ललित को

'नारायण'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

SPS
891.433 B 83 A
14302

Rajeev

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्पष्टीकरण

बिहार प्रांत की मोतिहारी एक्स्ट्रा जेल की चहारदीवारी में बन्द रह कर नारायण जी ने अपनी सूनी घड़ियाँ बिताने के लिए 'आज का प्रेम' की कहानियाँ लिखी हैं। पिंजरे में बन्द पक्षी को जैसे हरे-भरे वन-कुँजों और साथियों की याद सताती है, उसी तरह जेल में बन्द रहनेवाला मनुष्य कल्पना के रंगों से रँगकर अतीत की घटनाओं को आँखों के सामने बार-बार लाकर उन्हीं से अपना दिल बहलाता रहता है। नारायण ने अपनी जवानी की आँखों से संसार का जो प्रमत्त रूप देखा है वही उनकी सूनी घड़ियों का चिंतन बन गया और वही चिंतन कला का आधार पाकर कहानियों में परिणत हो गया।

ये कहानियाँ यथार्थवाद का यथार्थ प्रतिनिधित्व करती हैं। नारायण जी ने इस प्रकार की घटनाओं को आस-पास की दुनियाँ में घटित होते हुए देखा है—और वह उनसे विस्मित हुए हैं और उसी विस्मय की प्रेरणा से उन्होंने इन दुर्घटनाओं को समाज के सामने रखने का साहस किया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहानियाँ ज़ितनी यथार्थ हैं—इनका वर्णन भी उतना ही स्पष्ट और बेलाग है—इतना खुला हुआ कि अनेक नैतिकता की दुहाई देने वाले पाठक नाक-भौं भी सिकोड़ेंगे। इन कहानियों को प्रकाश में लाना चाहिए या नहीं—इस विषय पर मुझे काफ़ी विचार करना पड़ा है। आज के समाज का नैतिक जीवन पतन की पराकाष्ठा को पहुँच गया है। हमारा देश का केवल पेट ही भूखा नहीं है—बल्कि उसकी काम-वासना भी बेतरह भूखी है। भारतीय संस्कृति वासना को दबाए रखना ही पसंद करती है—लेकिन आज की शिक्षा और वातावरण इसे उत्तेजित करने में सलग्न हैं। हमारे नय-युवकों की चर्चा का मूल विषय स्त्री है और हमारी नवयुवतियों का स्वप्न नवयुवक है। वे मन की दुनियाँ में निरंतर अभिसार करते रहते हैं और जहाँ उन्हें ज़रा भी एक दूसरे से मिलने का अवसर मिलता है—अपना आपा खोने लगते हैं। ऐसी ही तस्वीरें इन कहानियों में लेखक ने खींची है।

हमारे ऋषियों ने धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष चार जीवन की चरम् साधनाएँ मानी हैं। इस युग में चरित्र की उच्चता का केवल ढोंग रह गया है वास्तविकता नहीं। इसी दुर्बल स्थिति के कारण कामकी चर्चा आज अश्लील समझी जाती है। शुभ उद्देश्य से की हुई चर्चा अशुभ नहीं कही जा सकती। जिस घटना की चर्चा करना भी लोग पाप समझते हैं उसका समाज में घटित होना वह कैसे बर्दाश्त करते हैं। नारायण जी ने बड़ी निर्भीकता से लोगों के सामने आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के नवयुवक-नवयुतियों का व्यापक बीमारी की एक्सरे से चित्र खींच कर रख दिया है । यह बीमारी हमारे जातीय जीवन को खोखला कर रही है। जो नौजवान नारी को केवल वासना की तृप्ति का साधन समझते हैं—जो अध्यापक बन कर भले घरों में घुसते और जवान लड़कियों को प्रेम का पाठ पढ़ाना प्रारंभ कर देते हैं, समाज उन्हें बर्दाश्त कैसे करता है ? ये देश के होनहार नागरिक सड़क पर चलते हुए प्रत्येक लड़की पर फबतियाँ कसते हैं और अपने आपको धन्य समझते हैं । इसी तरह नारी-वर्ग भी सात्विकता और पवित्रता को छोड़ कर केवल पुरुषों को रूप-किरणों से जलाना अपने जीवन की चरम सार्थतकता समझता है । हमारा समाज इस स्थिति पर पहुँच चुका है, यही तो ये कहानियाँ पुकार-पुकार कर कह रही हैं ।

इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है कि नारायण जी ने अतिरंजना से काम नहीं लिया। यह तो एक वैज्ञानिक का विश्लेषण है। विज्ञान और धर्म की दुनिया में मनुष्य बहुत ऊँची धरातल पर पहुँच कर प्रवेश करता है—वैज्ञानिक पुरुषों में उन वस्तुओं, भावनाओं और क्रियाओं की चर्चा खुल कर होती है, साधारणतः जिनकी चर्चा भी असंभव है । इसी तरह हमारी प्रचीन धार्मिक पुस्तकों में भी देखिए कैसी-कैसी अश्लील कथाएँ हैं। मन्दिरों में बैठ कर उनकी कथाएँ स्त्री-समुदाय भी सुनता है। उन पर अश्लीलता का आरोप बड़े-बड़े नैतिकतावादियों ने भी नहीं किया—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अर्थात् वह वातावरण ऐसा है जहाँ पाप-भावनाएँ पनप नहीं सकतीं। समाज की सच्ची तस्वीर खींचने के लिए 'आज के प्रेम' में जो कहानियाँ उपस्थित की गई हैं, पाठक उन्हें ग़लत दृष्टिकोण से न देखें, यही मेरी प्रार्थना है।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरुषकी वासना केवल गुह्येन्द्रियों में होती है
किन्तु स्त्री की नस२ में कामवासना भरी रहत

पंजाब में

चंद सालों की बात है जब कि मुझे पञ्जाब के एक सरकारी अफ़सर के यहाँ गृह-शिक्षक के रूप में जाना पड़ा था; वे नहर-विभाग के एस० डी० ओ० थे; दिल के साफ़, मगर ज़बान के कड़ुवे; रंग के साँवले किन्तु मन के गोरे। धर्म के आर्य-समाजी और कर्म के सनातनी।

उन की विधवा पुत्रवधू 'हिन्दी-कोविद' परीक्षा की तैयारी कर रही थी। मैं उन्हीं के मकान में ठहरा था। दो तीन दिनों के बाद की ही बात है। मैं अपने ऊपर के कमरे से नीचे आ कर बैठा हुआ था। शाम को सैर करने के पहले मैं ऊपर कपड़े बदलने के लिए गया, लेकिन मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना ही न रहा—जबकि मैंने देखा—उसी अफ़सर की सोलह वर्षीय पुत्री मेरे कोट के ऊपर सिर रख कर सोई हुई है। दो दिन पूर्व उस से मेरी आँखें मिली तो ज़रूर थीं, किन्तु मैं उस समय किसी प्रकार भी उस ओर जाने को प्रस्तुत नहीं था। मगर उसे अचानक अपने बिछौने पर सोये देख कर न जाने मेरे मन में कितने प्रकार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के विचार दौड़ गए। मैं बिना कोट पहने हुए ही सैर के लिए चल पड़ा। लेकिन जब दूसरे दिन भी ठीक यही घटना हुई तो मैं अपने आप को सम्भाल न सका। दूसरे दिन की घटना में एक विचित्रता भी थी। आज वह अपने सिर में एक पट्टी भी बाँधे हुई थी, जिससे यह मालूम हो रहा था कि वह दर्दे-सर में मुब्तिला है। उसकी आँखें बन्द थीं। लेकिन अन्दर की पुतलियों की उथल-पुथल पलकों में से स्पष्ट कह रही थी कि वह सोई नहीं, जाग रही है। मैंने पास बैठ कर उसके सिर पर हाथ रखने की चेष्टा की, किन्तु डर के मारे हाथ काँप गया। मन में मैल जो था।

उसी वक्त नीचे से उसकी माँ ने पुकारा—'नीरजा!' वह जाग पड़ी और मेरी ओर मुसकराहटभरी नज़र से देखती हुई ज़ीने से नीचे उतर गई। मैं भी अपने एक मित्र से मिलने के लिए शहर में चला गया। मैंने अपने मित्र से इन दो दिनों की घटना कह सुनाई। वह सुनते ही तड़प उठा। उसने चिल्ला कर कहा—"तुम एक नम्बर के बेवकूफ़ हो। भला, यह मौका हाथ से निकलने देनेवाला था? काश! मैं तुम्हारे बदले होता!" उसके मुँह से गर्म आह निकल पड़ी। मैं हँसने लगा। मुझे याद है कि मैंने उसे कहा था—"भाई, कम से कम मैं इतनी हिम्मत नहीं कर सकता।" इस पर उसकी बात भी मैं नहीं भूला—"फिर तुम मर्द ही नहीं।"

मैंने अपने उस उत्तर के अन्तर्प्रादेशिक मनोविज्ञान को प्रायः प्रत्येक प्रेम-संबंधी-घटना में कार्य करते देखा है। अपवाद-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वरूप दो चार घटनायें छोड़ कर मेरा हृदय सदा वैसा ही भीरु बना रहा है। इस क्रिया में आदर्शवादिता तो नहीं किन्तु समाजवादिता अवश्य काम करती रही है। कहीं-कहीं आदर्शवाद ने भी मुझ पर रंग जमाया है, मैं इस को भी मानता हूँ।

हाँ तो, अब नीरजा के साथ मेरे तीसरे दिन की घटना सुनिये। मैं कोठे पर बैठा हुआ कुछ लिख रहा था कि वह तश्तरी में कुछ मिठाई लेकर आई और धीरे से मेज़ पर रख कर खड़ी हो गई। मैंने पूछा—"मिठाई कहाँ से आई है?"

"मैंने खुद बनाई है।"

"क्यों, आज क्या है?"

"कुछ नहीं।"

"फिर मिठाई बनाने की ज़रूरत?"

"आपका मुँह मीठा करना है।" उसने हँस कर कहा।

"लेकिन लगती तो नहीं मीठी!"

"लाइए, मैं खिलादूँ" ऐसा कहते हुए उसने लपक कर मेरे मुँह में एक बड़ा-सा लड्डू ठूँस दिया और कहकहा लगा कर भाग गई।

उसका भाग जाना मुझे उतना बुरा नहीं मालूम हुआ जितना कि मुझे एक गोरखधन्धे में डाल जाना। रात भर बेतुकी कल्पनाएँ करता रहा। मिलने पर ऐसी बातें होंगी। इस प्रकार बैठेंगे। उस तरह लेटेंगे। वह, शर्मायेगी, मैं फुसलाऊँगा। वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झिझकेगी, मैं अपनी ओर खीचूँगा और न जाने कितनी वासना-मय भावनाएँ एक एक करके आईं और विलीन हो गईं। सुबह होते ही रात का नशा काफ़ूर था। तमिस्रा के वासना-तिमिर को अरुण की स्वस्थ किरणें पी गईं, पर मेरे हृदय की प्यास न मिटी।

पूरे दो दिन रात प्रतीक्षा में व्यतीत हो गए, किन्तु रात की कल्पनाएँ दिन में क्या रात में भी पूरी होती नहीं देखीं। इस तरह मामूली देखा-दाखी में ही तीन दिन व्यतीत हो गए और वहाँ से एक और स्थान में जाने का कार्यक्रम बन गया। सारे परिवार के साथ मैं भी लारी में इष्ट-स्थान के लिए रवाना हुआ। रास्ते में एक जगह गड्ढा था। ड्राइवर के सम्भालने पर भी लारी का एक चक्का गड्ढे में जा धँसा। बड़े ज़ोर का धक्का लगा और धक्के के साथ साथ ही सिन्दूर की डिबिया ऊपर से नीरजा की जाँघों पर आ पड़ी। सारी सलवार लोहू-लुहान सी मालूम होने लगी। उसने मेरी ओर कातर नेत्रों से देखा। मैं ने भी आव देखा न ताव, झट रूमाल निकाल कर उसकी जाँघों को रगड़ना शुरू कर दिया और तब तक रगड़ता ही रहा जब तक कि मेरे कानों ने यह आवाज़ सुनी—"चन्द्र जी!" मैंने चौंक कर देखा। नीरजा की दादी की आँखें आग उगल रही हैं। हाथ से रूमाल छूट कर मेरे पैजामे पर गिर पड़ा और मेरी जंघा भी नीरजा-सी हो गयी। लेकिन उस वक्त उस कवित्व का सोचना मानों घर जलते वक्त हाँडी की फ़िक्र करनी थी। डर के मारे होश हिरन हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गए। नीरजा सहमी हुई लारी के एक कोने में सिमट-सी गई और मैं उसके पास से उठ कर माता जी के बगल में बैठ गया, मासूम और भोली भाली सूरत बना कर।

करीब दो घण्टों तक किसी ने किसी से बातें नहीं कीं। इन दो घण्टों में मेरी जो हालत हुई—उसका वर्णन करना असम्भव है। कभी दिल में यह आता था कि बुढ़िया वहाँ पहुँच कर अपने बेटे से ऐसी मरम्मत करायगी कि जिसका कोई ठिकाना नहीं। इस बात को सोचकर ऐसा जी चाहता था कि चलती लारी से कूद जाऊँ, मगर हिम्मत नहीं थी। और कभी कभी यह भी सोचता था कि भला इस नामाकूल बुढ़िया को इन सब बातों की क्या जानकारी! लेकिन फिर भी उस कम्बख्त की आँखें कैसी हो गई थीं, मानों कच्चा चबा कर ही चैन लेगी।

लारी का सफ़र करीब सात घण्टों का था। सफ़र की आधी अवधि समाप्त हो चुकी थी। उस घटना के बाद इस स्थान तक किसी ने ज़रूरत से ज्यादा बात नहीं की। नीरजा की दादी का रुख कुछ बदला हुआ अवश्य था। वहाँ पहुँचते ही दादी जी ने नीरजा की ओर ताक कर कहा—"जाकर अपने पिता जी को भेज दे।" लारी सड़क पर खड़ी थी। नीरजा के पिता जी का दफ़्तर पास ही था। नीरजा की विधवा भाभी, सौतेली माँ और छोटी बहन कार्टर की ओर चली गई। मेरे साथ दादी जी वहाँ पर खड़ी थीं। डर के मारे मेरे पावों-तले से धरती खिसक रही थी। मैंने समझा कि शायद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूजा यहीं पर शुरू हो जायगी। आख़िर ये लारीवाले और क्वार्टरों के लोग जो धीरे-धीरे इधर इकट्ठे हो रहे हैं क्या समझेंगे ! इस बेवकूफ़ औरत को किसी भलेमानस को बेइज़्ज़त करने का ढंग भी नहीं मालूम। अगर जूते ही लगवाने थे तो घर पर बुला कर एक के बदले दस लगवा लेती, लेकिन यहाँ— सरे-राह—पगड़ी क्यों लूट रही है ? या खुदा, तूही आबरू, रख सकता है ! अन्तरात्मा की दूसरी ध्वनि ने कहा—मगर तुम जैसे भलेमानसों के लिए ऐसी जगहें ही ठीक होती हैं। अब लूटो अपनी रसिकता का मज़ा !" मैं इसी प्रकार की कई बातें सोच ही रहा था कि नीरजा के पिता जी आ गए।

"नमस्ते, मास्टर साहब !"

"नमस्ते, नमस्ते"

"प्रसन्न हैं न ?"

"जी हाँ, सब आप की कृपा है।"

दादी जी खड़ी-खड़ी मुसकरा रही थी। उन्हें इस स्वरूप में देख कर बहुत कुछ हौसला हुआ। इसके बाद नीरजा के पिता के साथ दादी जी की पारिवारिक बातें शुरू हो गईं और अपने राम नास्तिक होने पर भी खुदा का शुक्रिया अदा करते हुए चल पड़े।

इस अघटित घटना के बाद मैंने ज़रा अपने आप को दिल-फेंकी से बचाये ही रखा। मगर चढ़ती हुई जवानी की बागडोर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्भाले रखना ज़रा मुश्किल काम था और उसे रोक रखना तो और भी बुरा सिद्ध हुआ। मर्ज़ बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की। बस, मैंने भी दवा-अवा पीना बन्द कर दिया। नीरजा की आकर्षक आँखें, गोल और गुलाबी चेहरा, मानो उस के सोलहवें वर्ष में सोलहों कला साकार हो गई थीं। वह नख से शिखर तक कालिदास की शकुन्तला सी मालूम होती। उसके घर में गृह-शिक्षक के नाते मुझे भी आवश्यकता से अधिक सुविधा और स्व-तन्त्रता प्राप्त थी। प्रायः सप्ताह में दो तीन दिन तो उसी का परोसा हुआ भोजन करना पड़ता था । आँखों की भाषा ने प्रेम का गम्भीर गीत लिखना प्रारम्भ कर दिया था। आँखों की राह दिल का धरातल भी विषम बन रहा था। कड़ी, किन्तु विश्वासपूर्ण निगरानी रखने पर भी, हम एक दूसरे के साथ कोई न कोई ऐसी बात ज़रूर कर बैठते जिससे हमारा सम्बन्ध निकट और घनि-ष्टतर होता चला जाता। इस प्रकार की घटनायें जानबूझ कर करने पर भी स्वाभाविक और अन्तः प्रेरित ही हुआ करती।

करीब एक मास के पश्चात् हमें उस परिवार के नौकर से कुछ झगड़ने का दुर्भाग्य (सौभाग्य) प्राप्त हो गया। वह कुछ ज़िदी मिज़ाज़ का आदमी था। दूसरों की सिखाई या बनाई हुई बात काम में लाना गोया उसके लिए कुफ़ था। एक दिन दोपहर को मैंने उस से कहा—"साधू, ज़रा नीरजा से सुई-धागा तो माँग लाओ।" वह भी न जाने किस 'मूड़' में था, बोला—'मास्टर साब,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस समय मैं अन्दर वन्दर नहीं जाऊँगा।" बस, मेरा भी पारा गरम हो गया। मैंने उसे उल्लू नालायक यहाँ तक कि हरामज़ादा भी कह डाला। बेचारे ने नौकरी का ख्याल करते हुए मुँह पर आये जवाब को रोक लिया। पर दिल में तो मेरी बात चुभ ही रही थी। मुझे अपनी बेवक़ूफ़ी तब मालूम हुई जब उस ने रात में लपलपताती जीभ वाली लालटेन लाकर टेबल पर 'ठप' से पटक दी और मेरे पुकारने पर भी कमरे से बाहर चला गया। तबीयत तो हुई कि पीछे से जूता या पत्थर उठा कर उसकी पीठ पर दे मारूँ, लेकिन कुछ बातों का ख्याल कर खून का घूँट पी कर रह जाना पड़ा।

उस सहनशीलता का सुन्दर फल इतना मीठा होगा इसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। सन्ध्या बीत चली थी। वह घूमती हुई मेरी कोठरी में चली आई, यह समझ कर कि मैं कोठरी में नहीं हूँ और मैं था भी नहीं। हाँ, कोठरी के बाहर बरामदे में बैठकर कुछ उसी के विषय में सोच ज़रूर रहा था कि आँखों को ऐसा मालूम हुआ मानो कमरे में लालटेन इधर से उधर हो रही है। मैं धीरे से उठकर खिड़की के पास आ गया। नीरजा की कान्ति दो लालटेनों की रोशनी में एक अद्‌भुत छटा बिखेर रही थी। उसने धीरे से मेरी लालटेन उठा ली और टेबल पर अपनी लालटेन रख कर मेरी कविता वाली कॉपी को देखना शुरू किया। शायद वह जानती थी कि मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कमरे के आसपास नहीं हूँ। कापी को उलट पलट कर देखते हुए एक पृष्ठ पर उसकी आँखें गड़ गईं। वह पढ़ने में तल्लीन हो थी कि मैंने कोठरी में प्रवेश किया। वह घबरा सी गई। मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाला। सेंध पर पकड़े गए चोर की भाँति उस का पैर ज़मीन में गड़ गया। मैंने अपनी खराब लालटेन उसके हाथ में देख कर पूछा—"लालटेन बदलने की क्या ज़रूरत थी?"

उसने सिर नीचे कर धीरे से कहा—आप कविता कैसे लिखेंगे?" मैं इसके प्रत्युत्तर में कुछ कहने के लिए सोच ही रहा था कि वह मुसकराती हुई अन्दर चली गई।

वह तो चली गई, लेकिन मैं सोचने लगा-'आखिर यह मुझ से इतना प्यार क्यों करती है? कवि समझकर या निकटतम भावुक युवक समझ कर—मैं भी उस पर प्राण क्यों देता हूँ, इन बात। के तर्क-वितर्क में मैंने पहले की कुछ देखी-सुनी घटनाओं को सामने रखा। उनके तारतम्य से मैं अब तक इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि किसी किशोर-किशोरी या युवक-युवती का पारस्परिक प्रणय स्थिर या एकनिष्ठ नहीं हो सकता। उनमें डिग्रियों का फ़र्क बेशक हो। मान लो एक तरुण चार रमणीक स्थानों पर जाता है। चारों की प्राकृतिक और बाहरी सजावट तथा सुघरता पर मुग्ध हो कर उन्हें ही अपना सर्वस्व समझने लगता है। उसके जीवन में आए हुए अब तक के सुन्दर स्थानों का प्रभाव इन नये चारों के सामने फीका पड़ जाता है। कभी कभी यह भी होता है कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहले की सुन्दर वस्तु का प्रभाव उसके हृदय और मस्तिक पर इतना होता है कि नवीन वस्तु का जादू उस पर चलता ही नहीं। लेकिन उन चार स्थानों की मनोरमता पर भूला हुआ युवक अवश्यमेव चारों को एक समान ही पसन्द नहीं करता। कहने के लिए तो वह युक्ति देता है कि, मैं इन चारों को चार गुणों के कारण एक सदृश्य चाहता हूँ। किन्तु वास्तविकता और मनोविज्ञान यह मानने के लिए तैयार नहीं। वह युवक भिन्न भिन्न गुणों के वशीभूत होकर भिन्न भिन्न वस्तुओं को बेशक प्यार करता हो, लेकिन यह निश्चित है कि वह एक को अन्य तीनों से कुछ अधिक ज़रूर चाहता है। इसीलिए किसी आकस्मिक अवसर पर उसकी आत्मा यह कह उठती है—"मैं वहाँ जाना अधिक पसन्द करूँगा।" प्रेम के विषय में भी बहुत कुछ ऐसी ही बातें हैं।

नीरजा के साथ घनिष्ठता का क्रमगत विकास निकट रहने की लम्बी अवधि के कारण ही था। इसलिए मैंने यही समझा कि प्रेम किसी व्यक्ति-विशेष के साथ बाँधा नहीं जा सकता। प्रेम के पात्र-पात्री की अवधि-सम्बन्ध-सीमा या संख्या निर्धारित करना अपने आपको धोखा देना है। इस मनोविज्ञान के प्रतिकूल पथ पर चलने वालों को भी मैंने देखा है। वे या तो मानसिक व्यभिचार में व्यस्त रहते हैं या अन्तरात्मा की हत्या करते हैं। इन में से कुछ लोग समाज-भीरु या धर्म-भीरु भी होते हैं, जो समझते हैं कि ऐसा करना स्वर्ग की राह में काँटे बोना है, इसलिए ऐसे लोगों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का गुप्त जीवन उपर्युक्त मनोविज्ञान के विपरीत होने के कारण प्रतिक्रियात्मक हो कर उससे भी बुरा होते हुए देखा जाता है।

कृष्ण की अनेक पत्नियाँ थीं, लेकिन परकीया राधा पर ही उनका अधिक प्रेम था। रुक्मिणी और सत्यभामा जैसी सुन्दरियाँ भी कृष्ण को राधा से विरक्त नहीं कर सकीं। इस में कृष्ण की कमज़ोरी या राधा की सुन्दरता दोनों का ही दोष नहीं। राधा कृष्ण से दूर रहती थी। रुक्मिणी और सत्यभामा रातदिन कृष्ण के दायें-बायें। लेकिन क्या वहाँ निकट के निवास ने कृष्ण का रास्ता रोका? या सत्यभामा या रुक्मिणी ही अपनी राजसी सुन्दरता और सजावट से ग्वालिन राधा की सादगी का आकर्षण छीन सकीं? क्या राधा को अपने पति या लोक-लाज का भय कृष्ण से विलग रख सका? नहीं। तो इसका कारण क्या है? यहाँ पर प्रेम की दूसरी शक्ति काम करती है। वह है पात्र-पात्री का पारस्परिक अज्ञात आकर्षण। आकर्षण व्यक्ति की सुन्दरता और उसके गुण विशेष पर निर्भर है। किसी किसी को तो अचानक देखकर चित्त में एक ऐसी प्रेरणा या भावना पैदा हो जाती है मानो वह मेरा है और मैं उसका। आकर्षक की ओर से प्रेम का प्रतिकार न मिलने पर भी आकर्षित व्यक्ति उसको प्यार करता है।

मुझे तो प्रतिकार क्या प्रेम की आन्तरिक आत्मा भी नीरजा के द्वारा प्राप्त हो रही थी। मैं ही केवल उस की ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आकर्षित नहीं था बल्कि 'दोनों तरफ़ थी आग बराबर लगी हुई।' हमारा प्रत्येक क्षण प्रेम के वार्तालाप और चिन्तन में व्यतीत हो रहा था। हर रोज़ नई नई तजवीज़ें तय्यार होती। नये नये हवाई महल खड़े किये जाते। धीरे-धीरे अरमान का बोझ सर से उतर रहा था और अभिलाषा-सुन्दरी बोझिल हो रही थी। नीरजा की प्रत्येक हरकत और मेरा हर एक काम एक दूसरे के प्रति प्रेमाञ्जलि समर्पित करता हुआ मालूम होता। जिस किसी दिन मेरा दिल उदास रहता वह मेरे चेहरे से पढ़ लिया करती और रात को सोने के पहले हारमोनियम पर उसकी सुकुमार अँगुलियाँ थिरक उठतीं। उस की मधुर ध्वनि प्रकम्पित होकर कहती—

"कहो ना आस निरास भई,
दिया बुझे फिर से जल जाये।
रात अँधेरी जाये, दिन आये,
बुझती ज्योति है इन अँखियन की॥
समझो गई तो गई। कहो ना आस निरास भई!"

पुराने गाने के इन टूटे फूटे शब्दों को भी उसके दर्दभरे गले का संयोग मिलता और वे मुझे पागलसा बना देते। मैं नीरजा की उस हृदयहारिणी ध्वनि को शब्दों में किस प्रकार बाँधूँ? इस अनुभूति से पाठकों को शायद वंचित ही रहना पड़ेगा। यही एक ऐसी कला है जिसे हम दूसरी कला के उपासकों के द्वारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिव्यञ्जित नहीं करा सकते। तानसेन की बहुत प्रशंसा है। वह संगीत का अप्रतिम विद्वान् और मधुरतम गायक था, किन्तु आज उसकी आवाज़ कोई नहीं सुन पाता और नाही साहित्यकार ही उस आवाज़ को शब्दों में बाँध पाते हैं। इस स्थल पर मुझे अपनी विवशता का इतना दुख है जिस का मैं वर्णन नहीं कर सकता। पाठकों को इसका अनुभव अपने इस प्रकार के अनुभव से ही करना पड़ेगा।

नीरजा के साथ मेरा सम्बन्ध गहरा होता जा रहा था। नीरजा की माता थी तो सौतेली, लेकिन अपनी ही माँ की छोटी बहन थीं। इसीलिये व्यवहार जितना कटु होना चाहिए उससे कुछ कम ज़रूर था। वह हमेशा उस पर रोब झाड़ती रहतीं। मुझ पर उनका कुछ स्नेह तो था ही, इधर कवियित्री बनने की लालसा ने उन्हें मेरी स्वतन्त्रता को काफ़ी प्रसार दिया। अब अक्सर वह कहा करतीं—"चन्द्र जी, प्रेम संसार और परमात्मा दोनों की ही देन है।" लेकिन मैं उनका मतलब समझ नहीं पाता। दाँत निपोरते हुए उत्तर देना पड़ता—"जी हाँ, एक अनुपम देन है।" थोड़ी देर के बाद वे कहतीं—"लेकिन प्रेम में जहाँ वासना का आगमन हुआ वहाँ प्रेम समझिए धरातल में जा पहुँचा।"

मैं कहता—"बिलकुल ठीक कह रहीं हैं आप। अक्षर-अक्षर ठीक।"

वे चुप रह जातीं। उस चुप्पी के बाद उनका चेहरा कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुछ उतरा हुआ नज़र आता। मैं समझता कि शायद वे इस विषय में मुझ से कुछ बहस-मुबाहिसा करना चाहती हैं, लेकिन चाची की उम्र वाली श्रीमती से इस प्रकार का तर्क करना शर्मनाक सा मालूम होता। इसलिए उनके प्रत्येक विचार में "हाँ, हाँ" कह के ही जान छुड़ानी पड़ती।

एक दिन श्रीमती जी अपने छोटे बेटे के साथ खेल रही थीं। अचानक में उनके कमरे में पहुँच गया। लड़का नीरजा के कमरे में खड़ा था। मुझे देखते ही वह हँस कर दरवाज़े के चौखट पर बैठ गया। उस बच्चे की मुझ से बहुत मुहब्बत थी। रात को प्रायः मेरे पास ही सोता। खाना तो उसने माँ के साथ कभी खाया ही नहीं। उस समय शायद वह रूठा हुआ था और माँ उसे मना रही थी। मुझे कमरे में देख कर श्रीमती जी ने मुझ से कहा—"चन्द्र जी, आप की प्रेयसी रूठ गई है, उसे मनाइए न!"

इस वाक्य के कहते हुए उनका इशारा नीरजा की कोठरी की तरफ़ था। मेरे तो देवता ही कूच कर गये। मैंने सोचा—"या ख़ुदा, इन्हें इस बात का पता कैसे चल गया।" डर के मारे पैर थर्रा गये। मुँह से बात भी नहीं निकली। तब तक श्रीमती ने कहा—"चन्द्र जी, आपकी प्रेयसी भी अजीब स्वभाव की है।"

मेरे ज़बान में ताला लग गया था, फिर भी मैंने साहस करके पूछा—"कौन सी प्रेयसी? कैसी प्रेयसी?"

वे ज़ोर से हँस पड़ीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वाह ! वाह !! कितने भोले बनते हैं आप ?"

उनके इतना कहने पर मैंने सोचा कि अब आत्म-समर्पण कर देने में ही भलाई है। मैं उनके चरणों में गिर कर सारा किस्सा कहने का उपक्रम कर ही रहा था कि बच्चा उछलता हुआ मेरी गोद में आ बैठा। श्रीमती जी प्रसन्न होकर बोलीं—"यह लीजिये, बिना मनाये ही प्रेयसी आपकी गोद में विराजमान हो गई।"

उनके इस वाक्य के कहने पर ऐसा मालूम हुआ मानो सिर से हज़ारों मन का बोझ उतर गया हो। बड़ी मुश्किल से जान बची। अगर बच्चा मेरी गोद में आने में दो मिनट भी देर कर देता तो मेरा काम ही तमाम था। इस समय से चन्द मिनट पहले मेरी जो दशा थी उसका वर्णन लेखनी की शक्ति के बाहर है। पर अब तो जान फ़ुर्सत में थी। मैंने शीघ्र उत्तर दिया—"इस प्रेयसी को रूठाना और मनाना मेरे ही वश की बात है श्रीमती जी!" उस समय बच्चा मेरी गोद में चिपका हुआ माँ को मुँह चिढ़ा रहा था। मैंने उसे चूम लिया। हृदय में विपत्ति टल जाने की अपार खुशी थी। नीरजा किवाड़ की आड़ से सब कुछ सुन रही थी। मेरा ख्याल है, उस समय मारे पसीने के वह नहा गई होगी। बच्चे को चूमना देख कर वह हँसती हुई आँगन में चली आई। बीच आँगन में उसकी वह अल्हड़ अँगड़ाई अब तक आँखों में नाच रही है। कितना हृदयहारी दृश्य था वह!

नीरजा की विधवा भाभी की परीक्षा निकट थी। करीब एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मास। मैं अब यह सोच रहा था कि किस प्रकार ये तीस दिन सुख और प्रेमातिरेक से व्यतीत हों। नीरजा के हाथों की कारीगरी बढ़ गई थी। रोटी, तरकारी, पुलाव और मिठाई सब में एक अजीब परिवर्तन था। व्यवहार दिन व दिन प्रेमिल और मधुरतर होता जाता था। श्रीमती जी, नीरजा की विधवा भाभी, नीरजा की माँ आदि सभी का सुलूक मेरे प्रति आवश्यकता से भी अधिक अच्छा होने लगा। उन की खातिरदारी का ग़लत अन्दाज़ लगाते हुए नीरजा ने चाहा कि मैं उसके शरीर की भूख मिटाऊँ।

मैं उस परिवार के साथ बहुत घुल-मिल गया था। उसके पिता जी मुझ से बहुत स्नेह करते थे। मेरे दिल में भी उनके लिए बहुत आदर था। नीरजा के साथ उसकी मर्ज़ी के मुताबिक काम करना, मैंने उसके परिवार के साथ विश्वासघात करना समझा। परन्तु मेरा यह विचार नीरजा पर प्रकट नहीं था। वह तो मुझे इतना ही जानती थी—मेरे रूप-दीप पर झुलसने वाला यह एक पगला कवि है। जिस की प्रत्येक इच्छा मेरी इच्छा है, हर एक कदम मेरी अंगुली का इशारा है और जिसके दिल की प्रत्येक धड़कन मुझे पाने की आशा पर ही आगे बढ़ रही है। उसकी इस समझ का नतीजा वहाँ से विदा लेने के दो दिन पहले मालूम हुआ।

इतवार का दिन था। उसी महकमे के एक बड़े अफ़सर ने नीरजा के सारे परिवार को अपने यहाँ निमन्त्रित किया। परिवार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के साथ मुझे भी वहाँ जाना पड़ा। उसी अफ़सर की लड़की सरला नीरजा की अनन्य मित्र थी। खाना खाने के बाद चुटकुले और आप बीती कहानियों ने रंग जमाया। मैं चुपचाप उस अफ़सर की बूढ़ी माँ की एक तुरंत ही गुज़री हुई घटना के सुनने में तल्लीन था। एक बार काशी में वे पण्डों के चंगुल में किस प्रकार फँस गई थीं, उसी का बयान था। कहानी के उसी दौरान में बूढ़ी माँ ने कहा—वहाँ ही एक पञ्जाबी पण्डित था, जो संस्कृत का बहुत अच्छा कवि था। उसी की मेहरबानी से उनसे मेरा पिंड छूटा।

इस वाक्य की समाप्ति के साथ ही नीरजा झट अपनी कुर्सी से उठी और उस ने उस अफ़सर की लड़की, सरला के, जो उसकी सहेली थी, कानों में कुछ कह दिया। सरला बराबर नीरजा के यहाँ आया जाया करती थी। नीरजा और मेरा सम्बन्ध उस पर जाहिर था। कहानी के खतम होते ही वह मुझे कविता सुनाने के लिए मजबूर करने लगी।

मुझे यह बहुत अखरा। मैंने मन में सोचा कविता और कवि आजकल इतने सस्ते क्यों हो गए हैं? किसी कवि को एक प्याला चाय पिलाइये और दस कविताएँ सुन लीजिए। बेटे की शादी हो, दादा की वर्षी हो, किसी का उत्सव हो या कोई कैसी भी सभा क्यों न हो, वहाँ 'कवि-सम्मेलन' होना अदना सी चीज़ है। कवियों ने अपने आप को इतना सस्ता क्यों बना लिया है? जिस के फल-स्वरूप यदाकदा अपमान भी सहन करना पड़ता है, एक जिम्मेदार साहित्यिक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को अपना धरातल इतना नीचा नहीं कर लेना चाहिए। मैं इसी मत के पोषकों में से हूँ। किसी की श्रद्धा या प्रार्थना का ध्यान रखते हुए अपने आप को गौण बना देना कोई बुरी बात नहीं। ऐसा कई लोगों का ख्याल है। मैं इस में कुछ अंश तक सहमत हूँ। जहाँ पर श्रोता की भावुकता का प्रश्न है, वहाँ भी कवि को सोच-समझ कर ही क़दम उठाना चाहिए। उन लोगों से मैं बिलकुल अपरिचित था। उनकी श्रद्धा देख कर इच्छा न होने पर भी मजबूरन एक छोटी-सी कविता सुनानी पड़ी। रात के नव बज चुके थे। हम लोग ताँगे पर सवार होकर घर लौट आये।

नीरजा आज बहुत प्रसन्न थी। ताँगे से उतरते हुए उसने मेरी ओर देखा। उसकी आँखों में एक विचित्र प्रकार की प्यास थी। उसके गाल ज़्यादा सुर्ख़ हो रहे थे। सिर पर का आसमानी दुपट्टा सीने पर सरक आया था। मैं भी एकटक उस की तरफ़ देखने लगा। वह कार्टर में चली गई, पर मेरा जी उधर जाने को न हुआ। अजीब अजीब बातें दिमाग़ में आने लगीं। "क्या मैं उस का पति बन सकता हूँ? उसे यहाँ से भगा कर ले जाना अच्छा होगा, अगर वह रात को मेरे पास अकेले आय तो?"

इन प्रश्नों की उथल-पुथल हृदय में वासना को अधिक उत्तेजना दे रही थी। चाँदनी रात थी। बसन्त का मौसम। यही कुछ सोचते हुए ग्यारह बज गए। मैं अपनी कोठरी में लौट आया। बिछौने पर पड़ना ही चाहता था कि तकिये के पास एक छोटा सा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कागज़ का टुकड़ा दिखाई पड़ा। मैंने ग़ौर से देखा। नीरजा के हाथ का लिखा हुआ था।

प्रियतम,

नमस्ते,

रात को १ बजे......।

आपकी दासी

पढ़ते ही सारे शरीर में बिजली दौड़ गई। कलेजा धक-धक करने लगा। पेशानी पर पसीने की बूँदें झलक आईं। गला सूख गया। उठ कर एक गिलास पानी पिया और सोचने लगा परसों ही तो मुझे यहाँ से चला जाना है। आख़िर ऐसा स्वर्णावसर हाथ से निकलने क्यों दिया जाय? वासना कर्तव्य पर विजय प्राप्त कर रही थी। कान रास्ते की ओर थे और आँखें हर घड़ी घड़ी को देख रही थीं। ऐसे ही इन्तज़ार में बारह बज गए। एक घण्टे की बेक़रार प्रतीक्षा के बाद दरवाज़े पर कुछ आहट-सी हुई। उस समय पौन बज रहा था, दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उठ कर धीरे से कुण्डी खोली नीरजा ने पाँव अन्दर क्यों नहीं रखा? ऐसा सोचते हुए मैं ने जैसे ही दरवाज़ा खोला कि एक काला कुत्ता कोयँ कोयँ करता हुआ भागा। दिल की धड़कन तो शांत हो गई, मगर बड़े ज़ोर की हँसी आई। वाह री नीरजा! किस रूप में दर्शन दिये तुमने! कुण्डी फिर से लगा कर खाट पर लेट गया। किताब पढ़ने की कोशिश की, किन्तु तबीयत नहीं लगी। "हेल्थ एण्ड एफिसियेन्सी नामक अँग्रेज़ी पत्रिका उठा कर मनोहर चित्रों को देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर वहाँ भी मन नहीं टिका। अब मैंने देवकीनन्दन की 'चन्द्र-कान्ता' को उठाया। आँखें स्थिर हुईं। मुश्किल से पाँच छै पृष्ठ पढ़े होंगे कि दरवाज़े पर फिर कुछ आहट सुनाई पड़ी। दिल तो आगे ही से झुँझलाया हुआ था। पाँव दबाये हुए उठा और हाथ में मसहरी का डण्डा लेकर धीरे से कुण्डी खोल दी। अब मैं इस फ़िराक में था कि वह आकर पैर रखे और एक ऐसा करारा हाथ दूँ कि काम ही तमाम हो जाय, किन्तु कुण्डी खोलते ही नीरजा अन्दर आ गई। मेरे हाथ में मसहरी का डण्डा देख कर वह बहुत घबराई। मैंने भी बड़ी मुस्किल से हँसी रोकी और उसे सारी घटना कह सुनाई। नीरजा भी हँसने लगी। लेकिन हँसी के बन्द होते ही एक कठिन समस्या उपस्थित हो गई। हम दोनों में से किसी को भी नहीं सूझ रहा था कि अब दूसरी बात क्या हो? अधिक देर तक चुप्पी को बढ़ते देख मैंने योंही पूछा, "इतनी रात को आने की क्या ज़रूरत थी?"

"..................................."

"डर नहीं लगा?"

उसने सिर हिला दिया।

मैंने उसको अपनी ओर खींच कर पूछा—"किस लिए आई हो यहाँ?"

वह चुप थी। आँखें डबडबाई हुई मालूम हुईं। मैंने उस का हाथ हाथों में लेकर पूछा—"रोओगी क्या?"

उसने सिर हिला कर कहा—"हाँ"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं तो हँसी के मूड में था, लेकिन उस को करुणाद्र अवस्था में देख कर हृदय स्नेह से भर आया। बात भी छिपी नहीं रही। मैंने पूछा—"मेरा जाना सुन कर दुखी हो क्या?

"हाँ"

"पर मैं तो नहीं जाऊँगा—" मैंने हँस कर कहा। वह प्रश्न सूचक आँखों से मेरी तरफ़ देखने लगी। मैंने कहा—"ठीक कहता हूँ, नीरजा, मैं नहीं जाऊँगा।"

आँसू प्रसन्नता से उसके चिकने गालों पर बिखर गये। वह आँसुओं को गालों पर धारण किये हुए हँस रही थी। मेरी वासनामयी इच्छायें नष्ट होने लगीं। हृदय में उसके प्रति एक श्रद्धा पैदा होने लगी। मेरा गला भर आया। आँखें छलछला आईं। मैंने उखड़ी हुई आवाज़ में कहा—"अब तुम घर जाओ।"

वह मेरी तरफ़ देखने लगी। मैंने कहा—"घर जाओ, नीरजा, बहुत देर हो गई है। फिर अगले रविवार को मिलना।" मैंने उठ कर दरवाज़ा खोल दिया। हम दोनों ही रो रहे थे। डबडबाई हुई चारों आँखों ने आपस में कुछ चुपचाप बातचीत की और बन्द सी हो गईं। मैंने उसे एक क्षण हृदय से लगा कर विदा किया, पर मुझे रात भर नींद नहीं आई। प्रातःकाल चार बजे चुपके से उठकर मैंने ताँगे वाले को जगाया और सारा सामान लाद कर स्टेशन की ओर भाग पड़ा। गाड़ी लगी हुई थी, एक चिट्ठी लिख कर मैंने ताँगे वाले को दी और कहा, "जाकर सरला को दे देना।" इस चिट्ठी में मैंने लिखा था, 'सरला,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नीरजा से कह देना कि मैं अपनी अन्तरात्मा की आज्ञा से विवश होकर यहाँ से जा रहा हूँ। मैंने उसे मन दे दिया था परन्तु तन देना सम्भव न था। मेरी मजबूरी के लिए उससे क्षमा याचना करना। उसकी आत्मा अशान्त न हो, इसी बात की कामना करता हूँ। उसका सदैव—चन्द्र।"

कोचवान ने सलाम कह कर विदा ली। गाड़ी धीरे धीरे चलने लगी। मेरी आँखों से आँसू की धारा बह चली। हृदय धक धक होने लगा। यात्री हैरान हो कर मेरी ओर देख रहे थे। उनकी दृष्टि में मुझे सहानुभूति दिखाई दी। परन्तु मैं तो रोये चला जा रहा था—बालक की तरह। इस घटना को बीते वर्षों हो गए, लेकिन नीरजा की बातों की स्मृति घटा में बिजली की तरह कौंध जाती है। हृदय सुन्न सा होने लगता है। साथ ही शरीर रोमांचित हो उठता है। उस प्रेम-पूरिता नारी के लिए मेरे दिल में उतनी ही जगह है जितनी पाँचों नदियों का पञ्जाब की छाती में।

14302

16

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अमरीकन मिशन

"दुनिया में कुछ ऐसे चतुर लोग भी हैं जिन्हें अक्सर नासमझी की ही बातें सूझा करती हैं, उन्हीं में से एक हैं हमारे दोस्त मि० जॉन।" आप अमेरिका से भारतवर्ष में ईसाई धर्म के प्रचारक के रूप में आए थे। उम्र थी करीब पैंतीस साल की। उन्हें हिन्दी भाषा से बहुत प्रेम था। मेरे एक भारतीय ईसाई मित्र ने उन से मेरा परिचय उपर्युक्त शब्दों में कराया था। उन भारतीय ईसाई मित्र का नाम मि० मसीह था। मसीह की यह धारणा थी कि यह आदमी अपने मित्रों से बहुत ही कम खुश रह सकता है। क्योंकि मि० जॉन दोस्तों की तादाद बढ़ाने में जितने ही चुस्त थे उन को आख़िर तक निबाहने में उतने ही सुस्त। आप करीब पाँच वर्षों से पञ्जाब में ही रह रहे थे और इन्हीं पाँच वर्षों में आप के कम से कम दो सौ मित्र बन गए। लेकिन उन मित्रों में शायद ही पाँच या छः आदमी उनके सच्चे मित्र रहे।

मि० जॉन शिकागो विश्व-विद्यालय से डाक्टरी की उपाधि लेकर यहाँ आए थे। प्रोटेस्टेण्ट पादरी होने के कारण आप बाल-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बच्चेदार भी थे। जिन दिनों आप से मेरा परिचय हुआ मेरी उम्र अन्दाज़न बीस वर्ष की थी। मैं एफ० ए० की परीक्षा देकर परिणाम की प्रतीक्षा में था। मैंने उन्हें क़रीब दो महीने हिन्दी पढ़ाई। आप मुझे छोटे भाई के समान मानते। उन की पत्नी आयरलैंड की थीं। बहुत ही शीलवती और उदार। सर्दी में वे पहाड़ से यहाँ आई हुई थीं। जैसे ही सर्दी के दिन ख़तम हुए कि वे अपने बच्चे के साथ फिर मन्सूरी चली गईं। मुझे भी मि० जॉन को दस पन्द्रह दिन और पढ़ाना था। बड़े प्रेम और स्नेह के साथ वे दिन भी कट गए। अन्तिम दिन मि० जॉन ने दो महीनों का वेतन—कुछ नोट—मेरे पाकेट में रख दिया और बोले—"हम पादरी लोग हैं। ज़्यादा सेवा नहीं कर सकते। क्षमा करना। हाँ, वक्त-बेवक्त याद करना भूल मत जाना।" मैंने हाथ मिला कर विदा ली। दिल में डर था कि न जाने दस रुपये हैं या उससे भी कम। बाहर आते ही इधर-उधर देखकर नोटों को गिनने लगा। दस-दस रुपयों के दस नोट थे। हृदय बाँसों उछल पड़ा। वाहरे, क़दरदान। विद्या की इतनी क़दरदानी वास्तव में भारतवर्ष में नहीं होती।

पढ़ाई ख़तम हो जाने के बाद मैं सप्ताह में कम से कम एक दफ़ा उनके पास ज़रूर जाया करता। देश, दुनिया, दीन, धर्म की चर्चा हुआ करती और दस-पन्द्रह मिनिट तक बैठ कर लौट आता। मि० जॉन काम निकल जाने पर भी मुझ से पहले जितना ही स्नेह करते थे। उन के द्वारा मुझे वहाँ के अन्य पादरियों से भी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परिचय प्राप्त हुआ। अब तो टेनिस वगैरह खेलने के लिए भी मैं वहीं जाया करता। रोज़-रोज़ के आवागमन से सारा मिशन ही अपना-सा हो गया। इसी तरह कई महीने गुज़र गए।

सर्दी फिर आ गई थी। जनवरी का महीना था। इसी महीने के दूसरे सप्ताह की बात है। मिसेज जॉन अपने लड़के के साथ मन्सूरी से यहाँ आई थीं। इस दफ़ा उनकी मौसी और मौसेरी बहन भी उनके साथ थीं। मौसी जी की उम्र ढल रही थी। बाल आधे से भी ज़्यादा सफ़ेद हो चले थे। शरीर तेली के बड़े कोल्हू की तरह मोटा था, लेकिन उनकी लड़की साक्षात् "कनक छरी-सी कामिनी" हीं थी। नीली-नीली चमकती हुई आँखें, चुभती हुई आकृति और ऊषा की किरणों के समान बाल। अवस्था चौदह-पन्द्रह के आस-पास ही चक्कर लगा रही थी। मुझे उस से मिलने के लिए उत्सुक देख कर मिसेज जॉन ने मुझ से कहा—'कल आप से उस का परिचय करा दूँगी। आप उस से मिल कर बहुत प्रसन्न होंगे। बड़ी हँसमुख लड़की है!"

पूछने पर मालूम हुआ कि दोनों माँ-बेटी पास वाली कोठी में ठहरी हुई हैं। चौथे दिन के दोपहर की बात है। मैं तथा मेरे कुछ दोस्त नन्दीपुर के झरने पर नहाने के लिए गए हुए थे। इतवार का दिन था। हमें तथा मिशनवालों को भी घूमने फिरने की पूरी छुट्टी थी। मेरे साथ लाल, कृष्ण और बलवन्त सभी नवयुवक ही मित्र थे। नहाकर हम मिशन के पास वाले सड़क से गुज़र ही रहे थे कि मैंने देखा उसी जैसी एक किन्नरी-किशोरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साइकिल पर इधर से उधर दौड़ लगा रही है। यह न समझ कर कि यह वही अप्सरा है, मैंने अपने दोस्तों से कहा—"ज़रा ठहरो, देखो हम लोगों के पीछे एक अमेरिकन लड़की आ रही है! कितनी सुन्दर है, ओह!" मैं और लाल एक ही साइकिल पर थे। हम दोनों ने पैर रोप कर साइकिल खड़ी कर दी। तब तक मोहन और बलवन्त ने पीछे घूम कर देखा और बोले—"दुत! अरे मियाँ, यह लड़की नहीं, कोई बूढ़ी मेम है!" मैंने कहा—"नहीं, नहीं, लड़की ही है।" कृष्णा और लाल मेरे पक्ष में थे लेकिन मोहन और बलवन्त उसे बूढ़ी ही कहते रहे। उन्होंने कहा—"अच्छा, रही शर्त?" इस तरह हम लोग झगड़ ही रहे थे कि उसकी साइकिल पास आ गई। मैंने गर्व से कहा—"देख लो!" उन्होंने देखा। मेरी ही बात ठीक थी। वे शर्मा गए। अब साइकिल हम लोगों की पीठ पर आ गई थी। मैंने घूम कर देखा और पागल-सा चिल्ला पड़ा—"हलो, डार्लिङ्ग!" उसने समझा कि शायद मेरे पीछे कोई और आ रहा है। लेकिन पीछे देखते ही उसका भ्रम दूर हो गया। एक अपरिचित युवक से डार्लिङ्ग (प्रेयसी) जैसे शब्द को सुन कर वह कुछ झिझकी तो ज़रूर, लेकिन साइकिल पर चढ़ी हुई सर्र सर्र आगे निकल गई। उसके पीछे मि० जॉन का छोटा लड़का बैठा हुआ था। मुझे देखते ही वह तुतली जुबान में न जाने धीरे से क्या क्या कह गया। उस किशोरी ने घूम कर देखा—हम लोग उसका पीछा कर रहे थे। हमें पीछे देख कर उसे शायद बहुत खुशी हुई। यह बात

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने इस बिना पर कही है कि, जिस वक्त हम लोगों को देखकर उसकी गर्दन सामने की तरफ़ हुई, उस समय वह स्पष्ट मुसकराती हुई-सी नज़र आ रही थी। प्रायः अधिकांश मनचली लड़कियों का यह मनोविज्ञान है कि वह अपने ऊपर दीवाने होने वालों की संख्या जितनी ही अधिक देखती हैं, उन्हें उतनी ही राहत तथा ज़िंदगी मिलती है और साथ साथ उनके नखरों में भी निखार आ जाता है। वह साइकिल को अनेक प्रकार हाँकती, उछलती, कूदती और पीछे बैठे हुए बच्चे को सताती हुई, हमें अपने चोचले दिखाने लगी। हम लोग भी कोई कम शैतान न थे! अँग्रेज़ी शिक्षा ऊपर से कालेज की संगति। कोढ़ में खाज वाली बात थी। हमने भी आपस में दिल्लगी करने के बहाने उसे अपनी चुलबुली तबीयत का तार्रुफ़ कराना शुरू किया, किन्तु उसकी अकेली ही शोखी हमारी सैकड़ों चंचलताओं पर पानी फेरने के लिए काफ़ी थी। कुछ देर तक सब लोग पूरी उमंग के साथ उस का पीछा करते रहे।

अब वह सिविल लाइन के पास आ गई थी। सामने एक विशाल गिरजाघर दिखाई दे रहा था और उस के पीछे ही पुलिस लाइन थी। चर्च जैसे पवित्र-स्थान के आस पास कोई पेशाब न कर दे, इसलिए एक सन्तरी हमेशा इधर उधर टहला करता था। जैसे ही वह किशोरी पुलिसमैन के निकट पहुँची वैसे ही हमारे दोस्त लोग पैंतरा काट गए। लाल भी मेरी साइकिल के पीछे से कूद भागा। मोहन ने ललकारकर कहा—"अरे! जल्दी भागो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जल्दी।" बलवन्त, कृष्णा सब के सब देखते देखते गली में घुस गए, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं छोड़ी। आगे जाते ही मैंने देखा कि वह गिरजा के दरवाज़े पर खड़ी होकर मुसकरा रही है। छोटे बच्चे ने मुझे पहचान लिया और दौड़ कर पास आ गया। मैंने साइकिल खड़ी कर दी और बच्चे को गोद में उठा लिया। तब तक किशोरी ने पास आकर पूछा—"क्या आप इस बच्चे को जानते हैं?"

"अच्छी तरह! मैंने इसके पिता को हिन्दी पढ़ाई है।"

"आप विद्यार्थी हैं या……"

"जी हाँ, मैं विद्यार्थी ही हूँ।"

"आप ही ने मुझे रास्ते में पुकारा था?" यह पूछते हुए उस समय उसके गालों पर शर्म का गुलाब खिल गया था और आँखें भी नीचे हो गई थीं।

मैंने लज्जित होकर कहा—"जी हाँ, लेकिन मैं उस धृष्टता के लिए बहुत ही दुखी हूँ।"

उसने कहा—"नहीं नहीं, मेरे पूछने का यह मतलब तो नहीं था। आप को दुखी नहीं होना चाहिए।"

उस वक्त मैं बच्चे को गोद में उठाये हुए था और वह फूल तोड़ रही थी। मैंने नम्रता पूर्वक पूछा—"क्या मैं आप और इस बच्चे का सम्बन्ध जान सकता हूँ?"

"क्यों नहीं, यह मेरा भतीजा है। मेरी माँ और इसकी दादी सगी बहनें हैं।"

बच्चे ने चिल्ला कर कहा—"मुझे एक गुलाब का फूल तोड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो।" मैंने गुलाब के उजले और गुलाबी तीन चार फूल तोड़ कर उसके हाथों में रख दिये और उस स्वर्गीय बाला की ओर एक गुलाबी फूलों का गुच्छा बढ़ाते हुए पूछा—"क्या मैं आप का नाम जान सकता हूँ ?"

"धन्यवाद !" उसने गुच्छा लेकर कहा - "मेरा नाम बैटी है।" बच्चा मेरी गोद से उतर कर बैटी के पास चला गया और अँगुली पकड़ कर बोला—"चलो न घर।" बैटी ने उसे बहुत समझाया किन्तु उसकी ज़िद बढ़ती ही गई। उसने मेरी ओर विवशता भरी आँखों से देख कर कहा—"क्या आप फिर कल मिलेंगे ?"

"ज़रूर, शाम को चार बजे।"

'गुड नाइट' हुई और हम दोनों की साइकिलें दो तरफ़ मुड़ गईं। दूसरे दिन मैं तीन बजे ही मिशन की तरफ़ चल पड़ा। मोड़ पर आया ही था कि देखा वह भी साइकिल पर पास वाले तालाब के चारों ओर चक्कर लगा रही है। मैंने मुँह से सीटी बजा कर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। दूसरे ही क्षण में उसकी साइकिल उसे लिए हुए मेरे पास आ गई।

"गुड्ईवनिंग !"

"गुड्ईवनिंग !"

"मैंने अपनी बहन (मिसेज जॉन) से आपके विषय में पूछा था। वे आपकी बहुत तारीफ़ करती थीं। सुना है, आप एक अच्छे तैराक हैं। आप मुझे तैरना नहीं सिखायेंगे ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्यों नहीं ? मगर अभी तो बहुत सर्दी है। मेरे ख्याल में फ़रवरी के अन्तिम सप्ताह से शुरू करना अच्छा होगा।"

"ठीक कहते हैं आप!"

हम लोगों की साइकिलें सफ़ेदे के दो तरफ़ी कतार वाली सड़क पर सरसर करती हुई नहर की ओर जा रही थीं। लाहौर से काश्मीर जाने वाली सड़क से ही इस छोटी मगर सुन्दर राह का उद्गम है। इस सड़क पर शहर के प्रायः अधिकांश प्रकृति-प्रेमी युवक घूमने के लिए आया करते हैं। रास्ते में एक सफ़ेद लड़की के साथ मुझे हँस हँस कर बातें करते हुए देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। वे आँखें फाड़ फाड़ कर हमें देखने लगे। नहर के पास पहुँचने पर एक मित्र से भी मुलाक़ात हो गई। उस परी-सी किशोरी के साथ देखकर वे चिल्ला पड़े—"अरे सुनो सुनो!" मैंने घूमकर देखा—वे कई दोस्तों के साथ घास पर बैठे हुए ताश खेल रहे थे। मैंने वहाँ उतरना मुनासिब नहीं समझ कर कहा—"माफ़ कीजिये, उधर से आकर मिलूँगा।" मेरा ऐसा कहना मानो उनका अपमान करना था। वे बिगड़ कर बोले—"अच्छा! अच्छा!! जाओ! मैं......"

हमारी साइकिलें इतनी तेज़ थीं कि उनके शेष शब्दों को सुनने से मैं महरूम ही रह गया। नहर के झरने से कुछ ही दूर एक छोटा-सा पनाला निकाला गया था। वहाँ की इन्जीनियरी प्राकृतिक सी ही प्रतीत होती थी। एक पनाला नीचे था और उस के ऊपर भी जोड़ [+] के चिह्न की तरह एक और छोटा पनाला बह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
Sri Pratap Singh

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। हम दोनों साइकिलों से उतर कर हरी हरी घासों पर बैठ गए। बैटी ने कहा—"देखिये न, ऊपर वाला पनाला नीचे वाले की छाती पर किस तरह इठला रहा है ?"

"ऊँह हूँ ! तुम तो कवियित्री-बनती जा रही हो ?" मैंने हँसते हुए कहा।

"निश्चय ! मैं संसार में सब से सुन्दर और सबसे सच्ची कला कविता को ही समझती हूँ।"

"बनाना भी आता है या........"

उसने बात काट कर कहा—"बनाना नहीं आता तो क्या हुआ। मैं कवि और कविता की आन्तरिक भावना को स्पष्ट रूप से समझती हूँ। मैं जूनियर कैम्ब्रिज में पोइट्री में अव्वल रही हूँ ?" उसके स्वर में आत्म-गौरव की झलक थी। मैंने उसकी भावुकता पर ज़रा भी आघात न पहुँचा कर कहा—"शायद तुम नहीं जानती हो कि मैं कविता को अपना सर्वस्व समझने वालों में से हूँ और मेरी कई कवितायें तो पत्रिकाओं में छपी भी हैं।" (उस समय मुझे इस बात का बहुत ही अभिमान था) उसने आश्चर्य से पूछा—"सचमुच ?"

"हाँ, हाँ ! मैं बिलकुल सच कह रहा हूँ ?"

"तो कल दिखायँगे मुझे ?"

"अवश्य !"

"कविताओं का विषय क्या है ?"

एक कविता मैंने "बसन्त" पर लिखी है, दूसरी........

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जवानी पर और तीसरी......तीसरी कविता मैंने ए...ए...ए... मैं एकाएक रुक गया। आगे कहने के लिए मेरा मुँह नहीं खुला। मैं तो चुप होना चाहता था लेकिन उसने ही पूछा—"और तीसरी कविता ?"

मैं उस समय इतनी नीति नहीं जानता था। मुझे झट सच्ची बात कहनी पड़ी—"तीसरी कविता मैंने अपनी प्रेयसी पर लिखी है।" अब तो प्रश्नों के बोझ से मैं लद गया। वह एक ही साँस में पूछ गई—"क्या लिखा है उस पर ? वह रहती कहाँ है ? उसका नाम क्या है ?"

अचानक इतने प्रश्नों को सुनकर मेरा सिर चकरा गया। मैंने सोचा 'अगर सच्ची बात बतादी' तो इसका हृदय जल उठेगा। मुझसे घृणा करने लगेगी। इसलिए उस समय मुझे सफ़ेद झूठ की ही पनाह लेनी पड़ी। मैंने कहा—"अगर बुरा न मानो तो बताऊँ ?"

"इसमें बुरा मानने को कौनसी बात है ? आप बताइए न !"

"मैंने एँ एँ......तीसरी कविता......आ......प पर ही लिखी है।"

"मुझ पर ? कब लिखी आपने ?" आवाज़ में विजय के साथ खुशी भी मालूम हुई।

"कल" मैंने प्रसन्न हो कर कहा।

"फिर वह इतनी जल्दी छपी कैसे ?"

"आज के 'दैनिक मिलाप" में।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह प्रसन्नता को छिपा न सकी। झपट कर मेरा हाथ पकड़ लिया और बोली, "क्या आप ठीक कहते हैं ?"

"हाँ, कहो तो कल लाकर दिखाऊँगा।"

"नहीं नहीं मुझे आज ही दिखाइए।" वह मेरा हाथ पकड़े हुए भोले बच्चे की भाँति मचलने लगी।

"अच्छा, ठहरो।"

मैं साइकल पर सवार हो कर घर की ओर भागा और मोटर की तरह उड़ते हुए कविता की कटिंग लेकर शीघ्र ही वापस लौट आया।

"यह लो।"

उसने ग़ौर से देखा और कविता को उलटे ही पकड़ कर बोली—"पढ़िये न ज़रा"

मैंने पढ़ना शुरू किया—'बस एक वार ! बस एक वार !!

अध मुँदे नयन, नव अरुण अधर
पट अस्त-व्यस्त रक्ताभ चिकुर।
ले हृदय-हारिणी चाल मदिर,
करतल पर मदु मधु प्याली धर।
झंकृत कर दे री तन्त्र-तार।
बस एक वार, बस एक वार।'

और भी इसी तरह कई छन्द थे! मैंने उसे अंग्रेज़ी में इसका अर्थ बताया। यद्यपि वह कविता किसी और के लिए लिखी गई थी, फिर भी वह अपने लिए समझी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह तल्लीन होकर उन शब्दों को पी रही थी। आह्लाद से उसकी आँखें भर आईं। मेरा हाथ ज़ोर से दबा कर बोली, "मैं उसका अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद करूँगी। और जानते हैं ? मैंने पहली लाइन के लिए एक सुन्दर पंक्ति भी सोच ली है। ठीक ऐसी ही।'

"क्या भला ?"

"Plese orce again ! Dear, once again !"

[प्लीज वन्स एगेन, डियर, वन्स एगेन !]

मैंने तड़प कर कहा—"ओ हो ! तुम तो सचमुच कवियित्री बन गई। पर इन लाइनों को पूरा कैसे करोगी ?"—

"कौनसी ?"

मैंने पढ़ा,—

"ललचाओ ना, हे अनजानी-
तरसाओ मत बनकर दानी-
मैं मान गया निज नादानी-
है शपथ प्रेम की ही रानी-
दो डुबा मुझे प्रिय बीचधार-
बस एक बार, बस एक बार ॥"

"माई गुड गॉड !" इतनी जल्दी में कैसे कुछ बना सकती हूँ !

"पहले आप इसे अंग्रेज़ी गद्य में लिख दीजिये, फिर मैं इस को कविता में उल्था कर लूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने अपनी कविता के सारे भाव सरल अंग्रेज़ी में बता दिये। उसने कहा—"कल या परसों मैं इसे ठीक कर के दिखाऊँगी।" अच्छा, एक बात आप से पूछूँ ?

"शौक से !"

"बुरा तो नहीं मानेंगे आप ?"

"हरगिज़ नहीं।"

"क्या आप अपना धर्म-परिवर्त्तन कर सकते हैं ?"

मैं उसका यह ऊटपटांग प्रश्न सुन कर भौचक्का-सा रह गया। हालांकि यह प्रश्न बिलकुल भोलेपन की वजह से ही पूछा गया था। मैंने आश्चर्य से पूछा—"आख़िर तुम्हारे इस प्रश्न का मतलब क्या है ?"

"यों ही ! आप बताइए न ?"

"जब तक मैं इसका कारण न जान लूँ, कैसे उत्तर दे सकता हूँ ?"

उसने मुसकराते हुए कहा—"अगर मिशन आप को अमेरिका भेजने के लिए तैयार हो जाय, वहाँ आप की पढ़ाई, नौकरी और शादी वगैरह का भी इन्तज़ाम कर दे, तो क्या आप ईसाई हो सकते हैं ?"

मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया—"कदापि नहीं। मैं इस प्रकार की सारी सुविधायें हिन्दुस्तान में ही प्राप्त कर सकता हूँ। फिर मैं अपने माँ-बाप, बन्धु-बान्धव तथा प्यारे देश को क्यों छोड़ूँ ?"

उसने शीघ्र ही प्रसंग बदल दिया—"अच्छा जाने दीजिये,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकिन यह तो बताइये, कविता लिखते समय आप की कैसी अवस्था होती है ?" मैं कुछ भी नहीं समझ सका, फिर भी बोला—"ठीक पागल की तरह !"

"फिर तो आप जो चाहे वही लिख देते होंगे ?"

"नहीं, इस पागलपन और उस पागलपन में यही एक फ़र्क है। कविता का पागल एक समय एक ही धारा में बहता है, मगर बुद्धि का पागल एक ही समय अनेक धाराओं में।" हम दोनों ही झुँझलाए हुए से बातें कर रहे थे। बैटी को अपनी बेवकूफ़ी पर पश्चाताप हुआ। उसकी आकृति से ऐसा मालूम हुआ मानो वह अपने छेड़े हुए इस प्रसंग से बहुत ही असन्तुष्ट और अप्रसन्न है। हम दोनों ही चन्द सेकण्डों के लिए चुप रहे। अचानक बैटी को जम्हाई आई। उसने जिस समय अपने दोनों हाथों को ऊपर उठा कर अँगड़ाई ली कि मेरे सारे शरीर में बिजली दौड़ गई। जी में आया कि उस भरी जवानी को अपने हृदय से लगा कर प्राणों के भी प्राण जुड़ा लूँ। मगर इसे कहते हैं सौभाग्य। उसने जम्हाई लेते हुए दोनों हाथों से मेरा गला पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया। नाक नाक से टकरा गई। उसके निचले ओठ बरबस ही मेरे दोनों ओठों के बीच में आ गए। मैं न जाने कितनी देर तक उस के साथ उलझा रहा। वह भी मूर्छित सी होकर मेरे जानुओं पर लेटी हुई थी। यह एक आत्म-समर्पण का बेसुध उदाहरण था। हमारे शरीर करीब एक ही हो रहे थे।

उसी समय धीरे से साइकिल की घण्टी बजी। हम दोनों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौंक कर अलग-अलग हो गए। मोहन और लाल खड़े हुए हँस रहे थे। मैंने बेटी से आहिस्ते कहा—"तुम जाओ, मैं लौटते हुए मिलूँगा।" वह चुपचाप साइकिल पर सवार हो कर आँखों से ओझल हो गई। मोहन ने हँसते हुए कहा—"वाहरे! तुम भी बेजोड़ आदमी हो, इतनी जल्दी फँसा लिया उसे!"

लाल ने कहा—"रंग भी साँवला। आकृति भी कोई विशेष अच्छी नहीं। न जाने तुम में कौन सा जादू है?"

मोहन ने कहा—"और हम लोगों के आने के पहले क्या क्या हो गया, यह ख़ुदा ही जाने। सच कहो, चन्द्र, हमारे आने के पहले कौन कौन से मज़े लूटे तुम ने?"

मैंने उत्तर दिया—"कुछ भी तो नहीं! ऐसे ही इधर-उधर की बातें हो रही थीं।"

लाल ने ताना कसा—"जी हाँ, बातें करने का तौर यही होता है! सीधे क्यों नहीं कहते कि बाकी कुछ भी नहीं रहा।"

मैंने डाँटा—"छिः कैसे आदमी हो तुम, जानते हो अमेरिकन लड़कियाँ बिना किसी के प्रेम की परीक्षा लिए हुए कभी भी दिल नहीं देतीं।"

मोहन—"हो सकता है कि तुम उस की क़सौटी पर खरे उतरे हो।"

लाल—"हाँ हाँ, इस जैसे धूर्त आदमी के लिए मजनूँ का अभिनय कर देना कोई बड़ी बात भी नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मोहन—“अच्छा, यह बताओ, उस दिन क्या क्या माजरा हुआ था ?”

मैं—“किस दिन ? जब तुम सब लोग मुझे धोखा देकर भाग गए थे ?”

लाल और मोहन का चेहरा शर्म से उतर गया । लाल बोला—“देखो चन्द्र, मैं बिलकुल नहीं जा रहा था, लेकिन मोहन मुझे ज़बर्दस्ती पकड़ कर ले गया ।”

मैंने उसी प्रसंग को लेकर आज की घटना को दबा दिया । मोहन और लाल अपनी उस कायरता के सबब मुझे अधिक तंग करने का साहस नहीं कर सके । हम लोगों की बातें किसी और ही दिशा की तरफ़ बढ़ीं और कुछ मिनिटों में हम लोग अपने अपने घर पहुँच गए ।

मोहन ज़रा मुँह का हलका और दिमाग़ का छिछला युवक था । जाने या अनजाने उसने मेरे एक मात्र पूज्य संरक्षक पण्डित कमला शास्त्री से मिशनवाले विषय में कुछ चर्चा कर दी । पण्डित जी हिन्दू धर्म की महानता पर विश्वास ही नहीं वरन् अपार श्रद्धा रखने वाले एक विद्वान् ब्राह्मण थे । जब उनको यह मालूम हुआ कि मैं मिशन में बराबर आया जाया करता हूँ तो उनको कई प्रकार की आशंकायें होने लगीं । उन्होंने वहाँ के एक रिटायर्ड आफ़िसर श्रीमल जी से कहा—“आप मिशन की ओर टहलने के लिए जाया करते हैं । अगर ‘चन्द्र’ को किसी विशेष रूप-रेखा के साथ देखें तो मुझे बतलाना है ।” मुझे इन बातों का बिलकुल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ज्ञान न था। क़ायदे के मुताबिक मैंने दूसरे दिन भी साइकिल उठाई और मिशन की ओर चल पड़ा। बैटी अपनी माता और एक बूढ़े साहब से बातें कर रही थी। मैं ज्यों ही आगे बढ़ा कि कृष्णा आता हुआ दिखाई दिया। उसने पूछा—"क्यों दोस्त, सुना है, आजकल पाँचों अँगुलियाँ घी में हैं।"

मैंने कहा—"मगर सर जो कढ़ाई में है।"

"सो कैसे ?"

"तुम्हें नहीं मालूम ? लाल और मोहन ने कल बैटी के साथ मुझे अकेले बैठे हुए देख कर बहुत छेड़ा, फिर मैंने भी उन्हें खूब जली-भुनी सुनाई। मुझे डर है कि कहीं वे पण्डित जी से मेरी शिकायत न कर दें।"

"अरे करने भी दो ! घबराते क्यों हो ? पण्डित जी वैसे आदमी नहीं कि उन जैसे बेवकूफ़ों के कहने में आ जायँ।" हम दोनों तब तक वहाँ आ गए थे जहाँ से बैटी और उसकी माँ हमें स्पष्ट दिखाई दे रही थीं। एक बूढ़ा अंग्रेज़ उसकी माँ से बातें कर रहा था। मैंने साइकिल की घण्टी बजा दी। "टन् टन् टनन् टन्" बैटी ने घूम कर देखा—और न जाने अपनी माता से क्या कुछ कह कर हमारी ओर चल पड़ी। मैं अभीतक उसकी माता से परिचित नहीं था। इसलिए हम दोनों एक दरख्त की आड़ में खड़े हो गए। वह आँखों में एक अजीब प्रकार का नशा लिए हुए बढ़ती आ रही थी। सन्ध्या का समय था। उसके सफ़ेद चेहरे पर शाम की लाली ने एक अतुलनीय सौन्दर्य मल दिया था। हम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वृत्त के नीचे खड़े हुए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उसने झाँक कर देखा और कन्धा सिकोड़ कर लाचारी का भाव प्रदर्शित करते हुए वहाँ से सामने की कोठी में चली गई, कोठी के बरामदे में कई मिनिट तक वह टहलती रही। शायद इस आशा से कि कृष्णा मेरे साथ से अलग हो जाय और वह मेरे पास आये। मैंने कृष्णा से कहा—"जानते हो, वह यहाँ आते आते क्यों रुक गई हैं?"

"नहीं तो!"

"चूँकि तुम मेरे साथ हो।"

कृष्णा को शायद यह बात बुरी लगी। उसने तुरन्त ही उत्तर दिया —"फिर मैं चला जाता हूँ!"

मैंने इच्छा रहते हुए भी उस से साथ छुड़ाना शिष्टाचार के विरुद्ध समझा, इसलिए उसे रोक कर कहा—"नहीं नहीं, तुम नहीं जा सकते।" ख़ैर किसी तरह वह मेरे साथ ही रहा। हम लोग गप-सप करते हुए खेतों की ओर चल पड़े। कुछ दूर जाने पर कृष्णा के कुछ दोस्त मिले जो उसके मुहल्ले के आस पास ही के रहने वाले थे। वे उसे ज़बर्दस्ती पकड़ कर अपने साथ ले गए।

मैं खुदा का शुक्रिया अदा करता हुआ उलटे पाँवों मिशन की ओर लौटा। अन्दर बाहर कई फेरे लगाये, किन्तु वह कहीं भी न दीखी। मैं हताश होकर घर की ओर जाने लगा कि देखा वह मेरे आगे आगे जा रही है। दिल प्रसन्नता से उछल पड़ा। मैं पाँवदानों को तेज़ी से घुमाता हुआ उस की ओर बढ़ा। मगर हाय री मेरी बदनसीबी! पास जाने पर मालूम हुआ कि वह ख़ुद न थी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बल्कि उसकी माँ है। मैंने चट पाँवदान छोड़ ब्रेक लगा दिया। साइकिल की रफ़्तार तेज़ थी इस लिए रोकते रोकते भी मैं 'धम' से ज़मीन पर गिर पड़ा। घुटना छिल गया और हाथ में भी बुरी तरह चोट लगी। इसी समय मैंने देखा—सामने से श्रीमल जी आ रहे हैं। मैं अभी धूल झाड़ कर खड़ा ही हुआ था कि उन्हों ने पूछा—"कहिए चन्द्र जी कैसे गिर पड़े?" मेरी तो सिट्टी ही गुम हो गई। मैंने डरते हुए बहाना बनाया—"जी,...एक साइकिल से टकरा गया था।"

उन्होंने मुसकराते हुए पूछा, "मेम साहब की?"

अब तो मेरी और दुर्दशा हुई। अब उत्तर न देने में ही कुशल समझ कर मैं आगे बढ़ गया। उन्होंने अपने बूढ़े साथी से कहा—"आजकल के लड़के बला के बदमाश हैं। देखो न, उस बुढ़िया के पीछे दौड़ रहा था।" दूसरे बूढ़े सज्जन जिनका दिमाग़ से कुछ ताल्लुक था—अन्दाज़ भिड़ाते हुए बोले—"तुम तो हो मूर्ख, यह ग़लती से जवान के बदले बूढ़ी के पीछे लग गया होगा।" श्रीमल ने बुद्धि पर ज़ोर देते हुए कहा—"ठीक कहते हो तुम! बेटी के धोके में माँ के पीछे पड़ गया होगा।"

दोनों बूढ़े ठहाका मार कर हँस पड़े। मैं भी कुछ दूर निकल आया था, मगर उनकी बातों के साथ हँसते हुए सुन कर मुझे भी हँसी आ गई। मैंने दिल में ही कहा—कितने पहुँचे हुए हैं ये बूढ़े, अगर इनको यह मालूम हो जाय कि ये जो कुछ कह रहे हैं वह ठीक है। तो मारे अभिमान के इनकी झुकी हुई कमर तन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर लाठी हो जाय। मैं बूढ़ों की रसीली बातों को सुन कर हँस तो पड़ा, मगर मन में यह भी चिन्ता थी कि कहीं ये लोग पण्डित जी के पास जा कर उलटी-सीधी न जड़ दें और बात भी यही हुई। जैसे मैं एक दो दोस्तों से मिल कर घर पर पहुँचा कि पण्डित जी बिगड़ गए—"तुम इतनी देर तक कहाँ घूमते रहते हो ?"

"जी, टेनिस खेल कर ज़रा अपने दोस्तों से मिलने चला गया था।"

"झूठ बोलते हो ! मैंने सुना है—तुम मिशन में बराबर आया जाया करते हो।"

"जी हाँ, सिर्फ़ टेनिस ही खेलने के लिए।"

पण्डित जी ने उस समय असली बात तो मुझसे नहीं कही, मगर मेरे पीछे उन्होंने अपने छोटे भाई से कहा—"मुझे इस छोकरे पर शक हो रहा है। कहीं यह पादरी लोगों के चंगुल में न फँस जाय।" उनके भाई देव जी मेरे अन्तरंग मित्र थे। उन्होंने पण्डित जी से कहा—"मुझे आप की बात ग़लत मालूम होती है। 'चन्द्र' कमज़ोर दिल का आदमी नहीं।"

पण्डित जी बोले—"तुम भी अभी बच्चे हो। ये मिशन वाले गोरी लड़कियों का, विदेश घुमाने का, नौकरी दिलाने आदि कई प्रकार का लोभ दिखा कर तुम जैसे कुलीन और शिक्षित युवकों का धर्म-परिवर्तन करा देते हैं और ईसाई-धर्म में जाने पर जो उनकी दुर्गति होती है उसे वे ही जानते हैं।" मैं किवाड़ की आड़ में खड़ा हो कर पण्डितजी और देव जी की सारी बातें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन रहा था। मगर कुछ बोलने की हिम्मत न हुई। मैंने सोचा, इस वक्त चुप रहना ही अच्छा होगा, वरना पण्डित जी पीछे पड़ गए तो जान बचानी मुश्किल हो जायगी। देव जी को भी नहीं मालूम हुआ कि मैंने उनकी बातें सुनली हैं। उन्होंने बाहर निकलते हुए मुझे बुलाकर कहा—"पण्डित से तुम्हारे विषय में बहुत बातें हुई हैं। उनको आशंका है कि तुम कहीं ईसाई न हो जाओ। लेकिन मैंने उन्हें खूब समझा-बुझा कर कह दिया कि 'चन्द्र' कोई कच्ची गोलियों से खेला हुआ युवक नहीं।"

देवजी को मैंने बहुत धन्यवाद दिया और उन्हें भी इतमीनान दिलाया कि पंडित जी की आशंका सपने में भी सत्य साबित नहीं होगी।

प्रातःकाल उठकर मैं मिशन की ओर चल पड़ा और बीच रास्ते में ही साइकिल को खसीटते आते देख कर एक परिचित ने पूछा कि—"इतने सवेरे कहाँ गए थे।" मैंने उत्तर दिया—"ज़रा हस्पताल गया था।"

"क्यों ? खैरियत तो है ?"

"हाँ, रात में करीब रोज़ हलका-हलका सा बुख़ार हो जाता है।"

वे हँस कर चल दिये, यह कहते हुए—"कहीं दर्दे-दिल तो नहीं ?"

मैंने प्रत्युत्तर नहीं दिया। मुझे तो कमबख्त साइकिल पर गुस्सा आ रहा था। आखिर निगोड़ी को बीच रास्ते में ही धोखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देना था ? अगर इस में जान होती तो मार मार कर अधमुई बना देता !" इसी तरह बर्राता हुआ मैं घर लौटा और नहा-धो कर कालेज चला गया। शाम को फिर मिशन की ओर। यह तो मेरा नित्य कर्म हो था। शाम की सन्ध्या मानो मिशन की सैर और बैटी से मुलाक़ात ही थी। इस से शान्ति एवं खुशी हासिल होती। आज ज़रा जल्दी ही आगया था इसलिए सोचा कि नहर के पुल पर से हो आऊँ। फिर बैटी से मिलूँगा। कुछ दूर ही आगे गया तो उधर से लाल को साइकिल पर आते हुए देखा। मैंने पूछा "कहाँ से मिस्टर ?"

"नहर पर गया था।" वह साइकिल से उतरते हुए बोला। "और वहीं पर तुम्हारी अमेरिकन भी मिली। मैंने उसे गुडईवनिंग कह दिया, लेकिन उसने ज़रा भी बुरा नहीं मनाया, बल्कि जवाब भी दिया।" मुझे लाल की यह करतूत बहुत खली। मुझे डर हुआ—कि कहीं यह फँसा न ले उसे। दिल में प्रति-द्वंद्विता का भाव लेकर मैं बोला—"मगर ज़रा होश से बातें करना उससे। जानते हो न, अमेरिकन लड़की है, उसका भाई लाहौर में गोरी फ़ौज का कमान्डर है।"

लाल चुप रह गया, मगर उसके दिल में मेरी बात खटक गई। उसने मोहन वगैरह से भी ये बातें कहीं। अब उन दोनों ने विचार किया कि बैटी को 'चन्द्र' के पञ्जों से छुड़वा कर चैन लिया जाय। उन्होने कई खूबसूरत लड़कों को भी अपने दल में मिलाया और मुझ से अलग होकर बैटी को अपनी ओर आकर्षित करने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

के लिए जी जान से भिड़ गए। एक सुन्दर युवक को तो उन्होंने इतना बेवकूफ़ बनाया कि उसको सौ डेढ़ सौ रुपयों के दो सूट भी सिलवा दिए। एक दो दिन घुमाकर बैटी को दिखा दिया और रात दिन उससे यही कहने लगे, "वह तुम पर जान देती है। उस दिन देखा था न, जब कि तुम भीड़ पर खड़े थे, उसने पीछे घूम कर मुसकरा दिया था और परसों ही तो तुम्हारी ओर एकाएक देखती ही रह गई।" उस बेचारे को ये सब घटनायें याद तो नहीं थीं, लेकिन उन्हें वह मिथ्या भी मानने को तैयार नहीं था। उसके लिए यह भी थोड़ी बात न थी कि कुछ लोग यह कहें कि एक अमेरिकन लड़की तुम पर जान देती है। उसे मेरे दोस्तों ने ऐसा अड्डे चढ़ाया कि कुछ पूछिये मत। तीन दिनों के बाद ही सारे शहर में हल्ला हो गया, "अमुक साहब को मिशन में बहुत मार पड़ी। कुछ लड़के जिन में केदार, लाल वगैरह भी थे, भाग गए, मगर मजनूँ साहब की बहुत दुर्गति हुई। मोहन साहब को भी शायद एक आध हाथ लगा।"

मैं इस घटना के दो दिन पहले बल्लोकी चला गया था। अचानक मोहन की चिट्ठी पहुँची। उसमें उसने लिखा था—"चन्द्र, बुरा न मानना। मैं (Lion's Share) [शेर का हिस्सा] लेने जा रहा हूँ। बैटी अब तुम्हारी नहीं बल्कि मेरी है।" पढ़ते ही खून खौल गया। एक रोष भरी चिट्ठी लिखकर डाक घर की तरफ़ जा ही रहा था कि डाकिये ने एक कार्ड हाथ पर रख दिया। चिट्ठी केदार की थी। उसमें मोहन और मजनूँ साहब (?) पर बीती हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घटनाओं का उल्लेख था। पढ़ कर तबीयत हलकी हो गई। मैंने अपनी चिट्ठी फाड़ कर फेंक दी और दिल खोल कर हँस पड़ा। "खूब हुआ ? चले थे बच्चू शेरका हिस्सा लेने। आदमी के बच्चे होंगे तो फिर मिशन की ओर जाने का नाम नहीं लेंगे। उस दिन मुझ को इतनी प्रसन्नता थी जिसका आप अन्दाज़ नहीं लगा सकते मैंने उसी लिफाफे में केदार को चिट्ठी लिख भेजी। मैं तुम्हारी कृपा का बहुत आभार मानता हूँ। तुम्हारी इस चिट्ठी से मेरे शरीर में दुबारा जान आ गई है, मैं अगले सप्ताह ही आ रहा हूँ।" मुश्किल से पाँच या छै दिन गुज़रे होंगे कि मैं बल्लोकी से वहाँ के लिए रवाना हो गया। स्टेशन से उतरते ही सीधे केदार के घर गया। उसने बड़ो आवभगत की और गुज़री हुई कहानी को सुनाना शुरू किया। प्रारम्भ से अन्त-तक घटना ही घटना थी। केदार ने कहा—"माफ़ करना, 'चन्द्र', मैं भी कुछ दिनों उनके फेर में पड़ गया था। मैं एक दिन मोहन, लाल और मजनूँ साहब के साथ मिशन में गया। बैटी बगीचे में टहल रही थी। मजनूँ साहब एक दरख्त के पास जाकर खड़े होगए और लगे उझक उझक कर उसकी ओर झाँकने। काँटे की बाड़ के पास खड़ा हो कर एड़ी उठा उठा कर उसे देखते और शायद कुछ इशारा भी करते। ठीक उसी समय मि० जान के अर्दली ने देख लिया और आकर उनकी टाई पकड़ ली। वह—मजनूँ साहब—अभी अकड़ में ही थे। बोले—"देखो, टाई-वाई छोड़ दो, नहीं तो चिल्ला कर दोनों को बुला लूँगा फिर यह मत कहना कि......... । 'मजनूँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहब का इतना कहना ही था कि अर्दली ने दो हाथ जमा दिये "बदमाश कहीं के इस तरह मजनूँ मियाँ की हजामत बनते देख हम लोग भी झट से नौ-दो-ग्यारह हो गए।'

इतना कह कर केदार ज़ोर से हँसने लगा। मुझे भी प्रतिद्वन्द्वियों की पूजा सुन कर बहुत ख़ुशी हुई। केदार के घर से सीधे अपने डेरे पर पहुँचा। पण्डित जी तथा अन्य परिचितों से मिल कर दोपहर ही मिशन की ओर चल पड़ा। कुछ दूर आगे जाने पर मि० मसीह मिल गए।

"कहिए चन्द्र जी, कुछ दिनों से दिखाई नहीं दिए ?"

"जी हाँ, बल्लोकी चला गया था।"

"अच्छा, चलिए आज आप से टेनिस खेलें।"

हम दोनों मिशन की ओर चले। वहाँ एक घण्टे तक जम कर टेनिस हुई। सूर्यास्त होने लगा था। दिल में आया कि मि० जॉन से भी मिलता चलूँ। मैं उनकी कोठी के अहाते में घुसा ही था कि देखा बैटी भी बगीचे में एक छोटे बच्चे के साथ फूलों को सींच रही है। उसकी पीठ मेरे मुँह की तरफ़ थी। मैं जैसे ही साइकिल से उत्तर कर बरामदे की ओर बढ़ा कि उसने ऊँची आवाज़ में कहा—"गुडइवनिंग मि० चन्द्र।"

"गुडइवनिंग क्या हाल है ?" मैं घूम कर बोला, "बहुत अच्छा ! मगर यह तो बताइए, इतने दिन आप ग़ायब कहाँ रहे ?"

"एक ज़रूरी काम से बाहर चला गया था।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने आकर मेरा हाथ पकड़ लिया और हम दोनों एक साथ ही बरामदे पर चढ़े। मि० जॉन मेरी आवाज़ पहचान कर बाहर आ गए थे।

"हलो, चन्द्र! कैसी तबीयत है?"

"बिलकुल ठीक!" उन्होंने गर्मी के साथ हाथ मिलाया। हम एक दूसरे को पकड़े हुए अन्दर चले गए। हम लोगों ने चाय पीना शुरू ही किया था कि बैटी की माँ आ गई। सभी ने उठ कर उनका स्वागत किया। मि० जॉन ने उनसे बहुत ही सुन्दर ढंग से मेरा परिचय कराया। बूढ़ी माँ ने कहा—"क्यों बैटी, इन्हींका तू अक्सर ज़िक्र किया करती थी?"

"हाँ, माँ! ये वही भद्र पुरुष हैं।"

कई तरह की बातें करते हुए हम सभी ने थोड़ी सी रात बिता दी। देर होते देख कर मैंने सभी से हाथ मिलाया और घर के लिए रवाना हो गया।

बैटी ने हाथ मिलाते हुए कहा—"कल मछली का शिकार खेलने चलना होगा, मि० चन्द्र, ज़रा जल्दी आइयेगा।"

मैं "बहुत अच्छा" कह कर चल पड़ा। आखिर बूढ़ों के सामने क्या बात करता? रात भर विचित्र विचित्र प्रकार के मनसूबे बाँधता रहा। सुबह उठ कर कालिज गया। वहाँ से करीब दो बजे छुट्टी हुई। ठीक चार बजे मिशन की तरफ़ चल पड़ा। बैटी की कोठी के पास जाकर मैं खड़ा तो हो गया मगर साहस नहीं होसका कि ज़ोर से पुकारूँ। कहीं उसकी माता बुरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

न मनाये। मैंने नौकर को बुला कर धीरे से कहा—"छोटी मेम-साहब को बोलो कि मि० चन्द्र आप से मिलने आये हैं।"

चन्द मिनटों में बैटी लाल गाउन में चमकती हुई बाहर आ गई। गराज से साइकिल उठाई और सीट के पीछे एक थैला बाँध लिया। उस में मछली पकड़ने वाली डोरी और हुक रखा हुआ था। हम लोग मछली का शिकार खेलने चल पड़े। उछलते-कूदते नहर के किनारे बैठ कर डोरियाँ पानी में फेंक दी गईं। एक दो मिनट की बेकरार प्रतीक्षा के बाद मेरी डोरी तनने लगी। मैंने धीरे से कहा—"बैटी, मैंने मार लिया हाथ।" बैटी बोली—खुशनसीब हो तुम! खींचो! जल्दी से खींचो।" मैं धड़ाधड़ डोरी को खींचने लगा। माल भारी मालूम होता था। मैंने डोरी खींचते हुए कहा—"काफ़ी बज़नदार मछली है।" शिकार करीब करीब बाहर निकलने वाला ही था। हम लोग बहुत ही ज़्यादा उत्सुक हो रहे थे। मैंने डोरी को ज़ोर से बाहर खींचा। एक बेढ़ंगा-सा कछुआ हम दोनों के बीच झूमने लगा। धत्तेरे की। मैंने उठ कर दो-चार लातें कस दीं। बैटी ताली बजा बजा कर मुझे चिढ़ाने लगी—"अहा हा। क्या बढ़िया मछली है! इसका भुजिया तो गज़ब का ही होगा।" बज़नदार भी काफ़ी है!! उसी वक्त उस की डोरी भी तनी। वह चुपचाप डोरी की चाल परखने लगी। अब चिढ़ाने की मेरी बारी थी। मैंने कहा—"पर-मात्मा करे, तुम्हारी डोरी में मगरमच्छ का बच्चा फँस जाय।" बैटी ने कहा—"हूँ! मैं तुम्हारे जैसी नहीं? देखो कितनी बढ़िया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मछली फँसाती हूँ।" उसने झट से डोरी बाहर निकाल ली। एक बड़ी सी रोहू मछली हरी दूब पर तड़फड़ाने लगी। बैटी ने कहा—"अब कहो! कहाँ यह चार सेर की रोहू और कहाँ अढ़ाई सेर का कछुआ!" वह ठठाकर हँस पड़ी। मैं बोलता भी तो क्या? अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पड़ा। क़रीब एक घण्टे तक शिकार का सिलसिला चला। मुझे दो कछुये तीन मछलियाँ और बैटी को पाँच बड़ी बड़ी मछलियाँ हाथ लगीं। मछलियों को थैले में रख कर हम लोग गेहूँ के खेत में जा बैठे। हवा धीरे धीरे चल रही थी। बैटी की सुनहली लटें लहराने लगीं। मैंने नीचे बैठते हुए कहा—"तुम्हारा कण्ठ बहुत मधुर मालूम होता है। एक गाना सुनाओ न!"

"नहीं नहीं मुझे नहीं आता।" वह शर्माने लगी।

उसकी आकृति से मालूम हो रहा था कि वह गाती ज़रूर है, मगर झिझक रही है। मैंने कहा—"अच्छा लो, पहले मैं ही सुनाता हूँ, फिर तो नहीं शर्माओगी?"

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही मैं गाने लगा—सहगल का एक दर्द भरा गीत। वह ठगी सी होकर सुनती रही। गाते गाते हम दोनों की आँखें भर आईं। मैंने उसे भी एक गाना सुनाने के लिए कहा। चन्द सेकण्डों के नारी-सुलभ नकार के बाद उसकी सितार सी ध्वनि हवा में किलोल करने लगी।

God be with you
Till we meet again,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Till we kiss again,

God be with you.

गेहूँ के हरेभरे पौधे झूम झूम कर ताल देने लगे । उसने गाते गाते मेरे कन्धे पर अपने सुर्ख़ गाल को रख दिया । अनजाने ही हमारे अधर मिल गए। बैटी ने मुझे दोनों हाथों से पकड़ते हुए कहा—'आओ न हम उड़ चलें ।'

मैंने पूछा—"कहाँ ?"

"बादलों के ऊपर !"

"मैं भी तो बादल ही हूँ । बिजली की तरह तुम मुझ में कौंधो न ?"

उसने मुझे अपनी छाती में छिपा लेने की कोशिश की ।

मैंने पूछा—"सर्दी लग रही है क्या ?"

"नहीं तो ।"

"फिर ठिठुर क्यों रही हो ?"

"बुख़ार हो रहा है। देखो न ?"

मैंने उसके हाथों को अपने हाथों से दबा कर देखा, सचमुच बदन गरम था ।

मैंने पूछा—"पानी लाकर डाल दूँ ।"

वह ज़ोर से हँस पड़ी ।

"शरारती कहीं के ! लाओ न पानी । मैं तुम्हारे मुँह में कीचड़ मल देती हूँ ।" वह उठ कर बैठ गई । सूर्य डूब गया था । कौओं का समूह बेचैनी से अपने अपने घोसलों की तरफ़ उड़ा जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहा था। बैटी ने आकाश की ओर देखते हुए कहा—"चलो, हम लोग भी अपने-अपने घोंसलों की तरफ़ उड़ चलें।" मछलियों को पीछे बांध कर हम दोनों की साइकिलें उड़ने लगीं। बैटी धीरे धीरे गुनगुना रही थी।

God be with you
Till we meet again
Till we kiss again !

इसी तरह के रोमान्स में दस-पन्द्रह दिन गुज़र गए। एक दिन बैटी के साथ मैं सिनेमा गया। अंग्रेज़ी पिक्चर थी। चार्ली का "माडर्न टाइम्स।" हम लोग ऊपर की गैलरी में बैठे हुए थे और हमारे पीछे कालेज के कुछ नवजवान भी थे।

एक ने पीछे से बैटी का गाउन खींच दिया। वह झल्ला उठी। उसने मुझ से कुछ नहीं कहा और उठ कर ज़ोर से बोली "(यू इण्डियन डाग) हिन्दुस्तानी कुत्ते!" गैलरी में हल्ला हो गया। मैनेजर दौड़ा दौड़ा हमारे पास आया। जब उसे सारी बात मालूम हुई, तो उसने उन युवकों को वहाँ से हटा कर नीचे की गैलरी में भेज दिया। मैं तो खून का घूँट पीकर रह गया। जितना गुस्सा मुझे उन पर नहीं था उतना बैटी पर था। "हिन्दुस्तानी कुत्ते" रह रह कर मेरे कान में गूँजने लगा। उसने कई दफ़ा मुझ से बोलने की चेष्टा की, किन्तु मैं दिखाने में भी नम्र न बन सका। शायद वह भी मुझ से खिंच सी गई। सिनेमा समाप्त होते ही हम दोनों अपरिचित के समान दो तरफ़ हो गए। उसे अमेरिकन होने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का गुमान था तो मुझे भी भारतीय होने का। मैंने मन ही मन कहा—तेरी जैसी छोकरी के लिए अपने राष्ट्रीय गौरव को छोड़ना, बेवक़ूफ़ कहीं की, मुर्गी के लिए महल छोड़ना है।

दूसरे दिन मैं एक मित्र के साथ फिर उसी ओर टहलने के लिए गया। उससे मैंने कलवाली सारी बातें सुना दीं। वह मेरे ही पक्ष में था। हम उस की ही बातें करते जा रहे थे कि वह सामने से आती हुई दिखाई दी। मित्र ने पूछा—"उस से बोलोगे ?"

"हाँ, अगर उसने पहले बुलाया !"

तब तक उस की साइकिल मेरे पास से आगे निकल गई। उसने कानी आँख से भी मेरी तरफ़ न देखा। क्रोध और अपमान के मारे मेरा शरीर जलने लगा। मस्तक पर पसीने की बून्दें आ गईं। मेरे दोस्त को भी यह बात अखरी। वह बोला—"देखा न, यही है गोरों से मित्रता का नतीजा। छोड़ो, जाने दो। समझना कि बीती हुई बातें सपना थीं या एक पगले कवि की कोरी कल्पना !" मैं उसकी सहानुभूति को समझ रहा था। हम दोनों उस की और उसके रंगवाली जातियों की निन्दा करते हुए घर को आए। और हो ही क्या सकता था। किसी से रूठकर अपमानित होकर या झगड़ा करके हम उसे जी भरके कोस लेते हैं। उस के सारे गुणों को अवगुण में बदल देते हैं। गुलाब में भी काँटे ही काँटे नज़र आते हैं।

उस दिन से मैं मिशन की तरफ़ कई बार गया। बैटी से भी अनेक बार देखा-दाखी हुई, किन्तु हम दोनों एक दूसरे से ऐसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बचते, जैसे सी० आ० डी० से कोई भागा हुआ क्रान्तिकारी। मेरा हृदय उस से बिलकुल फट गया था। जिसके लिए कभी प्राण भी निछावर करना सहज था, आज उसे देखने की भी तबीयत नहीं होती थी। जिसके रूठ जाने की सम्भावना करके हृदय काँप उठता था आज वही हृदय उसकी चर्चा से घबरा उठता था। एक ऐसी घटना के सबब से इतना भयानक और अजीब परिवर्तन हो सकता है; इस का क़यास भी मैंने नहीं किया था। आख़िर मनुष्य में पशुता की पैदायश भी तो सही मौक़ों पर हुआ करती है। लेकिन यह सब फ़िलासफ़ियाँ समय पर किसी को भी नहीं सूझतीं। स्वयं ग़लती कर देने के बाद या दूसरे के द्वारा होते देख कर ही मनुष्य मनुष्यता की बातें किया करता है। 'आप पर पड़े तो ख़ुदा न करे' वाली कहावत ही अक्सर चरितार्थ होते देखी जाती है।

हम क़रीब एक महीने तक एक दूसरे से घृणा करते रहे। एक दूसरे को न जाने क्या क्या समझते रहे। अचानक एक दिन रास्ते में मि० जॉन और उनकी पत्नी से भेंट हो गई। मैंने कतरा कर निकल जाने की कोशिश की, किन्तु उन्होंने भाँप लिया और ऊँची आवाज़ में वहीं से बोले—"मि० चन्द्र, ज़रा इधर तो आओ!" उनकी आज्ञा टालने की हिम्मत न हो सकी। साइकिल को लिए हुए मैं उनके पास पहुँच गया। उन्होंने बग़ैर नमस्ते आदा-वर्ज़ के सीधे ही कहना शुरू किया—"तुम बिलकुल बच्चे हो! एकदम नादान! आख़िर इतनी सी बात पर बोलना-चालना क्यों बन्द कर दिया? मूर्ख बन रहे हो क्यों? चलो, मेरे साथ न जाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम नवजवानों की अक्ल वक्त पर ही कहाँ दुम दबा लेती है !"

वह मेरी साइकिल को पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। मैंने गिड़गिड़ाते हुए कहा—"आज कृपा करके छोड़ दीजिये। कल इतवार है, शाम को ज़रूर दर्शन करूँगा।" पर वे कहाँ मानने लगे। मैंने कसम खाई तब जाकर जान बची। दिल बाँसों उछल रहा था। साइकिल को मोटर की रफ़्तार में हाँकते हुए मैं घर पहुँचा। खुशी के मारे नींद नहीं आती थी। खोई हुई आँखें कल मिल जायँगी। कितना अच्छा होगा ! कल ही तो सूर्यास्त के भी पहले ! प्रसन्नता में खाट पर ही गाने लगा—

मेरे आँगना में आये आली,
मैं चाल चलूँ मतवाली।

पण्डित जी ने पूछा—"आज बहुत खुश दीखते हो, क्या बात है ?"

मैंने झूठ बोल दिया—"आज टेनिस में सब पादरियों को हरा आया हूँ।"

पण्डित जी का सिर अभिमान से ऊपर उठ गया। और वह मसहरी उठाकर बिस्तरे में समा गए। मैं फिर गुनगुनाने लगा।

नाचो-नाचो मेरे मन के मोर
आज मेरे जीवन में आया असाढ़।

दूसरे दिन शाम को पाँच बजे मैं मि० जॉन की कोठी पर गया। वे बाहर के बगीचे में अपनी पत्नी के साथ बैठे हुए बातें कर रहे थे। मुझे देखते ही दोनों उठ कर खड़े हो गए। मिसेज जॉन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ मिलाते हुए बोलीं—"चलो, तुम लोगों का मेल करा दूँ।" हम दोनों अन्दर पहुँचे। बैटी कुर्सी पर बैठी हुई किताब के पन्ने उलट रही थी। हमें देखते ही वह उठ खड़ी हुई। मिसेज जॉन ने कहा—"इन्हें पहचानती हो ?"

शर्म से उसका सिर नीचा हो गया। मैं भी मुसकराने लगा।

"अच्छा आओ इनसे हाथ मिला लो।" उन्होंने बैटी का हाथ पकड़ कर मेरे हाथ पर रख दिया। हम दोनों ने कस कर हाथ मिलाया। बैटी ने सिर झुकाये हुए कहा—"मुझे माफ़ कर दो। मैं बहुत दुखी हूँ।" उसके मुँह से इतना सुनते ही मेरा हृदय पिघल गया। प्रेमातिरेक में मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। मैं डबडबाए हुए नेत्रों से उसे देखने लगा। मि० जॉन न जाने किस काम से बाहर चली गईं। बैटी ने ऊपर उझक कर मेरे गाल पर अपने होठ रख दिए। उसी वक्त बाहर से मिसेज जॉन की आवाज़ आई—"बस ! हो गया ! अब आप लोग बाहर आ जाइए ! हम दोनों चट से अलग हो गए। बैटी ने जीभ दाँत तले दबाते हुए कहा—"उन्ह ने देख लिया है क्या ?" मैं बोला—"फिर हुआ क्या ? वे सब कुछ जानती हैं।"

तब तक मिसेज जॉन अन्दर आ गईं और मेरा और उसका हाथ पकड़ते हुए बोली—अब आप लोग बराय मेहरबानी बाहर निकलिये। हम लोगों के बाहर आते ही मि० जॉन ने चिल्ला कर कहा—"बधाई ! तुम लोगों की अक्लमन्दी पर बधाई !!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शुक्र है खुदा का भूला हुआ शाम को घर आ गया।" हम लोग चुपचाप बाहर निकल आये। मानों कुछ सुना ही नहीं। बैटो ने बाहर आते ही कहा—"हम लोग अगस्त में अमेरिका जा रहे हैं।"

"हमें भी ले चलोगी?" मैंने हँसते हुए पूछा।

"सचमुच?"

"हाँ! मैं बिलकुल तैयार हूँ।"

"वहाँ चल कर तुम लौटने का नाम न लोगे, तुम्हारा जीवन स्वर्ग बन जायगा। मेरे पिता शिकागो यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं। वहीं पर हमारी शादी भी हो जायगी।" उसने प्रश्न-सूचक मुद्रा से मेरी तरफ़ देखा। मैंने मन में सोचा—"ऐसा स्वर्णावसर भला कब मिल सकता है? लगे हाथों अमेरिका की सैर भी हो जायगी। अमेरिकन पत्नी पा कर मेरा जन्म सार्थक हो जायगा।" बैटो की सुन्दरता ने प्राणों को परवाना बना लिया था। मैंने बैटो से आग्रहपूर्वक कहा—"अपनी माँ से कहो कि मेरे पासपोर्ट के लिए भी लिखा-पढ़ी करें।"

अमेरिका जाने का दृढ़ सकंल्प करके मैं घर लौटा। बैटो ने अपनी माँ से मेरे विषय में बात-चीत की। वे भी वहाँ ले जाने के लिए तैयार हो गईं। मि० जॉन की सिफ़ारिश ने बहुत काम किया। मैंने अपना फ़ोटो पासपोर्ट के लिए भेज दिया। रुपयों का प्रबन्ध मि० जॉन और बैटी की माँ पर ही था।

मई का अन्तिम सप्ताह था। अमेरिका जाने में सिर्फ़ दो ही महीनों की देरी थी। मैंने इस कार्यक्रम की चर्चा किसी से भी नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की। पासपोर्ट मिल जाने की पूरी सम्भावना थी। मैं अन्दर ही अन्दर उत्सव मना रहा था। कब अगस्त आयगा और हम अमेरिका पहुँचेंगे। रात दिन यही फ़िक्र लगी रहती। बैटी से रोज़ रोज़ अमेरिका की ही बातें होतीं। कैसे लोग हैं वहाँ के, कैसी सहूलियतें हैं वहाँ! सुन सुन कर दिल और ललचाने लगता। हे भगवान, कब ले चलोगे अमेरिका!

एक दिन बैटी ने हिचकचाते हुए कहा—"एक बात पूछूँ तुम से?"

"हाँ-हाँ!"

"हमारी शादी होगी न?"

"ज़रूर!"

"मगर तुम जानते हो, मेरे माता-पिता कट्टर ईसाई हैं। बग़ैर तुम्हारे ईसाई बने वे हमारी शादी कभी न होने देंगे। एक तो हमारे यहाँ गोरे-काले का ही शर्मनाक भेद है, उस पर भी धर्म की विडम्बना!"

मैंने कहा—"मैं तुम्हारे लिए धर्म-परिवर्तन कर सकता हूँ, लेकिन रंग को बदलना मेरे वश की बात थोड़े ही है?"

बैटी ने मेरे हाथ को अपने हाथ में लेकर कहा—"देखो, मेरे हाथ में तुम्हारा हाथ कैसा अच्छा मालूम होता है। तुम शायद नहीं जानते, मैं साँवले रंग को सफ़ेद से ज़्यादा प्यार करती हूँ। तुम मुझे इतने अच्छे लगते हो कि क्या कहूँ। जी करता है, तुम से रात दिन लिपटी रहूँ। सीना चीर कर तुम्हें अन्दर छिपा लूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह सचमुच मेरे सीने से चिपक गई और मुझे बाँहों में कस कर बाँध लिया। नहर के किनारे हम बहुत देर तक बातें करते रहे। चलते समय बैटी ने कहा—"कल रविवार है, ज़रूर सुबह आ जाना। माता जी तुम से मिलना चाहती हैं।"

बैटी की माता बहुत ही उदार महिला थीं। बैटी के मजबूर करने पर उन्होंने मुझ से शादी करने का वचन दे दिया था। उन्होंने खूब ठोक-पीट कर देखा और मुझे मजबूत पाकर उन्हें बहुत खुशी हुई। वह बोलीं—"अमेरिका जा कर अपने माता-पिता को पत्र लिख देना। मेरे ख्याल में वे लोग यह खबर सुन कर दुखी न होंगे।"

मैंने कहा —"दुखी न होंगे तो कोई खुशी भी नहीं होगी उन्हें; वे लोग भी तो धार्मिक विचारों में ही पले हुए आदमी हैं।"

बैटी की माता हँसने लगी। उन्होंने कहा—"ठीक है लेकिन, जब तुम वहाँ जाकर पैसे कमाने लगोगे तो वे तुम्हें क्षमा कर देंगे।" मुझे उनकी बातों में बहुत सचाई दिखाई पड़ी। उनसे धर्म-परिवर्त्तन करने का वादा कर के मैं डेरे पर लौट आया। मन की महत्वाकांक्षायें सन्तुष्ट सी हो रही थीं। हृदय और मस्तिष्क दोनों की ही भूख मिटने वाली थी, इसलिए खुशी का ठिकाना न था।

× × ×

पहली अगस्त की बात है। पासपोर्ट मिल चुका था। हमें अट्ठाइस अगस्त को कलकत्ता पहुँच जाना था। मैं दिल में बहुत डरता था। कहीं ऐसा न हो कि पण्डित जी को इसकी खबर हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

 Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाय। फिर तो सारे करे-कराए पर पानी ही फिर जायगा। मैं बहुत ही सावधानी से रहने लगा। किसी से भूल कर भी मिशन या अमेरिका की बात नहीं करता। मिशन मैं हफ़्ते में दो बार ही जाया करता। एक दिन बैटी ने मुझ से जवाहरलाल का जीवन-चरित्र पढ़ने के लिए माँगा। किताब लेकर मैं उसके यहाँ पहुँचाने जा रहा था कि उसकी माँ रास्ते में ही मिलीं। साइकिल पर से ही उन्होंने कहा—"जल्दी जाओ, बैटी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। हाँ, देखो, अपने लिए ज़्यादा कपड़े मत बनवाना।" वह आगे बढ़ गईं। मैं उनके बँगले पर पहुँचा। बैटी रात्रि के लिबास में बैठी हुई कलेवा कर रही थी। मुझे देखते ही बोली—"आओ, आओ, तुमने स्नान वगैरह कर लिया क्या ?"

"नहीं तो।"

"चलो, फिर साथ ही नहायें।"

हम लोग कम्पनी बाग़ के रायल टैंक में चले गए जो ख़ास करके अंग्रेज़ों के लिए बनवाया गया था। चारों तरफ़ से दीवाल थी। बिजली के पंखा वगैरह का पूरा प्रबन्ध ! माली से कुञ्जी लेकर हम लोग अन्दर गए। बैटी ने कहा—"मुझे आज तैरना सिखाओगे ? देखो न, मुझे यह कला ज़रा भी नहीं आती।" ऐसा कहते हुए उसने अपने सारे कपड़े उतार कर खूँटी पर टाँग दिए। मैं परेशानी से उस संगमर्मर के समान सुन्दर शरीर को देखने लगा। एक अभूतपूर्व दृश्य था। उसके शारीरिक प्रकाश से आँखें चौंधियाँ सी गईं। और उसे भी लज्जा आ गई। मेरे लँगोटे को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पकड़ कर वह तालाब में कूद गई। मैं जूता पहने हुए ही तैरने लगा।

"अरे! तुम तो खूब तैरती हो!" मैंने उसके तैरने को देख कर कहा।

वह दूसरे किनारे पर खड़ी होकर मुसकाने लगी। पानी के बीच में उसको इधर से उधर तैर कर जाते देख ऐसा मालूम होता था मानों शीशे के सागर में चाँद से बनी हुई कोई परी तैर रही हो। मैंने उसे चिढ़ाते हुए कहा—"तुम्हारा गाउन तो माली उठा कर ले गया। अब पहनोगी क्या? बोलो!" उसने मेरी बात को सच समझा और बाहर निकल कर अपने कपड़े देखने लगी। सब कपड़े अपनी जगह पर थे। अब तो वह बुरी तरह छकी। वह 'छप्' से पानी में कूद कर मेरे पास आ गई। और मेरा कन्धा झकझोरते हुए बोली—"कहो न, यहीं डुबा दूँ?"

"डुबाओ न?" मैंने हँसते हुए कहा।

वह दोनों हाथों से मेरी आँखों पर पानी झोंकने लगी। मैं उसे पकड़ने के लिए दौड़ा, किन्तु वह मछली की तरह उछल कर भाग गई। अब वह टैंक की परली तरफ़ हाँफती हुई खड़ी हो गई। मैं जैसे ही उसके पास पहुँचा कि वह मुझ से चिपक गई। अब मैं क्या कहता? बोला—"अच्छा, जाओ, आज तुम्हें बख्श दिया। लेकिन देखो, आगे से ऐसा कसूर करोगी तो बिना सज़ा दिए छोड़ूँगा नहीं।"

मगर वह अपनी देह ढीला करके मुझ से लिपटी ही रही। उसकी आँखें लाल हो गई थीं। हम काँप रहे थे। मैंने कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हटो मेरे पास से ! मुझे सर्दी लग रही है !" उसे शीघ्र ही अपनी ग़लती मालूम हुई। वह सम्हल कर अलग हो गई। उसने थर्राती हुई आवाज़ में कहा—"अब चलना चाहिए !" माता जी आ गई होंगी।

बाहर निकल कर हम लोगों ने कपड़ा पहना और अपने अपने घर को चल दिए। कालेज जाने पर मालूम हुआ कि आज छुट्टी है। कालेज की प्रबन्ध-कारिणी समिति के एक माननीय सदस्य की मृत्यु हो गई थी। उन्हीं के प्रति शोकाञ्जलि अर्पित करता हुआ कालेज बन्द था। एक दुष्ट लड़के ने हँसते हुए कहा—"परमात्मा करे रोज़ एक मेम्बर मर जाय, छुट्टी तो मिल जाया करेगी हमें।" हम सब लोग हँस पड़े। उसी वक्त अम्बिका नामक एक मित्र ने मुझ से पूछा—"अमेरिका कब जा रहे हो, चन्द्र ?"

मेरा सार शरीर थर्रा उठा। चेहरे का रंग उड़ा हुआ देख कर उसे अपनी ख़बर पर ज़्यादा विश्वास हो गया। अम्बिका एक दुष्ट और नीच प्रकृति का युवक था। चुगलख़ोरी तो मानो उसकी मौरूसी आदत थी। मैंने अपने आपको ठीक करने की कोशिश करते हुए कहा—अमेरिका जाना कोई ख़ाला जी का घर थोड़े ही है ? तुम्हें यह फ़िज़ूल की बात किस ने कह दी ?

"मि० मसीह ने जनाब ! आप के सारे षड्यन्त्रों का पता मुझे चल गया है।" वह हँसते हुए बोला। मैंने उसके पैरों पर अपनी टोपी रख कर कहा—"ख़ुदा के लिए यह बात किसी से मत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहना नहीं तो मेरी सारी आशा धूल में मिल जायगी। मैं बरबाद हो जाऊँगा।"

वह खलनायक के समान हँसता हुआ बोला—"नहीं, नहीं, यह बात मैं कभी भी नहीं छिपा सकता।" उसने मेरी टोपी ठोकर से परे करदी।

जवानी की ऐंठ थी। मुझे भी तैश आ गया। मैंने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया और लगा मारने। मारते मारते उस की हड्डी शिकस्त कर दी। उसने रोते हुए कहा—"अब छोड़ दो मुझे। मैं किसी से भी नहीं कहूँगा। क़सम खाता हूँ भाई! किसी से भी नहीं कहूँगा। परमात्मा के लिए मुझे छोड़ दो।" यह दवा खूब कारगर हुई। मैंने उसे छोड़ दिया और धमकी देते हुए कहा—"ख़बरदार कि किसी से कहा। गला दबा दूँगा! याद रखना।" लड़खड़ाता हुआ एक तरफ़ चला गया। मैंने उसे पीट तो दिया मगर पीछे बहुत पछतावा हुआ। पहले वह कहता कि नहीं मगर अब तो बिना कहे वह मानेगा नहीं। मैं थरथर काँपता हुआ घर आया। पण्डित जी लाल लाल आँखें किए हुए बैठे थे। आते ही गरज कर बोले—"क्यों रे, तू ईसाई हो गया है?"

"................"

"जवाब दे!"

"जी नहीं?" मैंने डरते हुए कहा।

"फिर अमेरिका कैसे जा रहा है?"

"................"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बोलता क्यों नहीं ?"

मैं फिर भी चुप था। उन्होंने पास से एक छड़ी उठा कर मुझे मारना शुरू कर दिया। ऊपर से नीचे तक करीब पचास छड़ी पड़ीं। कई जगह से खून निकल आया। अब पण्डित जी ने साइकिल उठाई और सीधे मिशन पहुँचे। दोपहर का समय था। मि० जॉन खाना खाकर लेटे हुए थे। पण्डित जी से और उनसे, आगे कई दफ़ा धार्मिक शास्त्रार्थ हो चुका था। उनका नाम सुन कर वे झट बाहर आ गए। पण्डित जी ने चिल्लाते हुए पूछा—आपने चन्द्र को ईसाई क्यों बनाया ? क्या हक़ था आपको ? मैं आप पर मुकदमा करूँगा। आप ने मेरे लड़के को फुसला लिया है।" और न जाने गुस्से में वे क्या क्या कह गए।

मि० जॉन ने नम्रतापूर्वक कहा—पण्डित जी, नाराज़ मत होइये, मैंने आप के लड़के को ईसाई नहीं बनाया। यह बात बिलकुल झूठ है। हाँ, वह अमेरिका ज़रूर जा रहा है।" अगर आप "..........."। पण्डित जी बीच ही में उबल पड़े—"हरगिज़ नहीं, मेरे जीते जी आप उसे कहीं भी नहीं भेज सकते। आप को ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं।"

मि० जॉन ने उन्हें शान्त करते हुए कहा—"अगर आप नहीं चाहते तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आपकी आज्ञा के विरुद्ध कुछ भी नहीं हो सकेगा।"

पण्डित जी ईसाई और ईसाइयत को कोसते हुए डेरे पर लौट आए। मेरी मरहम-पट्टी हो रही थी। सारा शरीर फूट गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। उन्होंने आते ही कहा—"मैंने तुम्हारे बाप को तार भिजवा दिया है। मैं तुम्हारे जैसे आवारे लड़के की ज़िम्मेदारी उठाने के लिए तैयार नहीं।"

मार खूब पड़ी थी। शाम को बुखार हो गया और उतरा भी पाँचवें दिन। उस दिन मैं मूँग की दाल का पानी पी रहा था कि देव जी दौड़े हुए आए और बोले—"चन्द्र-चन्द्र! तुम्हारे पिता जी आ गए!"

मेरा कमज़ोर दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। मैं धम से बिछावन पर गिर पड़ा। देव जी ने कहा—"घबराओ मत! पंडित जी ने उन को समझा-बुझा दिया है, वे तुम को कुछ भी नहीं कहेंगे।"

उसी वक्त पिता जी और पंडित जी अन्दर आ गए। मैंने डरते हुए हुए प्रणाम किया। वे हँस रहे थे। परमात्मा जाने मेरी दुर्दशा पर या पंडित जी की सफलता पर!

चौथे दिन मैं पिता जी के साथ घर के लिए रवाना हो गया। वहाँ से एक हज़ार मील का सफ़र था। हम लोग तीसरे दिन अपने नगर में पहुँच गए। घर वालों को मुझे पाकर बड़ी खुशी हुई, मगर मैं शर्म के मारे हर आदमी से मुँह छिपाये फिरता। किसी से भी खुल कर बात करने की हिम्मत न होती। पिता जी ने मुझे बहुत समझाया। "देखो, तुम मेरे बड़े लड़के हो। तुम्हीं पर हम लोगों की आशा केन्द्रीभूत है। हम लोग अब बूढ़े हुए। तुम्हें अब पढ़-लिख कर कमाना चाहिए और हम लोगों की पालना करनी चाहिए। इस तरह बचपन तुम को शोभा नहीं देता। ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहते हुए उनकी आँखें डबडबा आईं। मुझे अपनी उच्छृङ्खलता पर बहुत पश्चाताप हुआ। मैंने उनके पैरों पर गिर कर माँफ़ी माँगी और उस तरह का कोई भी काम न करने को प्रतिज्ञा की। उन्होंने गद्गद् होकर मुझ को गले से लगा लिया। उस समय माता जी भी रो रही थीं। उस दिन सारा परिवार खुशी में पागल हो गया।

× × × ×

दो महीने बीत गए। सितम्बर समाप्त हो रहा था—मेरा कालेज भी खुलने वाला था। मैं समय से एक सप्ताह पूर्व ही वहाँ पहुँच गया। मिलते ही देव जी ने कहा—"बैटी अपनी माता के साथ अमेरिका चली गई। चलते समय मि० मसीह के पास तुम्हारे लिए एक चित्र छोड़ गई है।" मैं मसीह के घर पहुँचा। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि वह ईसाइत के प्रचार के लिए दिल्ली की तरफ़ गए हुए हैं। हताश हो कर डेरे पर लौट आया। उस दिन से अमेरिकन मिशन में न जाने की मैंने शपथ खा ली! जाने बैटी का क्या हुआ? मैं इस घटना को दुखान्त बनाने के मूल कारण कुटिलराज अम्बिका का बहुत आभार मानता हूँ—जिनके कारण देश और माता-पिता मुझ से अलग न रह सके! बैटी और मेरे हृदय के प्रेम के सुप्त कीटाणु तो धीरे धीरे चेतना-शून्य हो ही जायँगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़िल्म-कम्पनी

ज़्यादा सिनेमा देखने वाले नवजवानों को, ख़ास कर कालेज के विद्यार्थियों को अभिनेता बन कर अपनी पिक्चर देखने का बहुत शौक होता है। मुझ में ये दोनों गुण थे, इसलिए फ़िल्म-कम्पनी की तरफ़ झुकाव होना ज़रूरी बात थी। चन्द साल पहले जब कि मैंने कालेज में प्रवेश किया, इलाहाबाद के 'लीडर नामक अख़बार में दिल्ली की किसी फ़िल्म-कम्पनी का विज्ञापन निकला। बहुत ही खुशी हुई। आठ आने के टिकिट भेज कर उसकी नियमावली मँगा ली। नियमावली में अपने प्रान्त के एक संभ्रान्त पुरुष का नाम प्रधान डाइरेक्टर के रूप में देखकर और उत्साह हुआ। डाइरेक्टर साहब भी हमारे परिवार से परिचित ही निकले। उनकी सिफ़ारिश लेकर मैं दिल्ली पहुँचा। सौ के करीब लड़के और तीस के करीब लड़कियाँ अभिनेता एवं अभिनेत्री बनने की उमीदवार थीं, मगर चुनाव में पचास लड़के और बीस लड़कियाँ ही आ सकीं। लड़के लड़कियों के रहने के लिए दरियागंज में दो अज़ीम इमारतें किराये पर ली गईं। डाक्टर अन्सारी की कोठी के पास ही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर पलंग पर बिठा लिया। आहिस्ते से बोली—

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?"

"दरख्वास्त देख कर।"

मेरे ठण्डे हाथ को अपनी गर्म छाती पर रखते हुए उसने कहा—"बहुत ठण्डा मालूम होता है ! इसी तरह रखे रहो !" मैंने दोनों हाथों से उसकी खुली छाती को ढँक लिया। वह आँखें मूँद कर शान्ति-पूर्वक साँस लेने लगी। उसी वक्त उस की माँ अन्दर आईं। हाथ में सोडावाटर की बोतल और दो बिस्कुट लिए हुए। मैंने आदर के साथ कहा—इतनी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत थी ?"

"नहीं नहीं, इस में तकलीफ़ की कौन सी बात है ? लीजिए !" पास वाली छोटी सी मेज़ को खिसका कर उसी पर दोनों चीज़ें रख दी गईं। दासी ने हाथ धुला दिया। नूरा की माँ एक तरफ़ बैठ कर पनडब्बा खोलने लगीं। उन्होंने पान देते हुए कहा—"आप तो अपने लड़के ही हैं। ये तो बताइए, नूरा अच्छी एक्ट्रेस हो सकती है ?"

"वाह, यह भी कोई पूछने की बात है ? आपकी नूरा कम्पनी की सब से बड़ी कलाकार है। एक दिन उसका नाम हिन्दोस्तान के गोशे-गोशे में फैल जायगा।"

नूरा के सूखे अधरों को मुस्कान ने चूम लिया। उसकी माँ भी गद्गद हो गईं। उन्होंने मुझे पान देते हुए कहा—"तुम पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हमें पूरा भरोसा है बेटा ! ज़रा इस पर ख्याल रखना। यही कहती थी कि तुम्हारे मामा कम्पनी के डाइरेक्टर हैं।"

"जी हाँ ! मैं नूरा के लिए क्या कुछ कर सकूँगा, यह कोई कहने की बात थोड़े ही है। आप इतमीनान रखिए !"

नूरा की माँ ने आशीर्वाद की वर्षा शुरू करदी। नूरा हँसते हुए मेरी ओर देख रही थी। उस दिन हम दोनों को ऐसा मालूम हुआ, गोया उसकी माता ने यह कह दिया हो—"जाओ, जो जी में आये, करो !" मैंने नूरा के सिर पर हाथ रख कर कहा-"जल्दी अच्छी हो जाओ !" और उसकी अम्मी से विदा लेकर होस्टल लौट आया। शाम का वक्त था। सब लड़के खेलने गए हुए थे। यादवराम गौड़ जो हमारी कम्पनी के विदूषक थे, वहीं चहलकदमी करते दिखाई दिये। कम्पनी के सब लड़कों में उन्हीं से मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध था। वे मुझे बड़े भाई की तरह डाँटते और सच्चे दोस्त की तरह नेक सलाह देते। अन्दर दाख़िल होते ही उन्होंने पूछा—"जानते हो ? तुम्हारी नूरा के दुश्मनों की तबीयत कुछ ख़राब है।"

"हाँ ! मैं भी वहीं से आ रहा हूँ।"

"कौन सी बीमारी है ?"

"यही मामूली बुख़ार !"

यादव ने गम्भीरतापूर्वक कहा—"आज तुम से एक बात कहनी है। सोच तो कई दिनों से रहा था मगर मौका ही नहीं मिला।"

मैं उत्सुक हो कर उसके निकट हो गया। वह बोला—"तुम्हारे विषय में बहुत चीमींगोईयाँ हो रही हैं। तुम जानते हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुनिया किसी को कोई भी बात लेकर बदनाम कर देती है। मैंने तुम्हें इत्तला देना ज़रूरी समझा। नूरा के चन्द छिपे हुए प्रेमी, जो तुम से जले हुए हैं, तुम्हारे खिलाफ़ कुछ साज़िश कर रहे हैं। कल एक साहब अपने दोस्त से कह रहे थे—'उसके बाप की चिट्ठी लिख दो, तो बच्चू को प्रेम करने का मज़ा मिल जायगा।' मेरी राय है कि तुम अपने पिता जी को पत्र लिख दो कि—'मेरी प्रतिभा से खार खाने वाले कुछ लड़के यहाँ हैं। हो सकता है वे मेरे विरुद्ध आपको कुछ लिख भेजें। आप उनकी झूठी बकवास पर ख्याल न कीजियेगा।' और उसके बाद जो कुछ होगा, देखा जायगा।"

मैं उसकी बातों को सुन कर बहुत घबराया। किशोरावस्था को पार किये हुए अभी बहुत अर्सा नहीं हुआ था। दुनिया के घात-प्रतिघात ने जीवन के रंगमंच पर पदार्पण नहीं किया था। इतने बड़े षड्यन्त्र को सुन कर ही मैं भयभीत हो गया। यादव मेरे चेहरे को देख रहा था। उसे मेरी कमज़ोरी मालूम हो गई। वह हँसते हुए बोला—"बस ? इतने ही में घबरा गए ? अम्याँ यह तो अदना सी बात है। चुपचाप देखते रहो। मैं सभी के होश हिरन किए देता हूँ। मगर एक शर्त है! मानो तो कहूँ!" मैंने विनम्रता के साथ पूछा—"भला, मुझ से शर्त पूरी करवाने की कौन सी बात है ? जो आज्ञा दोगे, करूँगा।"

यादव ने मेरे कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा—"डाइरेक्टर साहब तुम्हारे क्या लगते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"नाते में तो कुछ भी नहीं, मगर मेरे पिता जी के परम मित्र हैं।"

यादव ने आँख मटकाते हुए कहा—"फिर आगे की बात खुद ही समझ जाओ !"

"हाँ, मैं हर तरह से तुम्हारी मदद करूँगा। ट्रेनिंग समाप्त हो जाने के बाद नौकरी के लिए भी उन्हें मजबूर करूँगा।"

यादव ने झटके के साथ हाथ बढ़ाते हुए कहा—"तो आज से मैं तुम्हारा गार्जियन हुआ, लाओ हाथ।"

"नहीं नहीं, बड़े भैया !" मैंने हाथ मिलाते हुए कहा।

यादव मुसकरा कर बोला—"ओ ! जिससे नुरा पर किसी तरह का ख़तरा न आए। बड़े चालक हो तुम ! अच्छा, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी ? मगर एक बात है ?"

"वह क्या ?"

"ज़रा कमला से मेरे लिए सिफ़ारिश कर देनी होगी" हम दोनों ज़ोर से हँस पड़े। मैंने कहा—"मुझ से सिफ़ारिश करवाओगे तो काम और बिगड़ जायगा। मुझे तो अपनी ही बात कहनी नहीं आती।"

"हाँ, हमारे वक्त तो भोले बन ही जाओगे। ख़ैर, अगर कोई ऐसी-वैसी बात हो गई तो प्रिन्सिपल साहब से बचाना। बाकी मैं खुद ही देख लूँगा।"

रात हो गई थी। लड़के घूमघाम कर होस्टल को लौटने लगे। खा-पी कर हम लोग सोने गए तो पहरेदार ने आकर कहा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बाबू जी, एक आदमी कानपुर से आये हुए हैं।" यादव गेट पर गया तो मालूम हुआ उसके साले साहब फ़िल्म-कम्पनी को देखने के लिए तशरीफ़ लाए हुए हैं। उसने उन्हें मेरे पास ही ठहरा दिया। बात करते करते हम लोग सो गए।

दूसरे दिन प्रातःकाल मुँह-हाथ धोकर मैं नूरा के घर पहुँचा। कोठे पर जाते ही देखा—वह आराम-कुर्सी पर लेटी हुई दातून कर रही थी। मुझे देखते ही वह उठ खड़ी हुई। मैंने लपक कर उसे नीचे बिठा दिया—"इतनी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत है? चुपचाप बैठ जाओ। आज तबीयत कैसी है?"

"कल से अच्छी!"

"कुछ खाया है?"

"नहीं, आज दोपहर के बाद खिचड़ी खाऊँगी। कालेज में आगे कहाँ तक पढ़ाई हुई है?"

"मेक अप् समाप्त हो गया है।"

"मुझे भी नोट करा दोगे न।"

"हाँ हाँ! पहले अच्छी तो होलो।"

उसी वक्त सीढ़ियों पर दो तीन आदमियों के चढ़ने की आवाज़ आई। हम लोग सावधान होकर बैठ गए। नूरा की माँ एक प्रौढ़ पुरुष के साथ ऊपर आ गई। देखने से वे कोई भारी सेठ मालूम हो रहे थे। रियासती पगड़ी, चुस्त पैजामा और काली अचकन। अँगुली में कीमती हीरे के नगवाली अँगूठी चमचमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रही थी। उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए पूछा—"ये साहब कौन हैं ?"

"फ़िल्म-कम्पनी के डायरेक्टर के भतीजे।"

इस बात का उन पर शायद रोब पड़ गया क्यों कि उन्होंने झट आगे बढ़ कर हाथ मिलाया।

"ओह, यानि कि आप नूरा के क्लास-फ़ेलो हैं ?"

"जी हाँ,"

"नूरा क्लास में कैसी है ?"

"बहुत अच्छी !" वे नूरा की माँ के साथ घर के अन्दर चले गए।

मैंने नूरा से पूछा—"ये कौन सज्जन हैं ?"

"रायबहादुर मोहनलाल ! माँ के यहाँ केवल यही आते हैं। और माँ तो कहती हैं कि मैं उन्हीं की बेटी हूँ !" नूरा ने यह बात अत्यन्त गर्व से कही। मुझे रायबहादुर की बहादुरी पर हँसी आ गई। आप दिल्ली शहर के एक अग्रगण्य धार्मिक नेता और समाज-सुधारक समझे जाते थे। वाह रे हमारे नेता !

मैंने नूरा से कहा—"फिर तो तुम रायबहादुर की पुत्री हुई न ?"। वह चुप रह गई। शायद मेरी बात उसे व्यंग-सी प्रतीत हुई। घर का दरवाज़ा बन्द था। मगर रह रह कर हँसी की—आवाज़ हमें चौंका देती थी।

यहाँ मिलने आते वक्त मैंने दुकान से एक रुपये के अनार ख़रीद लिए थे। उन्हें नूरा की गोद में रख कर कहा—"शाम को

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फिर आऊँगा !" नूरा भी कुछ बोल न सकी । सेठ जी के आने से बात-चीत क्या, ठीक तरह से कुशल-क्षेम पूछना भी नहीं हो सका ।

वहाँ से लौटते हुए डाकखाना से दो लिफ़ाफ़े लिए आया । एक पिता जी को लिखने के लिए दूसरा अपने एक पञ्जाबी मित्र को । चिट्ठी लिखने के बाद स्नान वग़ैरह हुआ । भोजन करते ही कालेज के लिए प्रस्थान करना पड़ा । कालेज की सीढ़ी पर चढ़ते हुए कमला ने पूछा—"नूरा की तबीयत कैसी है ?"

मैंने पीछे घूम कर देखा कोई भी नहीं था । अच्छा मौका देख कर मैंने कहा—"नूरा से ज्यादा तबीयत खराब तो याद्वराम की है ! आपने उस की खबर ही नहीं पूछी ।"

उसने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से पूछा—"क्यों ? उनको कौन सी बीमारी हो गई है ?"

"वही जो आप लोगों को देख कर किसी नव-जवान को हो जानी चाहिए !"

"दुत, कैसी बातें करते हैं आप !" वह लम्बी ऐडी वाले जूते से सीढ़ियों को पीटती हुई ऊपर चली गई । मैं भी हँसता हुआ ऊपर पहुँचा । मुझे देखने की देरी थी कि कमला और उसकी सखियाँ ताली बजा बजा कर हँसने लगीं । मैं बेवक़ूफ़ सा उनका मुँह देखता रहा । कमला ने कहा—"कोट देखिये, कोट, इधर क्या देखते हैं ?" मैंने नीचे नज़र की । हाय रे बाप ! उल्लू के पट्ठे कौवे ने ऐन पाकेट के ऊपर ही बीठ कर दी थी । कोट उतार कर चपरासी के हवाले किया और जाकर क्लास में बैठ गया । संगीत पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महादेवराव का भाषण हो रहा था। उन्होंने मुझे देखते ही कहा—"आओ आओ! कम्पनी की कोकिला की कैसी तबीयत है?"

"अब अच्छी हो रही है।" मैंने गम्भीर हो कर उत्तर दिया। आगे उसके विषय में कुछ भी बात नहीं हुई, लेकिन इसी से मालूम हो गया कि नूरा और मेरा सम्बन्ध लोगों की आँखों में किर किरी बन रहा है। लड़कियाँ भी मुझ से चिढ़ी रहती थीं। नूरा को तो फूटी आँख से भी देखना उन्हें पसन्द न था।

कमला वहीं के एक लेडी डाक्टर की लड़की थी। यादव उसकी शराबी आँखों पर बेतरह लट्टू था, मगर वह उसे उपेक्षा की दृष्टि से देखती थी। एक दिन मालूम हुआ कि कमला मुझी को प्रेम करती है। नूरा को पाकर और किसी तरफ़ हाथ बढ़ाना मैं उस समाज में अशान्ति पैदा करना समझता था। मैं दिलो जान से यही चाहता था कि कमला यादव की ही रहे। यादव के एक प्रतिद्वन्द्वी ने मुझ से कहा—"कमला सदा तुम्हारे ही गुण गाया करती है। अभिनय का क्लास हो तो मि० चन्द्र संगीत का हो तो मि० चन्द्र! जहाँ देखो वहीं पर तुम्हारी तरीफ़।"

मैंने यादव को उसी दिन इस सनसनी खेज़खबर की ख़बर देदी। उसे मेरी बात ज़रा भी नहीं खटकी। वह मुसकराते हुए बोला—"तो इस में बड़ी बात कौन सी है? मेरी जैसी सूरत से क़मला का भाग खड़ा होना कोई असम्भावित चीज़ नहीं। मगर देखो, मुझे बगैर किसी प्रेमिका के चैन भी नहीं पड़ सकती। मुझे कमला नहीं कोई चाहिए! समझे?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं परेशान होकर उसके मुँह की तरफ़ ताकने लगा। वह शान्त होकर कहता ही गया—"तुम इस को अभी नहीं समझ सकते! डा० "फ्रायड" की थ्युरी पढ़ोगे तो मालूम हो जायगा तुम्हें। प्रेम वासना या कामुकता का सांस्कृतिक नाम है। और कामुकता एक प्रकार की अनिवार्य भूख है, जिसे हम पेट भरने की तरह ज़रूरी समझते हैं।"

"मगर, भूख और कामुकता में बहुत फ़र्क है, यादव!"

"यही तो तुम्हारी ग़लती है। कामुकता भी एक प्रकार की भूख है उसको रोक कर आदमी शान्त रह सकता है, किन्तु इस भूख को रोकना मौत से लड़ने के बराबर है! पेट की भूख शारीरिक माँग है, मगर वासना की भूख शारीरिक, हार्दिक और मानसिक तीनों प्रकार की है! वासना और प्रेम तो हम लोगों के बनाए हुए नाम हैं।

"यानि, सबका तात्पर्य यह हुआ कि तुम्हें कमला से प्रेम नहीं। तुम्हें किसी प्रकार की कोई लड़की चाहिए, जिस से तुम अपनी यह भूख मिटा सको; यही न?"

"हाँ! बिलकुल यही!"

"तो भले घर की लड़कियों की जान बख़्श कर इस काम को वेश्याओं के यहाँ पूरा करना ही ठीक है।"

यादव ने गरम होकर कहा—"बच्चों की सी बातें करते हो? मैं ऐसी लड़कियों और वेश्याओं में कोई अन्तर नहीं समझता! भले घर की लड़कियों को परिवार और समाज का भय है पैसे की सहूलियत है, इस लिए वह अपनी कामुकता को प्रेम के रूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में प्रकट करती हैं, मगर तुमने सुना होगा—आगरे की एक मशहूर बैरिस्टर की लड़की घर के नौकर के साथ भाग गई थी। बताओ उस में कौन सी बात है ? और मैंने ऐसी-ऐसी लड़कियों को भी देखा है जो हर साल नए नए लड़कों को प्रेम का थोक ससाई किया करती हैं। मगर बड़े घर की लड़की हैं इसी लिए सती सावित्री भी उनके सामने हेच है। तुम्हीं बताओ चावड़ी बाज़ार में अपने मुँह पर पाउडर का डिब्बा का डिब्बा उड़ेल कर बैठने वाली उन वेश्याओं और इस प्रकार की लड़कियों में क्या फ़र्क है ?" मैं अकचका कर सुन रहा था लेकिन अब ज़्यादा नहीं सुना गया। मैंने डपट कर कहा—"अधिक पढ़ कर तुम्हारा दिमाग़ खराब हो गया है। वेश्या और संभ्रांत महिला की यह तुलना घृणास्पद बुद्धि का परिचय दे रही है।"

यादव ने बड़े धैर्य के साथ कहा—"तुम ग़लत समझते हो ! मैं सभी महिलाओं को इस घेरे में नहीं बाँधता। मेरा विचार उपर्युक्त ढंग की तितलियों के लिए ही हैं, जो फूल फूल पर मँडराती फिरती हैं।" ("मगर उन भौरों को तुम क्या कहोगे जो हर एक कली का ज़बर्दस्ती या फुसला कर रस चूस लेते हैं ?")

"मैं उन्हें पुरुष समाज में वेश्याओं का स्थान देते हुए भी निर्दोष ही समझता हूँ। हाँ, जहाँ तक सामाजिक-शान्ति का प्रश्न है, वहाँ तक मैं इस चीज़ को बुरा मानता हूँ।"

ऐसे ही ऊलजलूल तर्क-वितर्क करते हुए शाम होने लगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने डूबते हुए सूरज की ओर देख कर कहा—"अच्छा, फिर बातें होंगी। मैं ज़रा नूरा को देख आऊँ!"

यादव हँस कर बोला—"हाँ! हाँ! वह इस से ज़्यादा ज़रूरी है। उठो! जाओ!!"

मैं साइकिल लेकर नूरा के महल में जा पहुँचा। सीढ़ी पर चढ़ते ही सितार की आवाज़ कान में आई और ऊपर चढ़ते-चढ़ते नूरा की विमुग्धकारी ध्वनि भी।

—मेरी अटरिया है सूनी सजन नहीं आये!

इधर उधर झाँक कर देखा। कोई भी नहीं था। मैंने पीछे से जा कर उसकी आँखें मूँद लीं, सितार बन्द हो गया। अँगुलियों की मिजरावे सितार के तार से हट कर ऊपर चली आईं। मैंने गाते हुए पूछा—

"काहे अटरिया हो सूनी सजन जब आये।"

"छोड़ो भी! क्या करते हो?"

"बताओ तो, कौन है।"

"बता दूँ।"

"हाँ!"

"बुरा नहीं मानोगे न?

"नहीं!"

"घोंघा बसन्त!" उसने धीरे से कहा और हम दोनों हँस पड़े।

"अच्छा, तुम्हारी तबीयत कैसी है?" मैंने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बहुत बुरी ! कल से कालेज जाने लायक !"

"ओ ? तब तो डाक्टर को फ़ौरन से पेश्तर क़दम उठाना चाहिए।" ऐसा कहते हुए मैंने उसकी आँखें ओठों से पी लीं।

वह मुझे धकेल कर बोली—"हटो ! यही डाक्टरी है क्या ?"

"क्यों नहीं ! जैसा मर्ज़ वैसी दवा !"

"अच्छा, जाने दो ! एक सवाल पूछूँ तुम से ?"

"पूछो !"

"तुम्हारी शादी हो गई है ?"

"नहीं तो !"

"मगर बिहार प्रान्त में तो लड़कपन में ही शादी हो जाती है।"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?" उसके पास कालीन पर बैठते हुए मैंने पूछा।

"मेरी एक क्लासफ़ेलो थी—देवकी। उसी तरफ़ की। जब वह सात साल की थी, तभी उसकी शादी हो गई थी। उसने अपने पति का मुँह भी न देखा था। बेचारी कहती थी—"हमारी शादी कब हुई मुझे याद नहीं। कितनी अजीब बात है !" वह हँस पड़ी। मैंने कहा—"अब ऐसा नहीं होता। पुराने ख़्याल के लोगों में ही इसका प्रचार है। लेकिन एक बात तुम बताओगी ?"

उसने मेरी ओर देखा। मैंने पूछा—'तुम्हारा भी शादी करने का विचार है क्या ?"

"वाह ! तो तुम समझते हो कि मैं क्वाँरी ही रहूँगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने झेंप कर उत्तर दिया—"नहीं नहीं। ऐसे ही पूछ लिया था।"

उसने उत्तेजित होकर कहा—"झूठ क्यों बोलते हो ? तुम समाज वाले यह सोचते हो कि हम लोगों के दिल ही नहीं होता। हम गन्दी नाली के पिस्सुओं से भी बदतर हैं। मगर यह सरासर ग़लत है। हम लोग तुम लोगों से किसी भी बात में ज्यादा या कम नहीं।" ऐसा कहते कहते नूरा की आँखों में पानी आ गया। गाल की सुर्ख़ी बढ़ गई। भवें भी तन आई थीं। मुझे अपनी ग़लती पर सख्त अफ़सोस हुआ। उसके लम्बे बालों को हाथ में लेकर मैंने कहा—"मुझे माफ़ कर दो नूर ! मेरे कहने का यह मतलब कभी न था। तुमने मुझे ग़लत समझा ! मैं तुम्हें कम्पनी की अन्य कुलीन लड़कियों से कहीं चरित्रवाली और भावुक समझता हूँ !"

"मुझे खुश करने लिए कह रहे हो क्या ?"

"हरगिज़ नहीं ! मेरी यह सच्ची धारणा है। तुम्हें नहीं मालूम कि यहाँ आ-जा कर मैं कई लोगों की नज़रों में पाप कर रहा हूँ। मगर तुम विश्वास रखो चन्द्र नूरा से संसार को बड़ा नहीं समझता।"

वह नरम हो गई थी। मुसकरा कर बोली—"देखो न, मैं कितनी बेवकूफ़ हूँ ! बहस में फँसा कर तुम्हें जल-पान भी नहीं कराया। अरी ओ सकीना शर्बत तो बना कर लेआ !"

मैंने कहा—"नूरा ! मुझे एक बात बताओगी ?"

"क्यों नहीं ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम्हारा नाम नूरा क्यों पड़ा ?"

"माँ मुसलमान हो गई थीं इसीलिए।"

सक़ीना से शर्बत लेकर मैं पीने लगा। उसी वक्त उसकी माँ भी आ गई।

"कहो बेटा, अच्छे हो न ?"

"जी हाँ।"

"कल से नूरा कालेज जाया करेगी। अब अच्छी होगई है !"

"जी हाँ, मगर अभी कुछ कमज़ोर दीखती है।"

"ख़ैर, कालेज जाना भी तो बहुत ज़रूरी है।"

"जी हाँ !" मैंने हाँ में हाँ मिलाई।

"अब मुझे इजाज़त दीजिये !" मैंने विदा माँगी।

"वाह ! अभी आये और अभी चल दिये ?" नूरा की माँ ने कहा।

"जी नहीं, बहुत देर से आया हुआ हूँ। अच्छा नमस्ते।"

"नमस्ते !"

"देखो नूरा ! कालेज ज़रा जल्दी पहुँच जाना !"

"अच्छा !"

नूरा से आँखें मिलीं और मैं होस्टल को चल पड़ा। वहाँ आकर देखा—अजीब धमा-चौकड़ी मची हुई है। ऊपर के हाल में जनाब यादवराम जी लहँगा पहन कर नाच रहे हैं और दो-तीन लड़के उसके आगे-पीछे घूम-घूम कर मुँह बजा रहे हैं। कोई कमर लचका रहा है, तो कोई टीन पीट रहा है। यादव जी ने मारवाड़ी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नृत्य की बानगी पेश की थी। नाभि से एक बालिस्त ऊपर सटी हुई चितकबरी चोली उनके मूँछवाले चेहरे पर अजीब बहार दिखा रही थी। उनका ठमक-ठमक कर नाचना ठुड्डी पर अँगुली रख कर—"मोंहि छेड़ो न कन्हाई" का गर्दभ राग, सुनील का घूँघट हटा-हटा कर देखना और उनका उस को झकझोर कर इठलाते हुए अलग हट जाना, देखने ही लायक था। हँसते हँसते पेट में बल पड़ गया। कुछ देर तक खड़ा-खड़ा उन लोगों की शरारत देखता रहा, मगर भूख लग गई थी। चौके में खाना खाने के लिए चला गया। खा-पीकर जैसे ही अपनी कोठरी में आया कि यादव भी आ गया। आते ही वह बोला—"खाना खाने के वक्त कहाँ रह गए थे?"

"वहीं।"

"जानते हो? आज मैंने मारवाड़ी नृत्य का प्रदर्शन किया था।"

मैंने ताना कसा—"हाँ! उदयशंकर के बाद हिन्दुस्तान में और रह ही कौन गया है।" यादव मेरी बात को अनसुनी कर बोला—"उस समय अगर तुम देखते तो नूरा को छोड़ कर मुझी पर फ़िदा हो जाते!"

"मैं तो अब भी तुम पर फ़िदा हूँ।"

यादव ज़ोर से हँस पड़ा। बोला—"ना बाबा! इतनी मेहरबानी इस गरीब पर मत करो। अच्छा, यह तो बताओ वह कालेज कब से आ रही है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"कल ही से।"

यादव को नींद आ रही थी। वह जम्भाई लेकर उठ खड़ा हुआ और मैं भी अपने कमरे में जाकर सो गया।

× × × ×

कालेज का इहाता रंगबिरंगी साड़ियों से जगमग जगमग कर रहा था। ऐसा मालूम होता था—तितलियों के पैर निकल आये हैं! लड़कों का हाल ही बेहाल था। मैं कालेज में जैसे ही पहुँचा—चन्द लड़कों ने दरबारी ढंग से सलाम किया और कुछ मेरे आगे-पीछे लेफ़्ट-राइट करने लगे। जैसे फ़िल्म-कम्पनी के राजा का राज्य-तिलक हो रहा हो। बाहर लान पर प्रोफ़ैसर लोग बैठे हुए थे। इसी शोरगुल के बीच चपरासी ने लड़कों को आकर कहा—"डमराव के राजकुमार, जो कम्पनी के मालिक हैं, आ रहे हैं। आप लोग लान में चल कर बैठ जाइए।" कुर्सियाँ मेज़ सब सजने लगीं। एक तरफ़ लड़कियाँ और दूसरी तरफ़ लड़के। बीच में रास्ता था। हरी हरी दूब की छोटी सी राह पर मख़मली कालीन बिछाया गया। सामने की टेबुल पर बढ़िया गुलदस्ते सजा दिए गए। सब प्रोफ़ैसर आस-पास की कुर्सियों पर बैठे हुए थे। प्रिन्सिपल मि० वर्मा ने बाहर से आकर कहा—"सावधान! कुमार साहब आ गए!" हम सब अपनी अपनी टाई सीधी करके बैठ गए। लड़कियों ने अपनी चितवन ज़रा और बाँकी कर ली। प्रिन्सिपल साहब बाहर गए और चन्द सेकण्डों के बाद ही हम लोगों ने देखा—कुमार साहब अँग्रेज़ी पोशाक में प्रिन्सिपल और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने तीन कर्मचारियों के साथ मतवाले हाथी की तरह झूमते हुए आ रहे हैं। हरिण की तरह चंचल आँखें। गोरा रंग। दुहरा शरीर। उम्र भी तीस-पैंतीस के बीच थी। हम सभी ने उठ कर उनका स्वागत किया। वह सिर झुका कर नम्रतापूर्वक बैठ गए। मि० वर्मा ने उठकर कहा—"मिस नूरा एक गाना सुनायँगी।"

नूरा ने मेरी ओर देखा। मैं उस समय कैसे कुछ इशारा करता। वह चुपचाप पास वाली चौकी पर बैठ कर सितार ठीक करने लगी। यादव ने तबले पर हाथ मारा। मैंने भी वायलिन उठाली और मृदुला ने हारमोनियम! कुमार साहब होश-हवास खोकर नूरा को एक टक देख रहे थे। मानो उसे आँखों से ही पी जाना चाहते हों। मगर नूरा सिर नीचा किए हुए गा रही थी—

"सच सच बताना अय दिल,
तुमने कहीं कभी भी—
सर सब्ज़ होते देखी,
उलफ़त की सरज़मीं भी?"

कितन मधुर गला! कुमार साहब से रहा नहीं गया। उन्हों ने उछल कर दाद दी—"वाह! वाह! कितनी मीठी आवाज़ है!" नूरा शर्मा गयी। मैं दाँत पीस कर रह गया। लड़कों ने मुझे चिढ़ाने की दृष्टि से आँखें फेरीं। जब मैंने देखा कि वे मुझे बेवकूफ़ बनाने लगे हैं, तो मैंने चेहरे पर खुशी लाने की कोशिश की, मगर अभी एक्टर बनने में ज़रा देर थी। मुँह पर पहले जैसी रौनक न आ सकी। तब वृद्ध प्रिन्सिपल साहब ने उठ कर कहा—"मि० यादव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम, मि० चन्द्र, पं० दीनानाथ, मिस सुन्दरी और कुमारी अरुणा अपना अभिनय दिखायँगी।" कला-निर्देशक ने आकर कहा—"सुहाग खेलना होगा।" 'सुहाग' एकांकी नाटक था। मि० वर्मा का ही लिखा हुआ। हम लोगों ने उसे बड़ी निपुणता से खेल दिखाया। कुमार साहब परेशानी से हम लोगों की ओर ताकने लगे। उन्होंने मुझे और अरुणा को पास बुला कर पूछा—"आप कहाँ के रहने वाले हैं?"

मैंने कहा—'बिहार का!"

अरुणा ने हाथ मिलाते हुए उत्तर दिया—"लखनऊ की!"

उन्होंने अरुणा से पूछा—"आपके पिता क्या काम करते हैं?"

"वकील हैं।"

"और आप के?" इशारा मेरी ओर था।

"ज़मीन्दार।" प्रिन्सिपल साहब ने उसी समय उनके कान में कुछ कह दिया। वे चौंक कर बोले—"अच्छा! आप दया बाबू के रिश्तेदार हैं?"

"जी हाँ!"

कुमार साहब ने मि० वर्मा से धीरे से कुछ कहा। वह उठ कर खड़े हो गए और बोले—"नूरा को कुमार साहब की तरफ़ से स्वर्ण-पदक और शेष विद्यार्थियों को रौप्य दिया जाता है।" ताली की गड़-गड़ाहट से सारा इहाता गूञ्ज गया। कुमार साहब नूरा की ओर ताकते हुए कार में जा बैठे। मैं दिल में बहुत डरा। राजाओं की आँख जिस पर लग जाय उसका बचना ज़रा मुश्किल हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं सोचने लगा—"कहीं ऐसा न हो कि नूरा हाथ से निकल जाय। कुमार कोई कम उस्ताद नहीं दिखाई देता!"

उसके वहाँ से जाते ही हमें छुट्टी हो गई। सब लड़के हँसते मगर मैं रोते हुए होस्टल पहुँचा और कोठरी में जाकर चित्त हो गया। कुमार की कामुक दृष्टि आँखों में नाचने लगी। मन करता था कि अभी उठ कर जाऊँ और पिस्तौल से खत्म करदूँ। इसी समय यादव और सतीश कमरे में आ गए। दोनों ने बधाइयों का अम्बार लाद दिया। सतीश बोला—"तुम्हारा एक्टिंग तो आज ग़ज़ब का रहा!"

यादव ने कहा—"और नूरा ने तो बाज़ी ही मार ली।"

सतीश बोला—"मगर यह बाज़ी ज़रा मँहगी पड़ेगी, चन्द्र!"

"क्यों?" मैंने जानते हुए भी पूछा।

"कुमार छटा हुआ आदमी है? आज नूरा की डाली बगैर चढ़े बाकी नहीं रहेगी! मैं कहे देता हूँ!"

मुझे उसकी बात बरछी सी लगी। मैंने उबल कर कहा—"नूरा को पाना बड़ी टेढ़ी खीर है? वह कोई बाजारू वेश्या नहीं कि कोठे पर चढ़ कर कोई अपना खुमार उतार आये!'

यादव हँसने लगा। उसने मेरी ओर ताक कर कहा—"तुम नूरा की बात करते हो? कुमार अगर चाहे कि शहर की अमुक उस के पास आ जाय तो उसकी इच्छा कभी भी अपूर्ण नहीं रह सकती। उसके दलाल शहर के कोने कोने में हैं। और नूरा? नूरा को तो वह अपनी लौंडी बनाने की ताकत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रखता है ! माफ़ करना ! मैंने ये बातें तुम्हें तकलीफ़ देने के विचार से नहीं कहीं। उसको जानने वाले हर शख्स का ऐसा ख्याल है।"

यादव की बातें सुन कर मैं काँप गया। उसी वक्त सतीश को किसी लड़के ने आवाज़ दी। वह उठ कर बाहर चला गया। मैंने एकान्त देख कर कहा—"यादव तुम्हारी बातें सुन कर मेरा सिर चकरा गया है। क्या नूरा सचमुच मेरे हाथों से निकल जायगी ?" मेरी रोनी सी सूरत देख कर यादव पिघल गया। वह बोला—"तुम नूरा के घर जाओ और कोशिश करो कि वह कुमार की बुलाहट पर माता के साथ भी कहीं न जाय ! अब रही हाथ से निकलने वाली बात ! इसके लिए तुम बेफ़िक्र रहो ! कुमार बेवकूफ़ नहीं कि जिस पर आँखें गड़ीं उसे अपनी पूँछ बना ले। उसे तुम भौंरे से कुछ कम न समझो ! (रस चूसा और फिर उलट कर देखा भी नहीं कि फूल होश में है या बेहोशी में !") समझाने का कितना भयंकर तरीका था। फिर भी मैंने पूछा—"तो मैं नूरा के घर जाऊँ ?"

"ज़रूर !"

मैं उठ खड़ा हुआ। यादव हँस कर बोला—"ओ ! अभी नहीं भाई ! चाय-वाय पी लो, फिर जाना।" मुझे अपनी जल्द-बाज़ी पर शर्म आ गई।

दोपहरी ढल चुकी थी। धीरे धीरे घड़ी ने पाँच बजा दिए। मैं चाय पीते ही साइकिल पर उड़ चला। धड़-धड़ करता हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोठे पर जा पहुँचा। सकीना पीकदान साफ़ कर रही थी। मुझे देखते ही उसने सलाम किया। मैंने पूछा—"नूरा कहाँ है।"

"बाहर गई है।"

"और अम्मी जान ?"

"वे भी—।"

"कहाँ ?"

"उमराव के कुमार साहब के यहाँ !"

उस समय ऐसा मालूम हुआ कि कोठा नीचे की ओर बैठा जा रहा है या भूकम्प आ गया है। सारा शरीर काँपने लगा। मैंने पूछा—"अकेली गई हैं क्या वे लोग ?"

"नहीं। रायबहादुर के साथ।"

मैं विक्षिप्त सा होकर नीचे उतरने लगा। ज़ीने के पास आकर मैंने फिर पूछा—"गए हुए कितनी देर हुई ?"

"करीब तीन घण्टे !"

मैं मुँह बनाये हुए सड़क पर उतर आया। दिल में सोच रहा था कि अगर इन्सान हुआ तो फिर इस कोठे पर लात न रखूँगा। जैसे ही सड़क पर आकर खड़ा हुआ कि एक पुराने मित्र से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने पूछा—"मैं क्या देख रहा हूँ, चन्द्र ?"

मैं अवाक् होकर उसका मुँह ताकने लगा। वह हैरान हो कर बोले—"तुम ! और कोठे से ? फ़िल्म-कम्पनी में यही कुछ सीख रहे हो क्या ? छिः छिः तुम से ऐसी उम्मीद नहीं की जा सकती !" उसने मुँह बना कर ज़मीन पर थूक दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ग्रह-गृहीत पुनि बात बस तेहि पुनि बीछी मार।" मैं लोहू पी कर रह गया। जी में तो आया—ऐसा तमाचा कसूँ कि मुँह पीछे की ओर घूम जाय। परन्तु मैंने शान्तिपूर्वक कहा—"उसकी लड़की मेरी क्लासफ़ेलो है, उसी से मिलने गया था।"

ठीक उसी समय एक कार नूरा के ज़ीने के पास आकर खड़ी हो गई। दरवाज़ा खुला और अन्दर से रायबहादुर नूरा और उसकी माँ के साथ नीचे उतरे। मैंने बिजली के खम्भे के पीछे छिप जाने की कोशिश की, किन्तु नूरा की तेज़ आँखों को मैं धोखा न दे सका। उसका चेहरा उतरा हुआ था। उसने खोई हुई आँखों से मुझे देखा और लड़खड़ाती हुई सीढ़ी पर चढ़ गई। मैं पागल होकर चाँदनी चौक की ओर चल पड़ा। पिक्चर हाउस में 'चन्द्रगुप्त' चल रहा था। टिकिट लेकर अन्दर चला गया। खेल में अभी एक घण्टे की देरी थी। साढ़े छः होते ही खेल शुरू हो गया। पिक्चर लम्बी थी। तीन घण्टे कैसे और क्या देखते हुए गुज़र गए, यह ज़रा भी मालूम न हो सका। मुझे यह भी नहीं याद कि उस फ़िल्म में पृथ्वीराज के अलावा और कौन कौन से एक्टर थे। कथानक और संगीत को मेरी बला ही जाने। दिल में एक विचित्र ढंग की जलन हो रही थी। रह रह कर मैं जूता पटकने लगता। मेरे पास ही एक परिवार बैठा हुआ था। उस परिवार की एक युवती ने अपने पुरुष से मेरी ओर इशारा करके कहा—"मालूम होता है, कोई सनकी है!" मैं ज़ोर से हँस पड़ा। लोगों को भी बहुत परेशानी हुई। इतनी गम्भीर पिक्चर में बेमौके हँसना पागल के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलावा और किस का काम हो सकता था ? और सच पूछिये तो उस समय मेरी अवस्था किसी भी पागल से कम न थी। सिनेमा देख कर मैं डेरे पर आया। आते ही सतीश बोला—"इस वक्त तक कहाँ थे ? यादव तुम्हें ही खोजने गया है !"

मैं चुपचाप कोठरी में दरवाज़ा बन्द करके लेट गया। चेष्टा करने पर भी आँसू न रुके। जी भर कर रो लेने के बाद कुछ आराम मालूम हुआ। यादव ने आकर आवाज़ दी। मैं चुप। उसने दरवाज़ा भी खटखटाया मगर कोई प्रत्युत्तर नहीं। सतीश ने कहा—मालूम होता है, सो गया है ! जाने दो ! कल सुबह मिल लेना। यादव बड़बड़ाता हुआ चला गया। मैं सोचने लगा—"कुमार ने उसे ज़रूर नष्ट कर दिया है। नहीं तो वह मेरी तरफ़ वैसी आँखों से क्यों देखती ? उसके पैर भी तो लड़खड़ा रहे थे। मानो शराब पी रखी हो। जाओ नूरा ! आज से चन्द्र अब वह चन्द्र न रह जायगा ! मैं जानता हूँ कि इस में तुम्हारा कोई अपराध नहीं, फिर भी तुम्हारी जैसी लड़की से प्रेम करना मुझ से न हो सकेगा ! जीवन का प्रथम प्रेम और वह भी इतना विषाद-मय ! तुम ने मेरा दिल तोड़ दिया ! मैंने भूल की कि तुम्हें तुम्हारी जाति से अलग समझा। लेकिन तुम ने ही तो कहा था—'तुम समाज वाले यह समझते हो कि हम लोगों को दिल ही नहीं होता। हम गन्दी नाली के पिस्सुओं से भी बदतर हैं, मगर यह बात सरासर ग़लत है।' लेकिन नूरा। तुम ने वह ग़लती रफ़ा कर दी। आज मुझे मालूम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गया कि वेश्या की लड़की और एक कुलीन लड़की में कितना अन्तर है। कितनी भारी विषमता है।"

इसी तरह सोचते सोचते नींद आ गई। सुबह आठ बजे तक सोया रहा। यादव ने आकर कहा—"अरे उठो भी ! आठ बज गए !"

मैं आँख मलता हुआ उठा और दरवाज़े को खोल कर फिर खाट पर लेट गया। यादव ने पूछा—"आँखें क्यों सूजी हुई हैं ? नूरा से भेंट करते करते बारह बजाते हो न। कहो, कामयाबी रही न ? मैंने ज्योतिष लगा कर देखा था, और मेरा ज्योतिष कभी भी झूठ नहीं होता।"

मैं कुछ भी नहीं बोला। यादव ने कहा—"ख़ामोश क्यों हो ? क्या नूरा से मुलाक़ात नहीं हुई ?"

मुझे यादव पर बहुत गुस्सा था। मैंने कहा—"तुम्हीं ने मेरा जीवन ख़राब किया है यादव ! अगर तुम मुझे उस वक्त जाने देते तो नूरा कभी उस बदमाश के चंगुल में न फँसती।"

"तो क्या नूरा कुमार का शिकार बन चुकी ? किस ने कहा तुम से ?"

"कहेगा कौन ? मैं खुद देख कर आया हूँ।"

"क्या ?"

"यही कि रायबहादुर जो उस का बाप बनता है, अपनी बेटी और रखेली को लेकर कुमार के पलंग की शोभा बढ़ाने गया।"

"कैसे मालूम हुआ तुम्हें ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"उसकी लौंडी सकीना से।" उसके बाद की भी बातें मैंने यादव से कहदीं। उसे मेरे शक को दूर करने की युक्ति न मिली। शायद वह भी समझता था कि नूरा कुमार से बच कर नहीं आई होगी। उसने मुझे सान्त्वना देते हुए कहा—"अच्छा, कोई बात नहीं! कुमार के पंजे से छूट कर वह तुम्हारा मूल्य ज़्यादा आँकने लगेगी। तुम अगर उससे पूर्ववत् ही प्रेम करते रहे तो एक ज़माना आयगा जब कि नूरा तुम्हारी अँगूठी का नग बन जायगी। और मैं तो यह समझता हूँ कि अपनी इच्छा के खिलाफ़ अगर किसी औरत की असमत लुट जाती है, तो उसकी असमत की पाकीज़गी नहीं लुटती, उसे तलाक़ देने वाला व्यक्ति काफ़िर है। वह समाज और मनुष्यता दोनों के साथ अन्याय करता है।"

यादव के ये सैद्धान्तिक तर्क ठीक लगते हुए भी, मुझ पर प्रभाव नहीं डाल सके। मैंने उससे कहा—'इस घटना का सम्बन्ध अगर तुम से होता तो मेरे मुँह से भी ये बातें निकल सकती थीं। मैं इस वक्त से चन्द घण्टे पहले नूरा को जो कुछ समझता था, वह इस घटना के बाद भी समझूँ, इस के लिए किसी को समझाने की ज़रूरत कहाँ? यह ज्ञान का विषय नहीं भावुकता का विकार है।

यादव हँस कर बोला—"देखा! प्रेम ने तुम्हें दार्शनिक भी बना दिया है। अगर इसी रफ़्तार से आगे बढ़ते गए तो किसी दिन किस्मत भी चमक उठेगी!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"किस्मत ? अब किस्मत क्या चमकेगी ? मैं तो बिलकुल निराश सा हो गया हूँ।"

"नहीं बन्दे ! हिम्मत से काम लो ! प्रेम ही जीवन है और जीवन संग्राम ! तुम ने सुना नहीं। "ले हिम्मत से काम बन्दे जीवन है संग्राम ॥"

"यह सब कुछ सुना है, मगर इस वक्त कुछ भी नहीं सूझता। अब तो शायद मैं उससे बोल भी न सकूँगा।"

यादव ने डाँटा—"पागल कहीं के ! इतनी-सी बात पर ऐसा कठोर इरादा ! मैं तुम से अभी कहे देता हूँ कि अगर तुमने नूरा को छोड़ा तो मैं भी तुम्हें छोड़ दूँगा। प्रेम को बाबू साहब ने ताश का घर समझ रखा है, जब चाहा बना लिया, तबीयत बिगड़ी—बरबाद कर दिया ! बोलो! नूरा से बातचीत करोगे न?"

मैं बड़े असमञ्जस में पड़ा। हृदय पर मित्र का क्या खुद अपना भी अधिकार नहीं होता, फिर भी मैंने उसे खुश करने के लिए कहा—"भला तुम्हारा हुक्म कैसे टाला जा सकता है ?"

यादव प्रसन्न होकर बोला—"मियाँ, तुम भी तो यही चाहते थे। नूरा को छोड़ने की मज़ाल तुम कर ही कैसे सकते हो ?" मैंने झिड़का—"अच्छा ! अच्छा !! अब बाहर चलो। यहाँ पेट में रेलगाड़ी चल रही है !" हम दोनों हँसते हुए बाहर निकल आए।

× × × ×

कालेज जाते ही कमला ने कहा—

"आज प्रोफ़ैसर सान्याल अभिनय का क्लास लेने वाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं।" प्रोफ़ैसर साहब हॉली उड से होकर लौटे थे। उन्हें अपनी योग्यता का इतना ख्याल था कि चलते-उठते-बैठते यहाँ तक कि थूक फेंकते हुए भी कला को नहीं भूलते थे। अचानक जूते की चर्र मर्र की आवाज़ आई और हम लोग सम्हल कर बैठ गए। उन्होंने क्लास में घुसते ही कहा—'मेरे होनहार अभिनेता गण! आज आप को मैं यह बताऊँगा कि अभिनय-कला है क्या वस्तु! अभिनय-कला मानव-मनोविज्ञान का मनोहर प्रतिबिम्ब है! संसार के स्वाभाविक और अद्भुत चरित्रों का विशेषता पूर्ण अनुकरण है। आप पूछेंगे-यह कैसे? तो मैं अभी बताता हूँ।'

उन्होंने हम लोगों के प्रश्न सुनने की प्रतीक्षा नहीं की और बोलते चले गए—"मान लीजिये, एक स्त्री का एकमात्र पुत्र मर जाता है और उसे एकाएक यह खबर मिलती है कि तुम्हारा पुत्र मोटर के नीचे दब कर मर गया। उस समय उसकी माँ की क्या हालत होती है, यही ख्याल करने की बात है! वह कैसे उठ कर गिर पड़ती है। उसका चेहरा किस तरह हो जाता है, वह किस प्रकार चिल्ला पड़ती है, इसी का कलापूर्ण अनुकरण अभिनय है!" ऐसा कहते हुए वे रो रो कर उस माँ का अभिनय करने लगे। मारे हँसी के हम लोगों का पेट फूल गया। और नूरा तो हँसते-हँसते लोटन कबूतर बन गई। प्रोफ़ैसर साहब ने यह समझा कि यह हँसी मेरी कला की प्रशंसा में ही प्रस्फुटित हो रही है! मगर नूरा का इस ढंग से हँसना देखकर वे आग-बबूला हो गए। उन्होंने यह अभिनय छोड़ कर डाँटा—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"क्या ही-ही-ही-ही कर रही हो। उठो यहाँ आओ. तुम्हें भी यह अभिनय करना होगा। नूरा को तो काठ मार गया। उस-बेचारी को यह मालूम न था कि यह हँसी इतनी मुसीबत वरपा कर देगी। वह उठ कर माफ़ी माँगने लगी, मगर प्रोफ़ैसर साहब भी हाली उड-रिटर्न थे, तेवरी चढ़ाकर बोले—"आती हो कि फ़ाइन करूँ!" नूरा डरती हुई उनके पास जाकर खड़ी हो गई। वे खिल-खिला कर हँस पड़े—"हाँ अब मालूम हो गया न तुम्हें आटेदाल का भाव। मैं यहाँ एक्टिंग सिखा रहा था और ये महाशया दुपट्टे की आड़ में दाँत निपोर रही हैं। चलो, करो वही एक्टिंग।" मगर नूरा बुत के समान वहीं खड़ी रही। प्रोफ़ैसर साहब को न मालूम शायद उसकी मासूम खूबसूरती पर रहम आ गया। मुसकराते हुए बोले—"अच्छा! जाओ। आगे से फिर दाँत वाँत मत निकालना।"

नूरा झेंपी हुई अपने स्थान पर जाकर बैठ गई! अब प्रोफ़ैसर साहब मेरी ओर मुखातिब हुए—"मि० चन्द्र! तुम्हीं कर दिखाओ न इसे।"

मैंने कहा—"मैं औरत का पार्ट कैसे करूँगा प्रोफ़ैसर साहब?"

वे बोले—"नहीं सही, मर्द का ही करो। समझो कि किसी आदमी का ही पुत्र मर गया है!"

मैं उठ कर उस आदमी का अभिनय करने लगा। प्रोफ़ैसर साहब बड़ी सावधानी से ऊपर से नीचे तक देखते रहे। अभिनय समाप्त हो जाने के बाद बोले"हाँ बारह आना ठीक है। मगर आप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लोगों को एक बात का हमेशा ख्याल रखना चाहिए कि स्क्रीन पर काम करने वाले अभिनेता को शरीर या अंगों में ज़्यादा हरक़त देना बहुत ही हास्यास्पद बात है।"

उस दिन दो घण्टे इसी शिक्षा में समाप्त हो गए। छुट्टी होते ही नूरा बाहर आ गई। हम दोनों चुपचाप गराज में अपनी अपनी साइकिलें लेने चले गए। वहाँ पर और कोई भी न था। नूरा आकर मेरे पास खड़ी हो गई। मुझ से ज़्यादा कठोरता न बन पड़ी। मैंने पूछ दिया—"अच्छी हो न ?"

"हाँ"। उसने मेरी आँखों में झाँकते हुए कहा।

"फिर यह उदासी क्यों ?"

"नहीं तो !" वह हँसने की कोशिश करने लगी। तब तक और लड़कों के आने की आहट मिली। हम लोगों ने तुरन्त ही साइकिलें उठाईं और बाहर चले आए। पीछे से खखारने की कई आवाज़ें सुनाई दीं, मगर हम लोग वगैर पीछे देखे हुए आगे बढ़ गए। रास्ते में मैंने पूछा—"कल कुमार के यहाँ क्या क्या हुआ था ?"

वह चौंकी और आँखें नीचे किये हुए ही बोली—"कुछ भी नहीं।"

"तो वहाँ गई किस लिए थीं ?"

"रायबहादुर ले गए थे।"

"क्यों ?"

"कुमार साहब की ऐसी ही माँग थी।"

"तो उनकी माँग पूरी हो गई ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने मुझे क्रोधित होकर देखा मानो निगल जायगी। ग़ुस्से से उसका मुँह चढ़ गया। सामने ही उसका मकान था। हम दोनों अन्दर आए। उसकी माँ सोई हुई थीं। सक़ीना खाना खा रही थी। हम लोग पास वाली कोठरी में चले गए। नूरा ने कोच पर बैठते हुए कहा—"तुम मुझे इतनी गिरी हुई क्यों समझते हो? क्या मुझे किसी एक की होकर जीने का हक़ नहीं? तुमने मुझे अभी तक पहचानने की चेष्टा नहीं की मि० चन्द्र!"

मैं अपनी ग़लती समझ गया था। उठ कर उसके पैरों के पास बैठ गया और बोला—"मैंने वह बात इसलिए पूछी थी कि कुमार के यहाँ किसी लड़की का जाना सुरक्षित नहीं। मुझे अब माफ़ करदो। उसने मेरा हाथ पकड़ कर अपनी गोद में ले लिया। "तुम ठीक कहते हो! मेरे साथ इसी ढँग की साज़िश की गई थी। बल्कि माँ को तीन हज़ार रुपये का लोभ भी दिया गया था। मगर मैंने उनको वे खरी-खोटी सुनाई कि ज़िन्दगी भर न भूल सकेंगे। इसी बात पर कुमार रायबहादुर पर बरस पड़ा। मैं भी उसे आज तक पिता ही समझती रही हूँ लेकिन वह नरक का कीड़ा है। बेटी की असमत बेचने वाले की तुम्हारे समाज में कितनी इज़्ज़त है लेकिने अपने आप को किसी तरह के लुच्चों से बचाने वाली एक गायिका की लड़की को हर कोई शक की नज़र से देखता है।"

मौका देख कर तीर मारा गया था इस लिए दिल के उस पार तक चला गया। मैंने उसकी ठुड्डी पकड़ ली और कहा—"क्यों इतनी [illegible] करती हो? मैं वास्तव में अपनी ग़लती के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए दुखी हूँ। अगर तुम्हारा जी इस से भी नहीं भरता तो जो चाहे सज़ा दो।" मैंने उसके जानुओं पर अपना सिर रख दिया और उसने मेरी पीठ पर अपना सीना। एक अतुलनीय आनन्द ! एक अद्भुत सुख ! मैंने झुके हुए ही कहा—"अगर ऐसी ही सज़ा मिलनी हो तो मैं रोज़ एक कसूर कर दिया करूँ !"

वह शर्मा कर अलग हट गई और बोली—"बड़े वो हो जी तुम ! जाओ यहाँ से !" उसके बाद हम दोनों हँसने लगे। थोड़ी देर और बैठ कर मैं होस्टल लौट आया ! उस समय चार बजे थे।

× × ×

पण्डित महादेव राव हमारे संगीत-गुरु थे। 'सामने कुछ, और पीछे कुछ' के सिद्धान्त पर उन्हों ने अपना तन, मन, धन कुर्बान कर दिया था। प्रिन्सपल साहब से उनकी इतनी सी भी नहीं बनती थी ! पीठ पीछे उन को—कुबड़ा, अरबी ऊँट, और शुतुरमुर्ग की उपाधि से ही आप विभूषित किया करते थे, मगर सामने आते ही पाँसा पलट जाता। फिर तो बतीसी दिखाते हुए—'ज़नाब', 'हुजूर', 'साहब' और 'सर' की झड़ी सी लग जाती। खुशामद करते करते बेचारे का कण्ठ सूख जाता। मगर फिर भी प्रिन्सपल साहब 'अरबी ऊँट' ही रहते।

एक दिन जबकि कालेज की मासिक मीटिंग हो रही थी, आप बगैर किसी से पूछे-कहे उठ कर खड़े हो गए और भाषण देने लगे—

"एक महीने के अन्दर विद्यार्थियों ने जो आशातीत सफ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लता प्राप्त की है, उस पर किस को गौरव नहीं हो सकता ? हमारे यहाँ नूरा जैसी एक्ट्रेस और हरीश जैसे एक्टर पैदा हो गए हैं। इन लोगों का संसार के किसी भी सर्वश्रेष्ठ अभिनेता से मुकाबला किया जा सकता है। और इस गौरव का श्रेय हमारे माननीय प्रिन्सपल मि० वर्मा को ही प्राप्त है।"

लड़कों ने योंही ताली पीट दी और पं० जी खुशी में मस्त होकर कुर्सी पर बैठ गए। मीटिंग के समाप्त होते ही उनका रुख़ मेरी ओर हुआ। आकर तपाक से बोले—"देखो न, मैंने आपकी नूरा की कितनी तारीफ़ की ? मगर आप ऐसे हैं कि अपने गुरू की हालत पर रहम ही नहीं करते।"

मेरी तो सिट्टी ही गुम ! मैंने दबी ज़बान में पूछा—"आप का मतलब क्या है ?"

वे हँसने लगे—"नहीं नहीं, आप घबराते क्यों हैं ? मैं नूरा की ओर इशारा नहीं कर रहा। मेरा मतलब उसकी माँ से था ! ही···ही···ही···ही।"

रोकने पर भी गुस्सा आ गया। मैंने कहा—"आप क्या कह रहे हैं पण्डित जी ? उसकी माता से मैं भला इस तरह की बातें कैसे करूँगा ? आप ही मेरी पोज़ीशन का ख्याल कीजिए।"

"अभी बच्चे हो भाई ! उससे कहने की क्या ज़रूरत है ? चल कर सिर्फ़ उससे परिचय करा दो, बस ! आगे का काम तो मैं अपनी अक़्ल से निकाल लूँगा। वह भी गवैया है और मैं भी। जहाँ तानपूरा पर आलाप लिया तो समझो कि मामला तय !" उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चुटकी बजाते हुए कहा। मैंने देखा कि पण्डित जी जोंक बने जा रहे हैं, अब ऐसे काम न चलेगा तो रज़ामन्द-सा होकर बोला—"अच्छा, फिर इतवार को चलूँगा।" मैंने सोचा कि इतवार के अभी चार दिन हैं। हो सकता है कि इन्हें भूल जाय। मगर पंडित जी रोज़-रोज़ तकाज़ा करने लगे तो जान बचती हुई नज़र न आई। एक दिन मैंने उनसे कहा—"उसकी माँ रायबहादुर की रखेली है, इसलिए और के साथ उसका किसी तरह का सम्बन्ध मुमकिन नहीं। मैं अगर आपको वहाँ ले जाऊँ तो हो सकता है, रायबहादुर मेरे पीछे पड़ जाय!"

वे मेरा कन्धा पकड़ कर मैदान की ओर ले गए और बोले—"आप से एक बात कहता हूँ किसीसे कहिएगा मत। शायद आपको नहीं मालूम कि मुझे शराब पीने की भी आदत है। शादी नहीं हुई। इसलिए जहाँ रहता हूँ वहाँ कोठे पर ही आस लगानी पड़ती है। हाँ, कभी कभी आकाशवृत्ति से भी कोई नयी चीज़ हाथ लग जाती है। लेकिन जब से दिल्ली आया हूँ, कुछ भी नहीं हो सका है।" वे लम्बी साँस लेकर चुप हो गए। मुझे उनके मनोविज्ञान का परिचय मिल गया था। मैंने नम्रतापूर्वक निवेदन किया—"आप अगर नूरा के बगल वाले कोठे पर जायँ तो हो सकता है, काम बन जाय! है तो वह भी प्राइवेट, मगर नूरा की माँ जितनी नहीं।"

उन्होंने खुश होकर पूछा—"आपका परिचय है उससे?"

"परिचय तो नहीं, मगर वह कभी-कभी नूरा की माँ के यहाँ आया करती है!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो उससे मेरे मुताबिक बात कीजिये न ?"

मैंने "बहुत अच्छा" कह कर जान छुड़ाई और नूरा के मकान पर चल पड़ा। सौभाग्य से नूरा और उसकी माँ उसी के साथ बातें कर रही थीं। मेरे जाते ही वह उठकर चलने लगी। मैंने रोकने के विचार से कहा—"अजी, वाह ! इतनी नाराज़गी क्यों, ? मैं आया और आप उठ कर चल दीं। यह भी कोई बात है ?" उसके पाँवों में जंज़ीर सी लग गई। वहीं पर ठिठक कर बोली—"कहिये न ? ज़रा एक काम था।"

मैंने कहा—हमारे म्युज़िक प्रोफ़ैसर हैं पं०महादेवराव ! वह आप के गाने की तारीफ़ सुनकर मुग्ध हो गए हैं। अगर आप चाहें तो किसी दिन उनको ले आऊँ ?" किस को अपनी तारीफ़ बुरी लगती है ? वह तो भला वेश्या थी ! खुश होकर बोली—"कल शाम को ही ले आइए न ? बस ! इतनी ही बात थी ?"

"जी हाँ" मैंने कहा !

"अच्छा। तो मुझे हुक्म हो ?" वह अदावर्ज़ करके अपने कोठे पर चलती बनी। गाने वाने में तो उसको जो कमाल हासिल था उसे खुदा ही समझे ? हाँ, नखरों के रियाज़ में अलवत्ता वह अपना सानी नहीं रखती थी। नूरा की माँ और नूरा आश्चर्य के साथ मुझे देखने लगीं। नूरा की माँ ने तो पूछा—"आपने अख्तरी जान का गाना सुना है क्या ?"

मैंने हँस कर कहा—"जी नहीं, मगर उनके गाने की बदनामी बहुत दूर दूर तक है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नूरा भी हँस पड़ी। इसके बाद उसकी माँ से कुशल-क्षेम हुआ और मैं वहाँ से चल पड़ा। दिल में पण्डित जी का काम बन जाने की अत्यन्त प्रसन्नता थी।

वापसी के समय यादव ने पूछा—"आज लॉन में पण्डित जी से कौन सी बातें हो रही थीं ?"

मैंने कहा—"वह भी तुम से कम पहुँचे हुए आदमी नहीं मालूम होते। आज ऐसी-ऐसी बातें उन्होंने कहीं कि मैं तो भौंचक्का रह गया।"

"क्या भला ? कहो न !" वह सुनने के लिए बहुत उत्सुक हो गया। मैंने उनकी सारी विशेषतायें कह सुनाईं। यादव बोला—"फिर तो वे वास्तव में मेरे उस्ताद हैं। एक बात कहता हूँ, इस मामले में मुझे भी रखलो, देखो फिर कितना लुत्फ़ रहता है !"

"अच्छा ! तो कल रात को नौ बजे।"

"बहुत अच्छा !"

यादव उछलता-कूदता अपनी कोठरी में चला गया और मैं बैठे बैठे कल का प्रोग्राम ठीक करने लगा।

× × × ×

पण्डित जी को साथ लेकर हम दोनों करीब नौबजे आख्तरी जान की स्वर्गपुरी की ओर चल पड़े। कुछ सीढ़ियों को पार करने पर एक साथ ही कई आवाज़ें कान में समा गईं। "हाय मेरी कलेजी ! आय हाय ! मार डाला !" और इसी तरह की कई-चीज़ें। हम लोग ... ... एक

CC-0. In Public Domain. Funding by MoE-IKS

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पान की दुकान पर पान खाने के बहाने कई मिनिट तक ठहरना पड़ा। करीब पन्द्रह बीस मिनिट के बाद वे नीचे उतरे। फ़ुट पाथ पर आते ही एक आदमी वहीं पर लुढ़क गया। उसके और साथियों को उसका गिरना मालूम ही नहीं हुआ। वे आगे बढ़ने लगे तो उसने पीछे से चिल्ला कर कहा—"झूठे सालो, मुझे यहीं पर छोड़ जाओगे क्या? अब तो पैसा भी नहीं रहा कि कोई रात भर अपने पास रखे!" वह उखड़ी हुई जबान से न जाने और क्या क्या बकता रहा, मगर उसके साथी अपनी ही मस्ती में आगे चले गए। वह फिर लड़खड़ाता हुआ उठा और बोला—"सालों को अगर सरेराह गाली दूँ तो बुरा ही मालूम होगा मगर ये उल्लू के पट्ठे मेरी तरफ़ देखते भी नहीं। अच्छा, ठहरो! अभी मज़ा चखाता हूँ।" ऐसा कहते हुए उसने पाकेट से बोतल निकाल कर सामने दे मारी। एक साहब पास से गुज़र रहे थे। उनका तो पैर ही फूटने से बचा। वे अलग हट कर पैजामा झाड़ने लगे। हँसते हुए रफ़ा हो गए। इस दृश्य को देख कर मुझे अख़्तरी जान के स्टैण्डर्ड का विस्तृत ज्ञान हो गया। अब तो वहाँ जाते हुए भी डर लग रहा था, मगर पण्डित-जी के दिल का ख़्याल करके किसी तरह हम लोग ऊपर पहुँचे। अख़्तरी जान झल्लाई हुई कह रही थी, "निगोड़ों ने कपड़े भी फाड़ दिए। उन्हें मलकुल मौत से पाला पड़े, न जाने रण्डी के कोठे को इन्होंने समझ क्या रक्खा है।"

उसकी नूरी माँ बोली—"चल चल, बड़ी कहीं की आई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अगर वे नहीं आते तो ये ठाट बना पाती जो मैं भी देखती हूँ ।" झगड़ा शायद आगे कुछ ज्यादा रंग लाता-तब तक हम लोग ऊपर आ धमके । फ़ौरन सन्नाटा छा गया । मानो कुछ हुआ ही न हो । अख्तरी जान ने स्वागत करते हुए कहा—"आइए ! आइए !! मैं तो बहुत देर से आप लोगों का इन्तज़ार कर रही थी ।"

हम लोग मसनद का सहारा लेकर बैठ गए । अख्तरी जान ने पण्डित जी की ओर इशारा करके पूछा—आप ही प्रोफ़ेसर महादेव राव हैं क्या ?"

हम लोगों के कुछ कहने के पहले ही पण्डित जी बोल उठे—"जी हाँ इसी नाचीज़ को महादेव राव कहते हैं । आप के गाने की तारीफ़ सुनकर मुझ से रहा नहीं गया । आप जानती ही हैं—गवैया ही गवैया की कदर करता है !" अख्तरी बोली—क्यों नहीं, क्यों नहीं । आप जैसे कदरदानों पर ही तो हम लोग जी रही हैं ।"

"अच्छा फिर रहे कुछ" पण्डित जी बोले ।

वे उठ कर अन्दर गई और थोड़ी देर के बाद दो सारंगी बाज़, तबलची और हारमोनियम वालों के साथ बाहर आ गई । उनकी अम्मी ने हम सब को पान लगा कर दिया । अख्तरी बाई पैरों को मोड़ कर पण्डित जी के रूबरू बैठ गई और रेंकना शुरू किया—

"सरौता-कहाँ भूल आए प्यारे ननदोइया ।"

पण्डित जी मुँह-फाड़ कर-मेरी तरफ़ ताकने लगे । मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यादव की ओर रुख़ कर लिया। हँसी रोकते-रोकते दुर्दशा हो गई। बड़ी मुश्किल-से गाना ख़त्म हुआ। बाई जी ने माथा से पसीना पोंछते हुए कहा "—आज ज़रा गला ख़राब हो गया है। माफ़ कीजियेगा।"

यादव ने कहा—"कोई मुज़ायका नहीं। राग भी जो मुश्किल था! कहीं चाट खाकर ऊपर से तो पानी-आनी नहीं पी लिया आपने। वह ज़ोर से हँस पड़ा मगर अख़्तरी जान ऊँगलियाँ नचाते हुए बोली-"जी हाँ! वह भी एक गिलास नहीं, दो-दो गिलास।"

"तभी न?" आगे से ख़ूब ख़्याल रखियेगा, वरना गले की सारी लचक बरबाद हो जायगी।" यादव ने गम्भीर हो कर कहा। हँसी ज़ब्त न हो सकी तो मैं पेशाब करने के लिए ऊपर चला गया। और वहीं छत पर पाँच मिनिट तक हँसता रहा। नीचे आया तो देखा कि यादव अकेला बैठा हुआ मच्छर मार रहा है। वहाँ की हरकतें देख कर मेरा मन घृणा से भर गया। मैंने पूछा—पण्डित जी कहाँ गए? यादव?

"अन्दर!"

"कहाँ अन्दर?"

"वह देखो!" उसने पास वाली कोठरी की ओर इशारा किया। कोठरी से पण्डित जी के गाने की आवाज़ आ रही थी" मैंने यादव से कहा—"हम लोगों का काम अब समाप्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चलो होस्टल लौट चलें काफ़ी देर हो गई थी।" पण्डित जी को वहीं पर छोड़ कर हम लोग बोर्डिंग लौट चले।

× × ×

रविवार का दिन था। सुबह सैर के लिए मैं चला तो घूमते फिरते नूरा की सड़क पर निकल आया। विचार हुआ कि अब उससे मिलता ही चलूँ। रास्ते में सक़ीना से मुलाक़ात हो गई। वह हलवाई के यहाँ चाय के लिए दूध लेने आई थी। मैंने पूछा—"नूर घर पर है ?"

"जी हाँ !"

मैं उसके साथ ही अन्दर दाख़िल हुआ। नूरा मुझे देख कर हैरान हो गई। वह कुछ कहने ही वाली थी कि मैं बोल पड़ा—"देखो न मैं जामा मसजिद की तरफ़ घूमने आया था कि रास्ते में सक़ीना ने कहा कि आपको नूरा बेगम याद करती हैं।"

नूरा को मेरी बात का विश्वास हो गया। वह सक़ीना पर बिगड़ गई—"क्यों री, मैंने कब कहा था तुझे ?" सक़ीना तो घबराई। तब तक मैं हँस पड़ा। नूरा को मेरी झुठाई का पता चल गया। वह नाराज़ सी होकर बोली—"तुम बहुत झूठ बोलते हो ? मैं तुम से अब बात भी नहीं करूँगी।"

"क्यों ? मैंने और कब झूठ बोला है कि इस तरह की तोहमत लगा रही हो ?"

"तो तुम झूठ नहीं बोलते ?"

मैंने फिर झूठ बोलते हुए कहा—"हरगिज़ नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो अच्छा ! यह बताओ कि कल रात अख़्तरी के घर किस लिए गए थे ?"

मैं सकपका गया। यह कुमार वाले प्रश्न का मुँहतोड़ उत्तर था। और यह उत्तर पूर्ण प्रश्न इतनी जल्दी में पूछ दिया गया कि कुशाग्र बुद्धि भी फ़ेल हो गई। मैंने कहा—"तुम से मैं सच सच ही कहता हूँ। कल दोपहर को मैंने उससे पण्डित जी की चर्चा की थी न, उन्हीं को वहाँ पहुँचाने गया था।"

नूरा ने कहा—"वह ख़तरनाक वेश्या है ! कई लोग उसके कोठे से पिट कर उतरे हैं। ज़रा पण्डित जी को समझा देना।"

वास्तव में यह वाक्य एक नारी का मनोवैज्ञानिक उद्‌गार था। (प्रेमिका या पत्नी अपनी प्रतिद्वन्द्वियों से इतना घबराती हैं कि उनके लिए इससे बढ़ कर और कोई भी तकलीफ़देह बात नहीं होती। वह दुनिया की सब ग़लतियों और अपराधों को माफ़ कर सकती हैं ताकि अपने प्रतिद्वन्द्वी के अस्तित्व को सहना उनके धैर्य-शक्ति के बाहर है !) नूरा ने ये शब्द पण्डित जी के लिए नहीं, बल्कि मेरे लिए कहे थे। उसे शक हो गया था कि मैं अख़्तरी से भी उलझने लगा हूँ। उसके इस टेढ़े तीर ने दिल पर सीधे जख्म किया ! मैंने पूछा—"तुम्हें यह ख़बर मालूम कैसे हुई ?"

"अख़्तरी ने ख़ुद ही कहा था।"

मैं चुप हो गया। नूरा मेरे चेहरे से कुछ पढ़ने की चेष्टा करने लगी। मैंने कहा—"मुझ पर शक मत करो नूरा ! मैं तुम्हारे सिवा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और किसी को यह स्थान नहीं दे सकता। हमें एक दूसरे पर विश्वास करना चाहिए।"

"बेशक! मगर हमें नेकनीयत भी होना चाहिए!"

"तो क्या मैं इस इम्तिहान में फ़ेल हुआ हूँ?"

"मैं यह कब कह रही हूँ। जैसे तुमने बात कही, वैसे मैंने भी कह दी।"

"अम्मी कहाँ हैं?" मैंने बात बदल दी।

"ऊपर।"

"क्या कर रही हैं?"

"सोई हुई हैं! अच्छा चलो चाय पीलें।"

बाहर से उठ कर हम लोग चौके के घर में चले गए। नूरा का चौका-घर अंग्रेजी ढंग से सजाया गया था। एक गोल-मेज़ की चारों ओर चार कुर्सियाँ! पास की अलमारी में कई तरह की प्लेटें, प्यालियाँ, डिसेज़ वगैरह। हम लोग चाय पीने बैठ गए। नूरा ने कहा—"आज करीब दो महीने हो रहे हैं, मगर यह नहीं मालूम हो सका कि कम्पनी ट्रेनिंग देकर पिक्चर भी तैयार करेगी, या हमें अपनी अपनी किस्मत पर ही छोड़ देगी!"

"घबराती क्यों हो? फ़िल्मी-संसार में प्रवेश कराने की ज़िम्मेवारी मुझ पर है। मैं ऐसी ऐसी सिफ़ारिशें ले सकता हूँ जिस से हमारा प्रवेश भारत की किसी भी अच्छी कम्पनी में हो जाय।" नूरा को मेरी बात से बहुत आश्वासन मिला। वह आनन्दित हो कर बोली—"वे दिन कितने अच्छे होंगे जब हम और तुम किसी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फ़िल्म में नायक नायिका के रूप में संसार के सामने आयँगे। फिर जानते हो मैं क्या करूँगी ?" वह आत्म-विभोर सी होकर बोली—

"क्या ?" मैंने पूछा।

"तुम मुझ से प्रेम करने बढ़ोगे और मैं तुम्हें धकेल दूँगी। डाइरेक्टर चिल्लायगा—"केमरा बन्द करो ! जल्दी बन्द करो, माईक्रोफ़ोन भी बन्द कर दो।" बस चारों ओर हल्ला मच जायगा।"

"तभी न हम दोनों कान पकड़ कर निकाल दिये जायँगे।"

"हु ह ! इतनी किसकी हिम्मत है ?" वह अकड़ कर बोली।

"ठीक कहती हो ! तुम्हें निकालने की हिम्मत भला कौन मरदूद करेगा ? मैं न दूध की मक्खी की तरह फेंक दिया जाऊँगा ? मगर एक बात है ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाने लगूँगा और तुम डायरेक्टरों को मजबूर करके मुझे दुबारा रखा लोगी। सचमुच एक अजीब ढंग का रोमांस रहेगा !"

नूरा प्रसन्नता से नाच उठी। उसने कहा—"एक बात और ! फिर हम शादी भी कर लेंगे !"

"किस से ?" मैंने पूछा।

"तुम्हीं बताओ न" नूरा ने कहा।

"मैं तो अख्तरी से करूँगा।"

"और मैं पण्डित जी से !" हम दोनों हँसते हँसते लोट पोट हो गए। चाय की एक प्याली भी नीचे गिर कर फूट गई। नूरा ने कहा—"आज दोपहर के बाद कुतुब-मीनार जाने का प्रोग्राम क्यों न रखा जाय !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाँ ! ख्याल तो ठीक है ! फ़िर तैयार रहना ! मैं करीब तीन बजे आ जाऊँगा।"

"गुड् बाय !"

"गुड् बाय" ! हम दोनों ने साहब-मेम की तरह हाथ मिलाया और हँसते हुए एक दूसरे से अलग हो गए !

इधर उधर घूम कर मैं दस बजे होस्टल में पहुँचा। खाना खाकर लेट गया। करीब दो बजे नींद टूटी। बढ़िया सूट पहन कर ठाट-बाट से नूरा के घर गया। कुछ खाने-पीने का सामान लेकर हम लोगों की साइकिलें कुतुब-मीनार वाली सड़कपर दौड़ने लगीं। साढ़े चार के लगभग हम लोग वहाँ पहुँच गए। साइकिल को एक एक आना पैसा देकर एक आदमी के हवाले किया और कुतुब-मीनार पर चढ़ने लगे। नूरा तीन मंज़िल तक जाते-जाते हाँफ गई। उसने मुझे पकड़ कर कहा—"अब चला नहीं जाता।"

मैंने कहा—"घबराओ मत ! सिर्फ़ बीस-पचीस सीढ़ियाँ ही बाकी रह गई हैं।"

"नहीं डियर, अब नहीं चला जायगा।" वह वहीं पर बैठ गई। मैं बोला—"अच्छा, ठहरो, तुम्हें उठा कर ऊपर ले चलता हूँ।" मैंने उसे दोनों बाहों पर टाँग लिया। मुश्किल से पाँच छः सीढ़ी ऊपर चढ़ा होऊँगा कि दम फूल गया। मालूम होता था कि पिंडलियों पर संसार भर का भार आ गया है। फ़िर भी उसे अपनी गोद से उतार देने के लिए दिल तैयार न हुआ। हलका होकर चलने से वह भार कहीं मधुर था। नूरा ने कहा—"अब छोड़

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो। कहीं कोई आ गया तो देख लेगा।"

"और यह नहीं देखेगा कि तुम कितनी मेहनत से ऊपर चढ़ रही हो।"

"अच्छा, यह बात नहीं सही, मगर तुम थक भी तो गए हो।"

"वाह ! मेरा थकना तुम्हें कैसे मालूम हो गया ?"

"तुम्हारे दिल की धड़कनों से। देखते नहीं, मैं कितनी नज़दीक से धड़कनों को सुन रही हूँ।"

मैंने नीचे से ही उसके पैर में चिकोटी काट दी। वह तड़प कर नीचे उतर गई और बोली—"इसीलिए ऊपर उठा रखा था क्या ? बड़े शरीर हो तुम ?"

"हाँ, अब शरीर, बदमाश, जो चाहे कह लो। कुली की तरह इतनी दूर उठा कर जो ले आया हूँ।"

उसी वक्त ऊपर से कई स्त्री और पुरुष नीचे उतरे। हम लोग चुपचाप ऊपर चढ़ने लगे। नूरा ने कहा—"अगर ये लोग चन्द मिनिट पहले आ गए होते तो ?"

"तो क्या होता ? ज़्यादा से ज़्यादा यही देखते न कि तुम बेहोश हो गई हो और मैं तुम्हें उठाये हुए ऊपर ले जा रहा हूँ। फ़रिश्ते की तरह !"

"कहाँ ?"

"लुकमान के पास ! धन्वन्तरि के यहाँ और कहाँ ?"

हम लोग कुतब-मीनार के ऊपर पहुँच गए थे। नीचे की ओर झुक कर देखा। आदमी बकरियों की तरह छोटे छोटे दिखाई दिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दूर यमुना की धारा पृथ्वी पर पारे की लकीर की तरह नज़र आती थी। आस पास की फुलवारियों, बगीचों और खेतों की हरियाली आँखों को ठण्डक पहुँचाने लगी। ऊपर की छत पर और कोई भी नहीं था। मैंने कहा—"नूरा! अगर हम लोग यहीं पर बस जायँ तो?"

"बुरा तो नहीं रहेगा! मगर वारिश होने लगी तो?"

"फिर-यह बात फ़ेल हो गई! अच्छा! अब दूसरी राय सुनो! अगर मैं यहाँ से नीचे कूद पड़ूँ तो?" मैंने कहा।

"हाँ यह पहले से ज्यादा सुन्दर है! मगर एक तरमीम है, अगर सर के बल कूदो तो सीधे स्वर्ग चले जाओगे!"

"और पैर के बल से नरक?"

"बिलकुल!" वह हँस कर बोली। हम दोनों हँस ही पड़े। मैंने कहा—"आज तुम से एक भीख माँगने की नौबत आगई है!"

वह घबराई। हैरान होकर पूछा—"कैसी भीख?"

"कान में कहूँगा। इधर आओ।"

उसने मेरे मुँह के सामने अपना कान कर दिया—एक भोलेपन के साथ और बोली—"कहो न!"मैंने कान के बजाय उसके गाल पर मुँह रख दिया। वह मुझे धकेल कर बोली—"बात कान में कही जाती हैं कि गाल पर? तुमने अब तक यह भी नहीं सीखा।अब दूर से ही कहो! तुम्हारे कुसूर की यही सज़ा है!"

"अब किसलिए कहूँ?"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मुझे तो भीख मिल गई !"

"वह कैसे ?"

"अपने कहने के ग़लत तरीके से।"

"ओह तो जनाब... ..."

इतने में तीन चार युवक ऊपर आगए। वे नूरा को घूर घूर कर देखने लगे। उसने कहा—"चलो, नीचे उतर चलें।"

हम लोग हँसते-गाते नीचे उतरे और साइकिल से बैग खोल कर पास की पहाड़ी पर जा कर एक घने झुटमुट-के पास दरी बिछा कर खूब खाना-पीना हुआ। कुछ देर तक हम लोग वहीं सोते भी रहे। नूरा ने कहा—"चलो, अब ज़रूर भूल-भुलैया देख आया जाय।

नाम तो उसका भूल भुलैया है मगर इस ढंग की कोई भी खूबी उस में नहीं। वहाँ से हम लोग देवी जी के मन्दिर में गए। फिर लोहे के स्तम्भ के पास आकर खड़े हो गए। वहाँ पर एक बड़ी भीड़ लगी हुई थी। सब लोग उस खम्भे को पीछे की तरफ़ से पकड़ने की चेष्टा करते। जो कोई पकड़ नहीं पाता उसे सब एक स्वर से कहने लगते—"यह अपने बाप का नहीं।" मुझे उनकी अन्ध-बुद्धि पर बहुत नाराज़गी हुई। फिर भी मैं उसे पकड़ने के लिए बढ़ा। मेरे पहले जो सज्जन आए थे उनसे वह काम नहीं हो सका था, इसलिए लोगों की आँखें मुझ पर केन्द्रीभूत हुईं, शायद वे इस प्रतीक्षा में थे कि यह भी असफल होकर हम लोगों की फ़बतियों का शिकार बनेगा। लेकिन उनकी बदनसीबी ! मैंने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ बढ़ाते ही उसे पकड़ लिया। नूरा खुश होकर ताली बजाने लगी। मैं ऐंठता हुआ नीचे उतर आया और नूरा के पास बैठ गया। उसी समय कुतुबमीनार की तरफ़ बड़े ज़ोर का हल्ला हुआ। सब लोग उसी ओर भागे ? मैं भी नूरा के साथ वहाँ पहुँचा। एक बूढ़ा कुतुब की सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नीचे चला आया था। उसका सारा शरीर खून से लथ-पथ हो गया था। डाक्टर के लिए पुकार होने लगी। सौभाग्य से उस दिन एक पारसी डाक्टर बम्बई से कुतुब देखने के लिए आए हुए थे। उन्हें ख़बर मिली तो बेचारे दौड़े हुए आये। मगर उनके आते आते बूढ़े के पापी प्राण धोखा दे गए। डाक्टर को अपनी सुस्ती पर बहुत दुख हुआ। नूरा की आँखों से तो आँसू निकल आए। अत्यन्त करुणोत्पादक दृश्य था। सब लोगों के चेहरों पर शोक छा गया। हम लोगों को भी ज़्यादा घूमने की तबीयत न हुई। साइकिलें लेकर घर की ओर हो लिए। नूरा ने लम्बी साँस लेकर कहा—"ज़िन्दगी-का भी कुछ ठिकाना है! बेचारा घर से आया होगा कि कुतुबमीनार देख कर लौटूँगा तो बच्चों को उसकी कहानियाँ सुनाऊँगा, मगर मौत ने उसकी इच्छाओं को मिट्टी में मिला दिया! ज़रा सोचो, जब उसकी बूढ़ी पत्नी और छोटे-छोटे पोतों को यह ख़बर मालूम होगी तो उन्हें कितना दुख होगा!"

उसकी आँखें फिर डबाडबा गईं। मैंने समझाने के विचार से कहा—"मौत का तो एक बहाना होता है। हो सकता था कि कुतुब पर चढ़ने के पहले ही उसका हार्टफ़ेल कर जाता।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नूरा चुपचाप पैडिलों को चला रही थी। उसने कुछ भी नहीं कहा। (नारी का हृदय पुरुष के हृदय से ज्यादा सम्वेदनाशील होता है। वह किसी की भी पीड़ा देख कर पुरुषों से ज्यादा विचलित हो जाती है। पुरुषत्व और नारीत्व में एक भारी अन्तराय मनोविज्ञान के कारण है।) नूरा के हृदय की करुणा का अन्दाज़ा लगाना मेरे लिए मुश्किल था, अतएव मैं भी चुप हो रहा और इसी चुप्पी को लिए हुए हम लोग अपने अपने घर को चले आए। विदा होते हुए नूरा ने मामूली मुसकुराहट के साथ गुड़नाइट कहा, वह भी इसलिए कि कहीं मैं इसे नीरस या बेवकूफ़ न समझ लूँ। रास्ते पर बिजलियाँ जगमगा रही थीं। ऐन खाने के मौके पर मैं होस्टल में हाज़िर हुआ। खाना खाते वक्त मैंने कुतुबवाली दुर्घटना सब लड़कों को सुनाई। उन पर भी उस बूढ़े की गमनाक़ मौत का बहुत असर हुआ। उस रात होस्टल भर में इसी बात की चर्चा रही।

× × × ×

दो महीनों के बाद जब कि हमारे ट्रेनिंग की अवधि केवल दो महीने और रह गई थी। हमारी कम्पनी का विचार था 'आज़ादी' नामक पिक्चर बनाने का, इसलिए अभिनेता और अभिनेत्रियों का चुनाव होने लगा। नूरा, मैं और यादव, हम तीनों ही उस चुनाव में आगए। इसी बीच कम्पनी के डाइरेक्टरों में ले-दे हो गई। जूतों-कुर्सियों-यहाँ तक कि स्याही और होल्डर से भी हथियार का काम लिया गया। नूरा बड़ी चिन्ता में पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब पिक्चर तो तैयार होगी नहीं। इतना समय भी बर्बाद हुआ। पैसे भी काफ़ी लगे! और नतीजा टाँय टाँय फिस! इस फ़साद के बाद कालेज भी एक सप्ताह के लिए बन्द कर दिया गया। दूसरे दिन ही नूरा का नौकर बोर्डिंग हाउस में पहुँचा।

"आप को नूरा बेगम बुला रही हैं।'

मैं चट साइकिल पर तीर हुआ। नूरा विक्षिप्त की तरह इधर से उधर टहल रही थी। मैंने जाते ही कहा—"उस दिन सकीना बुला कर लाई तो तुम बिगड़ गई और आज रहमान बुला कर लाया है तो न जाने क्या क्या करोगी?"

वह गुस्से से बोली—"तुम्हें हमेशा मज़ाक ही सूझता है! कुछ आगे का भी ख्याल है? कम्पनी के डायरेक्टरों में मार-पीट हुई है, मगर हमारा कालेज क्यों बन्द कर दिया गया? मैं तो समझती हूँ कि ये लोग इसी बहाने कम्पनी को तोड़ डालना चाहते हैं। इतने लड़के-लड़कियों को नौकर रखना कोई आसान बात तो नहीं।"

"फिर क्या राय है तुम्हारी?"

"तुम अपने सरोकारियों से किसी अच्छी फिल्म-कम्पनी में प्रवेश करने का ज़रिया निकालो। ये लोग बोगस मालूम होते हैं।"

मुझे नूरा की बात की सत्यता तो बहुत पहले से मालूम थी, लेकिन अपने सम्बन्धी की संस्था थी, इसलिए कुछ खुराफ़ात करने का साहस नहीं होता था। मैंने कहा—"अच्छा, कल दो-तीन जगह पत्र लिख कर कोशिश करता हूँ। अगर किस्मत गवाह दे गई तो एक बार जीवन सँवर जायगा!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नूरा ज़ोर देकर बोली—"हाँ हाँ, बग़ैर कहीं आसरा लगाये यहाँ काम नहीं बनने का। तुम्हें इसके लिए सिरतोड़ कोशिश करनी चाहिए।"

"घबराओ मत! ख़ून पसीना एक कर दूँगा। तुम्हें मैं विश्वास दिलाता हूँ कि एक महीने के अन्दर ही अन्दर हम लोग किसी अच्छी कम्पनी में चले चलेंगे।"

नूरा ने खुश होकर मुझे अपनी गोरी-गोरी बाँहों में बाँध लिया और ओठों के पास ओठ लाकर धीरे से कहा—"तुम कितने अच्छे हो!"

मैंने कहा—"तुम क्या कोई कम हो।" नूरा आँखों में ही मुस्करा उठी।

मैंने कहा—इजाज़त दो न, अब ज़रा डाकखाना जाना है।"

"क्यों?"

"घर से मनीआर्डर आया है!"

"चाय तो पी लो।"

'मैंने पी ली है!"

"क्या?" उसने विस्मय से पूछा!

"अधरामृत!"

वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ी, मगर मैं धड़-धड़ करता हुआ नीचे उतर गया!

उसने ऊपर से ही चिला कर कहा—"अच्छा! फिर नहीं आओगे क्या?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल में अनन्त उल्लास लिए हुए मैं डाकखाने को चल पड़ा। मैं कई जगह ताँगे और मोटरों से टकराते टकराते बचा। अधरामृत जो पी लिया था प्रेयसी का। शराब से उस में कहीं ज्यादा नशा है! होश में रखते हुए भी बेहोश कर देने की शक्ति है उसमें और आज आवेग में मैंने उसे ही पी लिया था।

डाकखाने से मनीआर्डर लेकर चाँदनी चौक से गुज़र रहा था। बुकस्टाल पर 'चित्रपट' का नया अंक देख कर जी में आया ले लूँ। मैं उसे उलट-पलट कर देखने लगा कि अगर कुछ अच्छी सामग्री हो तो खरीद लूँ। अचानक मेरी नज़र एक विज्ञापन पर पड़ी!

"अभिनेता और अभिनेत्रियों की आवश्यकता! भारत की सर्व श्रेष्ठ फ़िल्म कम्पनी—आलोक सिनोटोन के लिए।"

मैंने चट चार आने दूकानदार के हवाले किये और "चित्रपट" लेकर बोर्डिंग की ओर चल पड़ा। दिल ने कहा—"जिसे परमात्मा देता है उसे छप्पर फाड़ कर देता है! वाह री! खुशनसीबी!"

जल्दी जल्दी होस्टल में पहुँच कर विज्ञापन का एक एक अक्षर पढ़ डाला। काफ़ी आशा दिखाई पड़ी। यहीं पर सिफ़ारिश लेकर पहुँचने से काम जल्दी बन जायगा। खाना खाने के बाद विचार हुआ कि चलूँ नूरा को भी इस की ख़बर दे दूँ! पत्रिका को ओवरकोट के अन्दर वाले पाकिट में छिपा लिया ताकि कोई और लड़का न देख ले और नूरा से मिलने के लिए चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसने जब आद्योपान्त विज्ञापन को पढ़ा तो बहुत खुश हुई। बोली—"क्या विचार है तुम्हारा? यहाँ कोशिश की जाय?"

"हाँ हाँ! मैं प्रिन्सपल वर्मा और आर्ट डाइरेक्टर मिस्टर ग़नी से भी आज मिल लेता हूँ। उनकी सिफ़ारिश भी बहुत काम देगी।" सौभाग्य से 'आलोक सिनोटोन' के एक शेयर होल्डर महाशय हमारे परिचित निकल आए। इन तीनों से मैं मिला और एक सप्ताह के अन्दर ही उनसे सिफ़ारिशी चिट्ठियाँ लिखा कर दरख्वास्तें भेज दी गईं। उन्होंने हमारी अनेक पोज़ वाली तसवीरें माँगीं। उनकी इच्छा पूरी कर दी गई। प्रिन्सपल वर्मा और शेयर होल्डर साहब की सिफ़ारिशों का बहुत ही प्रभाव पड़ा। कालेज खुलने के तीसरे दिन ही हम दोनों का "एप्वाइन्टमेंट लेटर" (नियुक्ति-पत्र) आ गया। संगीत का क्लास चल रहा था। प्रिन्सपल साहब हँसते हुए आए और बोले—"चन्द्र और नूरा!" हमारे क्लास में शान्ति छा गई। हम दोनों खड़े हो गए। उन्हों ने कहा—"आप लोगों को जान कर अपार खुशी होगी कि नूरा और चन्द्र यहां से निकाले जा रहे हैं।"

मेरे प्रतिद्वन्द्वियों के मुँह पर मुसकुराहट नाच उठी। रक़ीबों को इससे बढ़ कर और क्या ख़ुशी हो सकती थी। हम लोग भी बहुत घबराये। मगर यादव से नहीं रहा गया। उसने उठ कर पूछा—"क्यों, सर?"

उन्होंने हँसते हुए कहा—"चूँकि 'आलोक सिनोटोन' बम्बई से इनका एप्वाइनमेंट लेटर आ गया है!" हमारे लिए यह कम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिमान की बात नहीं कि इस कालेज के दो कलाकार भारत की एक श्रेष्ठ कम्पनी में अच्छे स्थानों पर जायँ।"

पं० महादेव राव ने चिल्ला कर कहा—"बधाई मि० चन्द्र, बधाई मिस नूरा! वहाँ जाकर इस ग़रीब को याद रखियेगा!"

मैंने हँस कर कहा—"भला आप को मैं कैसे भूल सकता हूँ।"

सब लड़के आ आ कर बधाई देने लगे। नूरा को भी लड़कियों ने घेर कर चिढ़ाना शुरू किया।

"तुझे तो मुँह-माँगी मुराद मिल गई!" पहली ने कहा।

"अब तो मज़े से ज़िन्दगी कटेगी।" दूसरी बोली।

"नूरा ने ऐसे आदमी से नाता जोड़ा कि मनोरथ ही सफल हो गया।" कमला ने ताना मारा।

कालेज से फुरसत पा कर हम लोग घर पहुँचे। नूरा ने अपनी माँ को नियुक्ति-पत्र पढ़ सुनाया। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बेटा! नूरा को तुम्हारे ही सुपुर्द करती हूँ। इसकी ग़लतियों को भुलाकर हमेशा इसकी रक्षा करना। अपने पास से दूर कभी न करना!"

मैंने उनकी आज्ञा को यथाशक्ति पालन करने की प्रतिज्ञा की। वे सैकड़ों दुआएँ देते हुए बोलीं—"देखो, नूरा तुम सदा इनकी ही होकर रहना। अगर कोई भी ग़लती करोगी तो मैं माफ़ न करूंगी।"

नूरा मेरी ओर ताक कर मुसकराने लगी। उसकी माता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की बातों से मालूम हुआ कि वह नूरा को मेरी जीवन-संगिनी के रूप में देखना चाहती हैं। मैं भी यह लोभ कैसे संवरण कर सकता था। उस समय मैं ख़ामोश ही रह गया। सोचा—"बम्बई जाकर ही सब कुछ होगा।" अम्मी जान मुझे खिलाने-पिलाने के प्रबन्ध में चौके में चली गईं। नूरा ने कहा—"फिर चलने का प्रोग्राम कब रहा?"

"सोमवार को।"

"आज कौन दिन है?"

"शनिवार।"

"फिर क्या क्या ले चलना होगा?"

"सितर, साड़ी, जम्पर, जूता और एक डिब्बा पाउडर!"

नूरा हँसकर बोली—"तुम औरत होते तो ज्यादा अच्छा होता!"

"सो कैसे?"

"इतनी चीज़ों के नाम जो याद हो गए हैं तुम्हें।"

"मगर तुम से विवाह कौन करता?"

वह शर्माकर चुप हो गई। थोड़ी देर के बाद अम्मीजान न जाने तीन चार तस्तरियों में क्या क्या लेकर आ गईं। इच्छा न होने पर भी खाना ही पड़ा। वहाँ से जैसे ही होस्टल में आया कि लड़कों ने घेर लिया। जिसके जी में जो आया वह वही सुना गया। यादव ने मुझे अलग लेजाकर कहा—"तुम तो जा रहे हो? पर मेरा क्या होगा?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वहाँ जाते ही तुम्हें बुलाऊँगा।"

"ये सब कहने की बातें हैं दोस्त! नूरा के फेर में पड़कर यादव कहाँ याद रहेगा? इतनी बड़ी कम्पनी में जाकर तुम कोई मामूली से आदमी थोड़े रह जाओगे।" यादव ने व्यंग्य-बाण छोड़ा।

"नहीं मेरे मित्र! मैं अपने बड़े भाई यादव को भूल कर उसके प्रति विश्वास-घात नहीं कर सकता! मैं तुम्हें अपनी सचाई का विश्वास दिलाता हूँ।"

उसने मुझे ऊपर टाँग लिया और खुशी से कूदने लगा। "वाह! इसे कहते हैं सच्ची दोस्ती।" जाओ! तुम को मैं आज वरदान देता हूँ कि संसार में तुम्हें कहीं भी असफलता नहीं होगी!"

यादव ने वाल्मीकि ऋषि की तरह वर दिया।

"बड़ी कृपा है, महामुने।" मैंने झुक कर उसके वरदान को स्वीकार कर लिया।

\+ + × ×

"आज ही सोमवार है न?" यादव ने कमरे में घुसते हुए पूछा।

"हाँ! आज ही है?"

"फिर किस ट्रेन से सवारी जा रही है?"

"शाम की।"

"नूरा से सब ठीक ठाक हो चुका?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यादव जिस समय कमरे में आया, मैं कपड़े पहन कर नूरा के यहाँ जाने की तैयारी कर रहा था। यादव ने पूछा—"कहाँ की तैयारी है ?"

"नूरा के यहाँ की।"

"इसी समय ?"

"हाँ ज़रा वहाँ पर जाकर और भी काम करना है।"

"नौकर को भेजकर ताँगा मगँवा लूँ क्या ?"

"हाँ ! मगवाँ लो न !"

यादव ताँगे के प्रबन्ध में बाहर चला गया और मैं अपने ट्रंक विस्तरे और बाकी सामानों को ठीक ढंग से बाँधने लगा।

सामान वगैर लेकर मैं नूरा के घर पहुँचा। वह भी तैयारी में थी। दूसरी कोठरी में गया तो देखा—"कमला, सुन्दरी, अरुणा और जासमीना बैठी हुई बातें कर रही है। मुझे देखते ही कमला ने कहा—आइए आइए, बम्बई, जाकर हमें भूल मत जाइएगा !" मैं उत्तर देने को ही था कि अरुणा ने सलज्ज भाव से कहा—नूरा को तकलीफ़ मत दीजियेगा।"

जासमीना क्यों चुप रहती। उसने कहा—"नहीं तो हम जब बम्बई आयँगी, नूरा को आप के दो चपत लगाने का हुक्म देंगी।"

मैं एक बार ही इतने वारों को सम्भाल न सका। कुछ चुभती हुई बात सोच कर ओठ हिलाने वाला ही था कि सुन्दरी बरस पड़ी—"सिर्फ़ नूरा से ही क्यों ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो आप लोग भी हाथ साफ़ करेंगी क्या ?"

सुन्दरी लजा गई। कमला ने कहा—"बैठिये न, खड़े-खड़े पैर दुख गए होंगे।"

मैं बैठने लगा कि नूरा की माँ आ गई।

"चार बज गए, बेटा ! अब स्टेशन पर चलने की तैयारी करनी चाहिए।"

एक बढ़िया ताँगा मँगवा कर उस पर सारा सामान लादा गया। नूरा के साथ सकीना भी जाने वाली थी। दूसरे ताँगे पर करुणा, सुन्दरी, कमला और जासमीना बैठ गईं। स्टेशन पर पहुँच कर देखा—पंडितजी यादव, अवस्थी, हरीश, घोष वगैरह सात आठ विद्यार्थियों के साथ प्लेटफ़ार्म को रौंद रहे हैं। हमें देखते ही पंडितजी बोले—"अरे इतनी देर क्यों कर दी ? हम लोग तो बहुत देर से आए हुए हैं।"

गाड़ी आने में एक घण्टे की देर थी। दोस्तों से मिलते जुलते गाड़ी का समय हो गया। रहमान इन्टर क्लास के तीन टिकट लेकर आया और बोला, "छः प्लेटफ़ार्म टिकट भी ले आया हूँ-चार नूरा बेगम के दोस्तों के लिए और दो अपने लिए।" नूरा की माँने कहा—"तेरी-अक्लमन्दी पर तो हमें फ़ख़्र है। "रहमान ने सीना उभार लिया। उसी समय गाड़ी झक़-झक़ करती हुई आ खड़ी हुई। हम लोग डब्बे में जा बैठे चारों लड़कियाँ, सारे दोस्त और पंडित जी-से इधर उधर की बातें होने लगीं। पंडित जी का नूरा की माँ से परिचय हो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गया। वे बहुत खुश नजर आते थे। उन्होंने उससे कहा—"बाई जी, आपकी नूरा के भाग्य चमक गए। चन्द्र के साथ इसका और इसके साथ चन्द्र का जीवन एक स्वर्गीय जीवन होगा!"

नूरा की माँ का मस्तक प्रसन्नता से ऊपर उठ गया। उन्होंने कहा—"पण्डित जी, यह सब आप लोगों का ही आशीर्वाद है।"

उसी समय गाड़ी ने सीटी दी। सभी से नमस्ते, प्रणाम और पत्र वगैरह लिखने के इक़रार होने लगे। नूरा की माँ रोने लगीं। उन्होंने मेरी तरफ़ देख कर कहा—"मेरी बात भूलना मत; बेटा! और तुम भी, नूरा!"

हम दोनों ने खिड़की से ही उनका अभिवादन किया। गाड़ी सर-सर करती हुई आगे बढ़ने लगी। प्लेटफ़ार्म पर खड़े होकर सब लोग रूमाल हिला रहे थे। थोड़ी देर के बाद स्टेशन आँखों से ओझल हो गया और हज़ारों तरह की तमन्नायें लिए हुए हम और हमारी गाड़ी मंज़िले-मकसूद की तरफ़ रवाना हो गई।

× × ×

बम्बई आए हुए तीन महीने हो गए थे। नूरा और मैंने दो फ़िल्मों में काम भी किया। कम्पनी के मालिक, डाइरेक्टर वगैरह सभी हम लोगों के काम से सन्तुष्ट थे। नूरा ने अपनी सुन्दरता के कारण पहली पिक्चर में ही नाम पैदा कर लिया। देश के कोने कोने से उसको चिट्ठियाँ आने लगीं। किसी नवयुवक ने लिखा—"मैं तुम पर दिलोजान से फ़िदा हूँ," किसी ने लिखा—"मैं लाखों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का मालिक हूँ। मुझसे शादी करके तुम्हारा जीवन सुखी बन जायगा।" एक ने तो यहाँ तक लिख मारा—"मेरी हृदयेश्वरी ! मैंने प्रतिज्ञा कर ली है कि अगर शादी कराऊँगा तो तुम्हीं से, वरना गंगा में डूब मरूँगा।"

नित्य नई नई चिट्ठियों का ढेर लग जाता। नूरा उन्हें मुझी से पढ़वा कर सुनती और फाड़ कर रद्दी की टोकरी में डाल देती। मैं जब कभी उन पत्रों के लिए उसके भाग्य को सराहता तो वह मुझ से नाराज़ होकर दर्दभरे स्वर में कहती—"ऐसा मज़ाक ठीक नहीं, जिससे किसी का दिल दुखे।" मैं तुरत ही क्षमा माँग लेता।

इस जीवन के अतिरिक्त वैवाहिक जीवन में कुछ ज़्यादा आनन्द होता है यह मेरी समझ में नहीं आया। हम एक दूसरे को शरीर और आत्मा से प्यार करते थे। उस प्रणय में कृत्रिमता का कहीं नामोनिशान तक नहीं था। हमारी इच्छायें, हमारे विचार और हमारी क्रियायें अलग अलग होकर भी दूसरे के लिए होत थीं। मैं जो कुछ करता नूरा के लिए और नूरा जो कुछ करती मेरे लिए। बड़े ही मज़े के दिन गुज़रने लगे। नूरा को पौने पाँच सौ रुपये और मुझे दो सौ रुपये मासिक वेतन मिलता था। हम लोगों ने दादर में ही साठ रुपये पर एक छोटा मगर बढ़ियासा घर किराये पर ले रखा। हमारी कम्पनी भी वहीं पर थी। आने-जाने में सहूलियत तो रहती ही, वातावरण के ख्याल से भी स्थान आनन्द-प्रद था। सकीना हम लोगों के खाने, पीने, पहरने ओढ़ने आदि सब का माँ की तरह से इन्तज़ाम रखती। उस अनुपम जीवन की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल्पना भी अगर कोई करे तो उसका कुछ समय मौजों में कट जाय ? ऐसा अनमोल जीवन था हमारा ।

एक दिन मैं नूरा के साथ टेनिस खेलने के लिए कम्पनी के लॉन में गया । टेनिस खेलकर घर के अन्दर प्रवेश करते ही सकीना दौड़ी हुई आई और बोली—"आपके घर से तार आया है । मैंने डरते हुए लिफ़ाफ़े को फाड़ा । दिल धक्-से हो गया । मेरे छोटे भाई ललित की, जो गुरुकुल में पढ़ता था, निमोनिया से मृत्यु हो गई थी । माता जी ने शीघ्र बुलाया था ।

तार पढ़ते ही दिल बैठ गया । मैं कोठरी में जाकर बच्चों की तरह रोने लगा । नूरा ने बार बार दरवाज़ा खोलने के लिए कहा, किन्तु मैंने उसका ज़रा भी ख्याल नहीं किया, रोते रोते नींद आ गई । उठने पर डायरेक्टर के नाम से एक महीने की छुट्टी के लिए दरख़्वास्त लिखी और नूरा को देकर कहा, "मैं आज ही घर जाऊँगा । अब ज़रा भी दिल नहीं लगता ।" नूरा ने भी रोकना उचित नहीं समझा । रात की गाड़ी से ही मैं घर के लिए चल पड़ा । माता जी पर ललित की मृत्यु का खतरनाक प्रभाव पड़ा था वह रोती रोती बेहोश हो जाया करती थीं । ऐसी अवस्था में फ़िल्म-कम्पनी में दुबारा लौटना मेरे लिए सम्भव नहीं हो सका । मैंने वहीं से इस्तीफ़ा दाखिल कर दिया । नूरा को भी भूलने की कोशिश करने लगा, मगर अभी तक सफलता प्राप्त नहीं हुई ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो बहनें

एक अमेरिकन कहानी-लेखक की प्रसिद्ध कहानी है—"प्रेमी की पतलून'। संक्षेप में उसका कथानक ऐसा है—

किसी धनी पुरुष को अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए एक गृह-शिक्षक की ज़रूरत थी। विज्ञापन निकाला गया। एक युवक जो अत्यन्त ही ग़रीब था, अपनी गुदड़ी-गठरी लिए उनके घर जा धमका। उस बेचारे के पास एक ही गर्म पतलून था। गृह-स्वामी ने दया करके उसको एक अपना पतलून दे दिया, लेकिन बद-किस्मती से वह गृह-शिक्षक से बहुत ज्यादा लम्बे-चौड़े थे। शिक्षक ने घर की रसोईदारिन से कहा—"चाची, इस को मेरे पहनने लायक बना दोगी तो मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुज़ार होऊँगा।"

रसोईदारिन ने नाप लेकर पतलून को काँट-छाँट दिया। इस्त्री वग़ैरह करने के बाद पतलून बरामदे की अरगनी पर रख कर वह सो गई।

गृह-स्वामी की दो लड़कियाँ थीं। एक अट्ठारह साल की और दूसरी पन्द्रह की। दोनों ही शिक्षक से छिपे-छिपे प्रेम करती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थीं। सब के सो जाने पर बड़ी लड़की ने सोचा—"मेरे पिता ने इतनी भद्दी पतलून दे दी है कि बेचारा पहन भी नहीं सकेगा।" वह चुपके से उठ कर गई और पतलून को लेकर एक बालिश्त काट दिया। मोहरी भी छोटी कर दी और उसी अरगनी पर रख कर सो रही। उसके सो जाने पर छोटी बहन को भी ठीक यही ख़्याल हुआ। उसने भी बड़ी बहन की तरह पतलून को काट-छाँट दिया।

प्रातःकाल शिक्षक बेचारे ने जब पतलून पहनी तो घुटनों तक चली आई। उसे इस कारीगरी पर बहुत दुःख हुआ, लेकिन पतलून के पीछे दो बहनों का प्रेम उसे मालूम न हो सका, वरना उसी पतलून से वह एक अनुपम आनन्द प्राप्त करता।"

भाग्य के फेर से एक बार मुझे भी दो बहनों का शिक्षक बनना पड़ा। एक बीस वर्ष की थी और दूसरी पन्द्रह वर्ष की। बड़ी का नाम कामिनी था और छोटी का यामिनी। दोनों ही सुन्दरता और स्वास्थ्य की जीती-जागती तसवीरें थीं। प्रेम का माद्दा भी कम नहीं था उनमें।

मुझे भी गृह-स्वामी के द्वारा एक बढ़िया रेशमी चादर प्राप्त हुई। कामिनी और यामिनी ने उस पर अपनी क़सीदा-कला इतनी दिखाई कि वह चादर के बजाय दुशाला हो गई। वह भी पहनने लायक नहीं, नुमायश में रखने लायक! मैंने उसे ट्रंक में बन्द कर के रख दिया।

दोनों विद्यार्थिनियाँ हिन्दी-विशारद की तैयारी कर रही थीं। साहित्यिक-रस में सराबोर हो कर अध्ययन करना उनकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपनी विशेषता थी। अलंकार, छन्द और काव्यों की पढ़ाई में उनकी दिलचस्पी देख कर मेरा हृदय पुलकित हो उठता था। ऐसे विद्यार्थी जो पढ़ने में अपनी सुध-बुध भूल जायँ, शिक्षक के अभिमान का कारण होते हैं। उन दोनों बहनों में यही गुण था, इस लिए मेरा चित्त भी उनकी तरफ़ आकर्षित हो गया।

वे दोनों ही मुझ से प्रेम करती थीं। अगर कामिनी रूमाल बनाकर देती तो यामिनी तकिया का खोल। इस तरह की होड़ में मेरे पौबारह थे। दोनों बहनों की चढ़ऊपरी से कभी कभी मैं झंझट में भी पड़ जाया करता।

मैं एक दिन प्रसाद जी का 'आँसू' पढ़ रहा था।

जो घनीभूत पीड़ा थी;
मस्तक मे स्मृति सी छाई!
दुर्दिन में आँसू बन कर—
वह आज बरसने आई।

इन चार पंक्तियों के अन्दर स्मृति-जन्य पीड़ाका जो कारुणिक चित्र खींचा गया था, मैं इसी पर एक घंटा बोलता रहा और दोनों मन्त्र-मुग्ध होकर सुनती रहीं। मेरे चुप होने पर कामिनी से रहा नहीं गया। वह गद्गद् होकर बोली—"आप कविता को साकार कर देते हैं। आपकी पढ़ाई से कभी जी नहीं ऊबता।"

यामिनी ने कहा—"वास्तव में आप से पढ़ कर हमें बहुत आनन्द मिलता है।"

उनके पिता जी कबीर की कविता पर बेतरह लट्टू थे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उन से कबीर की रहस्यवादिता और उसके पन्थ को लेकर घण्टों बहस हुआ करती। मेरी युक्तियों और कहने की पद्धति से उन्हें बहुत सन्तोष होता। कभी कभी तो वे लड़कियों के साथ ही बैठ कर पाठ सुना करते। जब कभी उन्हें कहीं अच्छा स्थल दिखता तो मुझ से पुस्तक छीन कर खुद उन्हें पढ़ाने लगते। इस प्रकार की पढ़ाई से सारा परिवार ही लुत्फ़ उठाता।

लड़कियों ने देखा कि पिताजी पर मास्टर साहब का खूब रोब पड़ गया है तो उनका मन और बढ़ गया। अब तो उन्हीं की तरफ़ से ऐसी बातें हो जातीं कि मुझे दाँतों-तले अँगुली दबानी पड़ती। उनको पढ़ाते हुए क़रीब दस दिन हुए होंगे। इतने ही अर्से में हम एक दूसरे से हिल-मिल गए। पश्चिमी-प्रान्त की होने के कारण उनमें पर्दा तो था ही नहीं, आज़ादी भी खूब थी, इसलिए उनके साथ देर तक एकान्त में बैठने का सुअवसर प्राप्त हो जाता।

कामिनी कामना का रूप और यामिनी मधुरता की तसवीर थी। उम्र के लिहाज़ से कामिनी में प्रेम या वासना का अधिक अंश था। वह मुझ पर सर्वाधिकार सुरक्षित का साइनबोर्ड टाँग देना चाहती थी। उसे मेरा यामिनी से हँस कर बोलना भी नागवार मालूम होता। यामिनी जब मुझ से कुछ हँसी की बातें करती तो वह डाँट देती—"चुप रह! छोटा मुँह बड़ी बात नहीं की जाती।" बेचारी यामिनी मेरी ओर ताक कर रह जाती। जब कभी उसे अकेले बैठने का मौका मिलता तो वह कहती—"मास्टर जी! कामा एक नम्बर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की गन्दी लड़की है । इस के कमरे में अगर भूल से भी जाने का इत्तफ़ाक़ हो तो आप उलटे पाँव लौट आयेंगे ।"

यामिनी कामिनी को कामा और कामिनी यामिनी को यामा कह कर पुकारा करती । मैं उन्हें इन्हीं नामों से बुलाया करता । मैंने यामा की बात सुन कर कहा—"मगर रहती तो वह बहुत साफ़ है ।"

"नहीं नहीं । जब पढ़ने का समय होता है तो मुँह हाथ साफ़ कर लेती है । पाउडर वगैरह लगाकर आप को रिझाने की कोशिश करती है । आप शायद नहीं जानते, उसे तो नहाये हुए एक एक महीना हो जाता है !"

यामा इस प्रकार की बातों से ही मुझे अपनी ओर आकर्षित करना चाहती । कामा के सामने तो उसकी एक भी नहीं चलती, इसलिए उसके पीछे ही दिल भर कर शिकायत किया करती । कामा को छोटी बहन की सुन्दरता से सदा डर बना रहता । यामा कामा से ज़्यादा सुन्दर एवं शरीफ़ थी और पढ़ाई में तो उससे कहीं होशियार ?

कामा बात करने में जितनी ही निपुण थी, विद्या, बुद्धि में उतनी ही कुन्द-ज़हन । लेकिन यामा की प्रत्येक बात मुझ को विमुग्ध करती हुई प्रतीत होती । वह जाने या अनजाने कभी भी ऐसा अवसर नहीं देती जिस से छोटी-बहन कुछ फ़ायदा उठा सके ।

एक दिन गृह-स्वामी ने कामा से कहा—"तुम्हारी माँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाहौर में बीमार हैं, आज चिट्ठी आई है। नौकर के साथ जाकर देख आओ '

कामा ने कहा—"मेरे पेट में दर्द है! यामा को ही भेज दीजिये!"

यामा दादी और नौकर के साथ लाहौर चली गई। यामा की माँ अपने भाई के यहाँ ही रहा करती थीं। उनके भाई लाहौर के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। उस के जाने के बाद कामा को दिलका गुबार निकालने का मौका मिल गया। पढ़ाते-पढ़ाते एक पंक्ति पर चिह्न लगाने के लिए मैंने पेनिसल माँगी। उसने पेनिसल देते वक्त मेरी अँगुली पकड़ ली। मैं हैरान होकर उसका मुँह देखने लगा। उसने सिर-नीचा किए हुए कहा—"आप बहुत निठुर हैं?"

कामा की हिम्मत देख कर मेरी तो घिग्गी बँध गई। मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। उसने फिर कहा—"अगर कहिए तो आप के घर पर चली चलूँ!"

अब मुझ से चुप नहीं रहा गया। मैंने सतर्क बन कर उत्तर दिया—"चुपचाप पढ़ो समय बरबाद हो रहा है।"

उस समय उसकी हालत देखने वाली थी। ओठ काँप रहे थे। आँखों में मस्ती छा गई थी। माथे पर पसीने की बूँदें स्पष्ट दिखाई देने लगीं। मेरा दिमाग भी ठिकाने नहीं रहा। मैंने नर्म होकर कहा—"अच्छा, लिख कर बताओ कि तुम क्या चाहती हो?"

उसने कापी पर पेन्सिल से लिख दिया—"प्रेम!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तो क्या मैं तुम से प्रेम नहीं करता ?"

इस वाक्य ने कामा के नारी-हृदय का मथन कर दिया। वह जवानी के आवेश को रोक न उसी। आँखें झुका कर बोली—"नहीं, आप यामिनी को प्यार करते हैं। यामिनी ने एक दिन खुद कहा था कि मास्टर जी तुम्हें नहीं चाहते।"

सगी बहनों में भी ऐसी बातें हो सकती हैं, मुझे मालूम न था। मैंने उसे आश्वासन देते हुए कहा—"नहीं नहीं। उस ने तुम से झूठ कहा है। मैं तुम दोनों को ही एक नज़र से देखता हूँ।"

कामा आश्वासन में ऐसी कड़वी बात को सुनने की उमीद नहीं करती थी। उसका हृदय प्रतिस्पर्द्धा से धधक उठा। वह बौखला कर बोल पड़ी—"मगर प्रेम एक ही से किया जाता है।"

यह नारी-हृदय-की एक मात्र पुकार थी। मैं कैसे उसका विरोध करता। अपनी प्रेयसी के सामने प्रेमियों का अपना कोई सिद्धान्त नहीं रह जाता। मैंने उत्तर दिया—"यह तो ठीक है, किन्तु वह भी तो तुम्हारी बहन ही है।"

"बहन तो है, मगर इस मामले में स्त्रियाँ किसी की भी कुछ नहीं। आप नहीं जानते, मेरा दिल आपकी ओर से कितना सशंकित रहता है। रात-दिन यही सोचती हूँ कि कहीं यामा मुझ से आप को छीन न ले।"

इस वाक्य की गम्भीरता ने मुझे चिन्ता के सागर में डुबो दिया। वास्तव में कामा ठीक कहती है। अगर मुझे ही यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मालूम हो जाय कि यामिनी को कोई और युवक प्यार करता है, तो मुझे कितना दुःख होगा। मेरे अन्दर कैसी-कैसी प्रतिक्रियाएं हो उठेंगी। मैं किताब देखने के बहाने इसी प्रकार की बातें सोचने लगा।

कामा ने कहा—"मैं आप से आज एक बात पूछना चाहती हूँ।"

"पूछो!"

"आप यह बताइए कि मुझ में कौन सी ऐसी खराबी है कि आप मुझ से घृणा करते हैं?"

"मैं तुम से घृणा कब करता हूँ?"

"घृणा नहीं तो और क्या? आप यामा को प्यार करते हैं, इसका मतलब ही है कि आप मुझ से घृणा करते हैं।"

यह कामा के एकाधिपत्य का जोशीला कटाक्ष था। मैंने इसका कुछ भी उत्तर नहीं दिया। मगर वह तो आज निर्णय कराने पर तुली बैठी थी। मुझे मौन देखकर उसने कहा—

"बोलते क्यों नहीं आप?"

"क्या बोलूँ?" मैंने झुँझला कर कहा।

इस प्रकार की लड़की से आज तक कभी पाला न पड़ा था। मैं एक अजीब फेर में पड़ गया।

उसने पूछा—"आप यामा को प्यार करते हैं?"

मैंने सोच समझ कर उत्तर दिया—"हाँ! मैं उससे नफ़रत नहीं करता। उसकी विद्या-बुद्धि-सुन्दरता किसी से ऐसा मौका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं मिलता कि मैं उससे रुष्ट भी हो सकूँ।"

"और मुझ से मिलता है ?" उसने उत्तेजित होकर पूछा। मैं अप्रिय सत्य नहीं बोल सका—"नहीं ! तुम से भी नहीं मिलता।"

"फिर आप किसे प्यार करते हैं ?"

इस प्रकार का दो टूक जवाब देना ज़रा मुश्किल था। मैंने कहा—"दोनों से।"

वह रोषभरे शब्दों में बोली—"ऐसा नहीं हो सकता।"

उसी वक्त उस के पिता जी की साइकिल की घण्टी बज उठी। समय भी समाप्त हो चुका था। वह किताब उठा कर छत पर चली गई और मैं अपने डेरे पर लौट आया।

× × × ×

"आज पढ़ाई नहीं होगी।" आते ही कामा ने कहा।

"क्यों ?"

"जब तक कल वाली बात का फ़ैसला न हो जाय।"

"रातभर यही सोचती रही हो क्या ?"

वह मुसकुरा पड़ी। अपने पक्ष में फैसला लेने का यह सुन्दर हथियार था। मैंने वार सम्भालते हुए कहा—"कामा, इन प्रश्नों को छेड़ना ही हम लोगों की ग़लती है। जब तुम मुझे प्यार करती हो तो तुम्हें इस में फैसला वगैरह कराने की क्या ज़रूरत है ?"

"उस ज़रूरत को आप नहीं समझ सकते।"

"हो सकता है। किन्तु तुम भी मजबूर करके दूसरे से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रा और अपने प्रति प्रेम नहीं करा सकती।"

कामा इस उत्तर से असन्तुष्ट होकर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ना चाहती थी। उसने अब दूसरा शस्त्र ग्रहण किया। "आपने पहले किसी से प्रेम किया है?" उसने पूछा।

एक विचित्र प्रश्न था। मैंने उसके हृदय की थाह लेने के लिए कहा—"नहीं।"

"फिर आप हमारे दिल की व्यथा को कैसे समझ सकते हैं!"

कामा की इस चुटीली पंक्ति को सुन कर मुझे भी एक तीर हाथ लगा।

"मालूम होता है, तुमने पहले कभी प्रेम किया है।" मैंने कहा। वह स्तब्ध होकर कुछ सोचने लगी। इस स्तब्धता से मुझे उसके अतीत का बहुत कुछ ज्ञान हुआ। उसने अपनी कमज़ोरी छिपाते हुए कहा—"मैंने तो नहीं, लेकिन एक लड़का मुझे प्यार किया करता था। उस समय मैं मुलतान में थी। वह मेरे साथ ही पढ़ा करता था। उसकी सैकड़ों चिट्ठियाँ मेरे पास आईं परन्तु मैंने किसी का भी उत्तर नहीं दिया। एक पत्र में तो उसने लिखा था कि अगर तुम मेरे प्रेम को ठुकरा दोगी तो मैं ज़हर खा लूँगा।"

"क्या तुम ने उसके प्रेम का प्रतिकार किया?" मैंने उसकी कहानी को धारा तोड़ कर पूछा।"

"नहीं।"

"क्यों?"

"चूँकि मैं उसे प्यार नहीं करती थी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल में आया कि कह दूँ—'फिर मुझे ज़बर्दस्ती प्यार करने को क्यों कहती हो ? किन्तु शिष्टता ने इजाज़त नहीं दी। वह बोली—"आप ही मेरे जीवन में ऐसे व्यक्ति हैं जिसे मैंने प्यार करने की ख्वाइश की है। आज से पहले इस प्रकार की बातें तो मैंने अपने दिल से भी नहीं की थीं।"

कामिनी की कामना कितनी उग्र है, मुझे मालूम हो गया। मैंने देखा कि पढ़ाई का समय नष्ट हुआ जा रहा है तो कहा—"अच्छा ! अब किताब निकालो। परीक्षा बहुत नज़दीक है।"

खैर, किसी तरह एक आध घण्टे तक पढ़ाई हुई। चलते समय कामिनी ने कहा—"कल आप को अन्तिम निर्णय देना होगा।" मैं कुछ भी नहीं बोला। घर आकर सोचने लगा—'कामिनी को पाकर मेरी प्रेम-अनुभूतियाँ परिपक्व हो जायँगी। अगर अक्लमन्दी से आगे बढ़ता गया तो इस प्रेम से नारी-प्रकृति के अद्भुत मनोविज्ञान का पता चलेगा। कामिनी जैसी लड़की का संसर्ग मनोविज्ञान के विद्यार्थी के लिए स्वर्णावसर है। मैंने इस से चूकना मूर्खता समझा। लेकिन उस प्रेम में केवल-कामिनी ही तो नहीं थी। यामा के अस्तित्व ने इस पथ को अत्यन्त उलझन का पथ कर दिया था। मेरी हालत दो नावों पर एक एक पैर रखने वाले व्यक्ति की सी हो गई थी। न यामा को छोड़ते बनता था और न कामा को प्यार करते। लाख सोचने पर भी मैं तय नहीं कर सका कि मेरा कर्त्तव्य क्या होना चाहिए।

दूसरे दिन पढ़ाने के लिए गया तो देखा यामा भी आ गई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है। उसने प्रफुल्लित बदन से नमस्ते करते हुए कहा—

"पढ़ाई कहाँ तक हुई है ?"

"ज़्यादा नहीं। परसों तक तुम भी बराबर हो जाओगी। माता जी की तबीयत कैसी है ?"

"अब अच्छी है।"

कामा ने आकर कहा—'जाकर ऊपर से किताबें ले आओ।"

यामा जब किताब लेने गई तो उसने पूछा—"क्या सोचा आप ने ?"

मैंने समझा था कि जान बच गई मगर कामा कब छोड़ने वाली थी। मैंने कहा—"मुझे एक सप्ताह की मोहलत दो। मैं सोच-विचार कर उत्तर दूँगा।"

इतने में यामा किताबें लिए हुए आ गई। पढ़ाई शुरू करने के पहले कुछ इधर उधर की बातें हुईं। यामा लाहौर से 'रेखा' का एक अंक लिए आई थी। उसमें मेरी एक 'कहानी' छपी थी। यामा ने कहानी की नायिका का वर्णन पढ़ कर समझा कि शायद इस कहानी की आधार-भित्ति मुझ पर ही है। कामा ने भी जब पढ़ा तो उसे भी अपने पर ही लिखी हुई मालूम हुई। दोनों ने एक दूसरे से उस के मुताल्लिक कुछ भी नहीं कहा। पढ़ते पढ़ते कामा को प्यास लग आई थी। वह ज्यों ही पानी पीने के लिए गई कि यामा ने पूछा—"आपकी 'उर्वसी' नामक कहानी 'रेखा' में छपी है। बहुत सुन्दर कहानी है। किस पर लिखी है आपने ?"

"तुम पर !" मैंने कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मगर कामा समझती होगी कि मुझ पर लिखी गई है।"

मैं हँस पड़ा। इस उत्तर से यामा में विजयोल्लास छा गया था। उस की कल्पना सत्य होती दिखाई दी। मैंने कहा—"तुम्हारे लाहौर जाने पर कामा ने मुझे तंग कर दिया था। वह तुम से बहुत जलती है। तुम्हारी सुन्दरता उस की वासना में बाधा डाल रही है।"

पन्द्रहसाला यामा इन शब्दों की गहराई में तो न जा सकी, फिर भी उसे इतना ज़रूर मालूम हो गया कि मैं उसे कामा से ज़्यादा प्यार करता हूँ। वह इसी विश्वास को लेकर सुखी हो रही थी। उस में बड़ी बहन की तरह निर्भीकता नहीं थी कि वह भी फ़ैसला कराने पर तुल जाती।

कामा के आते ही हम लोग चुप हो गए। वह हम लोगों को ऐसे देख रही थी मानो कोई मैजिस्ट्रेट किसी अपराधी को देख रहा हो। उसे हमेशा अपनी बहन पर संदेह बना ही रहता। दिल का चोर उसे हर जगह नज़र आता।

दो या अधिक सुन्दर वस्तुओं के सामने आने पर दर्शक की दृष्टि सुन्दरतर या सुन्दरतम की ओर ही आकृष्ट होती है। पढ़ाते वक्त अक्सर मेरी आँखें यामा की ओर ही रहतीं। कामा जब कभी मेरी ओर देखती तो मैं अपनी आँखें यामा की ओर से हटा कर झट उस की तरफ़ कर लेता, लेकिन प्रेम की होड़ में दूसरा स्थान पाना कामा को बहुत अखरता। वह बड़ी होने के सबब अपना अधिकार ज्यादा समझा करती थी। यामा उसकी भाव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भंगियों को देख कर असहाय सी हो जाती। बड़ी बहन के सामने शिष्टाचार के विरुद्ध कुछ कहना या करना भारतीय संस्कृति की शान में बट्टा लगाना था, इसलिए उसे बस कुछ सहना पड़ता। हाँ, उसे कम से कम इतना सन्तोष ज़रूर था कि मास्टर जी कामा को अपने पर विजय नहीं प्राप्त करने देंगे, इसलिए डाँट-डपट खाकर भी वह हँसती ही रहती।

कामा और यामा मेरे लिए एक उलझन थीं। कई उलझनों से तो मनुष्य इतना तंग हो जाता है कि उस से जितनी जल्दी छुटकारा मिले, उसे उतनी ही ज़्यादा खुशी होती, मगर मुझे इस उलझन में एक अनूठे ढंग का मज़ा मिल रहा था। घर पर आकर भी बराबर यही चिन्ता लगी रहती कि कब वहाँ पहुँचूँगा।

दोनों बहनों का प्रेम दो तरह का था। पहली मेरे पीछे पागल थी और मैं दूसरी पर मुग्ध था। पहली मुझे प्यार करने को मज़बूर करती और मैं इन्कार करता और दूसरी के न कहने पर भी मैं प्रेम-भिक्षा माँगने के लिए तैयार रहता। मुझे इन दो मासों में अभूतपूर्व बातों का ज्ञान हो रहा था। आसक्ति से ही विरक्ति का प्रादुर्भाव है, इस की शिक्षा भी इसी प्रेम में प्राप्त हुई। यामा से आसक्ति का भाव ही कामा से विरक्त करा रहा है, इस का अनुभव मुझे नित्य-प्रति होने लगा। जो लड़की जीवन में एक बार प्रेम करती है और उस में असफलता पाकर दूसरी ओर हाथ बढ़ाती है, ऐसी लड़की से ज़रा बच कर रहना चाहिए। (यह चेतावनी लड़कों की ओर से लड़कियों को भी मिलनी चाहिए।) कामा की बातों से यह निश्चय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो गया था कि वह दुनिया देखी हुई लड़की है। मुझे यह मानने में हिचकचाहट नहीं कि मैं उस से कहीं ज्यादा अनुभवी था। 'फिर भी मैं उसे प्यार नहीं कर सकता'—यह भावना उस कारण से पैदा नहीं हुई बल्कि स्वभावतः वह मेरे हृदय को अच्छी नहीं लगती थी। उसकी वासनापूर्ण आँखों और आकृति से प्रेम की पवित्र झाँकी कोसों दूर थी, जब कि यामा सात्विक प्रेम की आभा से अपना मुख-मण्डल देदीप्यमान किये रहती। कामा की छाती विकार से जलती रहती। उसकी आँखों की लाली वासनाग्नि की दहकती हुई चिन-गारी दिखाई पड़ती थी, मेरी जवानी के रक्त में शान्त होने की इच्छा थी, मगर मैं इस कुर्बानी के लिए मुस्तैद नहीं था।

कामा से एक सप्ताह की मोहलत मिली थी। आज उस सप्ताह का आख़िरी दिन था। बहुत तर्क-वितर्क करने पर भी मैं किसी फ़ैसले पर नहीं पहुँच पाया। मैंने सोचा कि अगर ज़्यादा तंग करेगी तो कह दूँगा—"मैं किसी को भी प्यार नहीं करता।" वहाँ पहुँचने पर देखा कि कामा देवी अकेली विराजमान हो रही हैं। सारा उत्साह जाता रहा। मैं कुर्सी पर बैठ कर निबन्ध वाली कापी को पढ़ने लगा। कामा ने देखा कि मैं कन्नी काट रहा हूँ तो हाथ से किताब छीनती हुई बोली—"आप इसी तरह टाल देना चाहते हैं क्या? किन्तु मैं तो जवाब लेकर ही छोड़ूँगी।" उसने नादान बच्चे की तरह ज़िद करते हुए कहा।

आख़िर कहाँ तक बचाव होता। मैंने कहा—"अगर तुम आज ही पूछना चाहती हो तो सुनो!—"मैं न तुम्हें प्यार करता हूँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और न यामा को। मेरी ड्यूटी तुम्हें पढ़ाने की है कि प्रेम सिखाने की ? तुम ने मेरी भावुकता का ग़लत अन्दाज़ लगाया है।"

मेरे अरसिक उत्तर को सुन कर वह सन्न रह गई। एक सुन्दर और नौजवान लड़की किसी युवक से ऐसे उत्तर की आशा नहीं करती। मेरे चहरे के रोब को देख कर उसे आगे बोलने की हिम्मत न हो सकी, लेकिन बदला लेने की भावना उसकी आकृति पर स्पष्ट झलक रही थी।

× × ×

एक विचित्र परिवर्तन ! कामा की आँखें उस दिन से ज़्यादा उदास बन गईं थीं। अब यामा कोई गुस्ताख़ी भी कर देती तो उसे माफ़ी मिल जाती। दिन प्रतिदिन उसकी उदारता बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि यामा उस के सामने मुझे एकटक देखती रहती मगर कामा सब कुछ देख कर भी सिर नीचा कर लेती। कामा की इन हरकतों से मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। उस जैसी आवेगशीला लड़की इतनी जल्दी रास्ते पर आ जायगी, इसकी कोई आशा न थी। एक दिन मैंने पूछा—"कामा, तुम्हारे अन्दर इस प्रकार का परिवर्तन देख कर मुझे अचरज हो रहा है। वास्तव में तुम लोग सहिष्णुता और त्याग की मूर्त्ति हो।"

कामा बोली—"आप नारी-हृदय को नहीं समझ सकते। हमारे लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं।"

मैंने कामा की बातों को समझने की कोशिश नहीं की। कामा जैसी लड़की इतनी रहस्यपूर्ण बात कह जायगी, मुझे इसका कयास तक न था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करीब पाँच सात दिनों के बाद। यामा ने कहा—"कामा के सिर में दर्द है ! आज वह नहीं पढ़ेगी।"

सुनकर बहुत खुशी हुई। यामा के मुँह पर भी असीम आनन्द था। हम लोग पढ़ने बैठे। ऐसा सुन्दर मौका पढ़ाकर बिता दिया जाय। यह ठीक नहीं। केवल किताबें खोलकर सामने रख ली गई। बुजुर्गों का भी तो डर था।

यामा ने कहा—"मेरे लाहौर जाने पर कामा ने क्या कहा था आप से ?"

"वह मुझे तुम्हारी तरफ़ से निष्कंटक बनाने के लिए मजबूर कर रही थी। मगर तुम जानती हो कि दिल ज़बर्दस्ती देने लेने की चीज़ नहीं। जिस वक्त मैं पहले पहले तुम लोगों को पढ़ाने आया था न जाने तुम्हीं क्यों इतनी अच्छी लगी थीं।"

ऐसा कहते हुए मैंने उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया। वह भी मन्त्रमुग्ध-सी हो गई थी। न जाने किस आवेग में मैंने उठकर उसके सुन्दर कपोल पर अपना अधर रख दिया। उसका प्रेम-मग्न शरीर अशक्त सा होकर मेरी ओर झुक गया। ठीक इसी अवस्था में कामा के अट्टहास की निर्भय आवाज़ कान में घुस गई। हम शीघ्र अलग अलग हो गए। डर के मारे मेरा शरीर काँप गया। यामा घबरा कर मेरी ओर ताकने लगी। कामा की हँसी बन्द हो गई थी। उसने चिल्लाकर कहा—"यामा ! अन्दर आओ।"

मैंने यामा से कहा—"तुम चुपचाप बैठी रहो। देखें क्या होता है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कामा ने कितनी आवाज़ें दीं मगर कोई जवाब नहीं मिला। वह बिगड़ती हुई अन्दर आई और बिजली की तरह चमकती हुई बोली—"यामा! चलो अन्दर!" मेरे कुछ कहने के पहले ही वह उसे घसीटती हुई अन्दर ले गई। अब वहाँ बैठा रहना बेकार था। मैं तुरन्त उठ कर चल दिया। मेरे आने के बाद न जाने क्या हुआ।

घर पर आकर सोचने लगा कि कल वहाँ जाना उचित होगा या नहीं। मेरे निडर मन ने कहा—'डरकर न जाना कायरता होगी। अपनी बुद्धि पर भरोसा रख कर कर्तव्य-पथ पर दृढ़ रहो।' मैं रोज़ की तरह उस दिन भी पढ़ाने के लिए गया। कामा शायद पहले ही से मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मैं जाकर कुर्सी पर बैठ गया। उसके चेहरे पर ग़रूर के भाव दिखाई पड़ते थे।

उसने गर्व से कहा—"आप को याद है; कुछ दिन पहले मैंने कहा था कि आप नारी-हृदय को नहीं समझ सकते?"

"हाँ! खूब याद है।"

"मैं आज भी आपको बता देना चाहती हूँ कि अगर आप मेरी बात नहीं मानेंगे तो कल वाली घटना आप के पक्ष में बहुत बुरी होगी।"

धमकी में ताक़त तो काफ़ी थी मगर मैं भी कोई कम खेला हुआ नहीं था। हँसते हुए बोला—"मैंने तुम्हारी बातों को टाला कब है?"

"मुझे अब ज़्यादा धोखा नहीं दिया जा सकता। मास्टर साहब! आप वास्तव में एक कठोर दिल के आदमी हैं। आप जैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

युवक की मैंने आज तक कल्पना भी नहीं की थी।" हो सकता है कि कामा के इस कथन में कुछ सचाई का भी अंश हो, मगर मेरे लिए यह बात कोई गौरवास्पद नहीं थी। यामा के सामने उसकी उपेक्षा का भाव कोई त्याग या ब्रह्मचर्य की वजह से पैदा नहीं हुआ था, फिर भी वह मुझे एक अजीब युवक समझती थी। उसके और मेरे विचार में सामञ्जस्य भी काफ़ी था। वह मुझे जितना अजीब समझती, मुझे भी वह उतनी ही विचित्र नज़र आती। उसका ख्याल था कि उसने मेरे जैसे नौजवान को कभी नहीं देखा, तो मेरी भी यह शिकायत थी कि मुझे इस जैसी लड़की से कभी पाला नहीं पड़ा। यानि किसी तरह भी हमारी पटरी जमती नहीं थी।

कामा ने अपनी बात को दुहराते हुए कहा—"न जाने आप मुझे इतनी हिक़ारत की नज़र से क्यों देखते हैं।" उसने मेरे सामने दो चीज़ें रखीं। एक तरफ़ अपमान और दूसरी तरफ़ प्रेम !

उसने आगे कहा—"कल वाली घटना दादी जी को मालूम हो गई है। हो सकता है कि पिता जी को भी कल-परसों तक मालूम हो जाय ! मैं नहीं चाहती थी कि आप किसी तरह से दुखी किए जायँ। आगे जैसी आप की मर्ज़ी।"

वह ऊँची साँस लेकर चुप हो गई। मैं एक भारी चिन्ता में पड़ गया। जी में आया कि ट्यूशन ही छोड़ दूँ, फिर सोचा—मगर यह तो परले दर्जे की बुज़दिली होगी। दिमाग़ में एक आँधी-सी उठ गई।

कामा ने उसी समय धीरे से कहा—"आप के मकान का नम्बर क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"ग्यारह !"

"शाही मुहल्ले में न ?"

"हाँ !"

" तो मैं इतवार की शाम को आऊँगी ।"

मुझे कामा की बातें सपने जैसी मालूम हुईं । इसे क्या हो गया है ? वासना में इसका शरीर इस क़दर ग्रस्त हो रहा है । क्या यही लड़कियाँ अपने आपको अविवाहित रखने का दावा करती हैं ! इनके माँ-बाप को भी तो अपनी सन्तानों की परवा नहीं, दिल में कई प्रकार के विचार आए, किन्तु वह विचार-विमर्श का समय नहीं था । मेरी मानुषिक दुर्बलता ने मुझ पर विजय प्राप्त की । मैं उसको मेहमान-नवाजी का इकरार करके घर लौट आया ।

× × ×

रविवार का दिन था । आज ही शाम को कामा आने वाली थी । इधर-उधर घूम कर चार-पाँच बजे घर आ गया । सूर्यास्त होने के एक घण्टा बाद गली की तरफ़ का दरवाज़ा किसी ने खटखटाया । मैंने उठ कर खोल दिया । कामा लाल साड़ी में सजी हुई अन्दर चली आई । दरवाज़ा बन्द करते वक्त दिल धड़क रहा था कि कहीं किसी ने देख न लिया हो । कामा ने कहा—"चलिए, ऊपर चलें ।" हम लोग छत पर चले गए । कामा खाट पर बैठ गई और मैं उसके सामने सिमेन्ट के बने चबूतरे पर । उसने कहा—"मैं सच्ची हिन्दू नारी हूँ । आप को नहीं मालूम कि मैंने कितनी भारी प्रतिज्ञा करली है ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरी अवस्था तो साँप-छुछून्दर की सी हो गई थी। उसकी बातों में दिलचस्पी न होते हुए भी मैं बोला—"नहीं, मुझे उस प्रतिज्ञा की जानकारी नहीं।"

कामा ने कहा—"मैं आप के साथ ही जीवन बिता देना चाहती हूँ। अगर आप मेरी इच्छा की हत्या करेंगे तो मैं एक सप्ताह के अन्दर अन्दर यह प्रान्त छोड़ कर कहीं और चली जाऊँगी।"

मेरा तो सिर ही चकरा गया। मैं सोचने लगा—न जाने मुझ में ऐसी कौन सी अलौकिक विशेषता है कि मेरे सिवा इसे और कोई पसन्द ही नहीं आता। स्त्रियों का चरित्र दरअसल एक पहेली है। वह ढोल की तरह मेरे गले पड़ जाना चाहती थी। मैंने गम्भीरता-पूर्वक उत्तर दिया—"कामा, तुम एक समझदार लड़की हो। अगर शादी ही कराने का विचार है तो अपने माता पिता से पूछ लो। मैं तुम्हारी आज्ञा मानने के लिए तैयार हूँ।" उसने तुरंत उठकर मेरा पैर पकड़ लिया। उसकी आँखों से आँसू की अविरल धारा बह चली। मैंने उसे उठाकर अपने पास बैठा लिया। कामा वास्तव में क्या है, यह मेरी समझ के बाहर की बात थी।

मैं और कामा वासना के बहाव में सर्वनाश की ओर जाने वाले ही थे कि रोशन ने पुकारा—"चन्द्र, दरवाज़ा खोलो" मैंने कामा से कहा—"शीघ्र ही गली की राह निकल जाओ।"

कामा जैसे ही बाहर निकली कि रोशन ने उसे देख लिया। वह भी उसी दरवाज़े से मुझे पुकार रहा था। कामा उसे देखते ही भयभीत हो गई। अंधेरी रात थी शायद इसीलिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोशन उसे पहचान न सका। उसने कमरे में पैर रखते ही पूछा—"किसे फँसाकर लाये थे?"

"फँसा कर नहीं एक लड़की पढ़ने आई थी।" मैंने गम्भीर बन कर कहा।

रोशन मेरा परम मित्र था। अविश्वास करते हुए भी वह मुझे सताना नहीं चाहता था। उसने हँस कर कहा—"ओ, तो वह पढने आई थी?"

उसका यह छोटा सा वाक्य मेरी चुटकी लेने के लिए काफ़ी था।

रोशन से उस घटना पर ज़्यादा बातें नहीं हुई। सोमवार के प्रातःकाल यथाविधि मैं पढ़ाने के लिए रवाना हुआ। कामा और यामा दोनों ही थीं। उस दिन बगैर किसी विशेष बात के पढ़ाई समाप्त हो गई। निबन्धों की कापी वहाँ पर देखने के बजाय मैं घर पर लिए आया। कामा की लेखनी तो दो तीन पृष्ठों में ही कुण्ठित हो गई थी, किन्तु यामा ने दस-बारह पेजों में अपने सुन्दर विचारों का दर्शन कराया था। लेख की समाप्ति में एक छोटा सा काग़ज़ का टुकड़ा दिखाई दिया। मैं उसे यों ही उठा कर पढ़ने लगा।

"मैं मर जाती तो अच्छा था।............कामा उनके घर भी हो आई और मुझे.........नहीं गया। हे परमात्मा .... पास बुला लो।"

बीच के शब्दों को स्याही से इस तरह पोत दिया गया था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि बहुत चेष्टा करने पर भी उन्हें पढ़ा नहीं जा सका। मगर इन्हीं शब्दों के सहारे मानो यामा की पीड़ा पुकार-पुकार कर मेरी भर्त्सना कर रही थी। मैं पत्थर के समान बैठा ही रह गया। क्या एक मौन प्रिय लड़की के अकथित प्रेम का यही सम्मान है ? क्या प्रेम के सामने कामुकता की विजय होनी चाहिए। मैंने यामा के साथ घोर अन्याय किया है। मुझे इसका उचित दण्ड स्वीकार करना होगा ! मेरा हृदय रह रह कर मुझे धिक्कारने लगा। मैंने निश्चिय कर लिया कि यामा से इसके लिए माफ़ी माँगना अत्यन्त आवश्यक है।

दूसरे दिन मैं पढ़ाने के लिए गया। यामा कामा के साथ ही बैठी थी। थोड़ी देर के बाद उनके पिता जी वहीं आ गए। पूछा—"कहिए कौन सी किताब प.ा रहे हैं ? अलंकार।"

"वृत्युनुप्रास !"

वे झूमते हुए बोले—"अनुप्रास की योजना हिन्दी-साहित्य में जिस उच्चता तक पहुँच गई हैं वहाँ तक किसी भाषा की नहीं पहुँची।" उन्होंने वेणी का एक कवित्त सुनाया जिस में करीब पैंतालीस बार क की आवृत्ति थी। दोनों बहिनें अपने पिता की बहुज्ञता पर फूली न समाई। मुझे भी उनके साहित्य-प्रेम को देख कर बहुत आश्चर्य हुआ। एक रिटायर्ड इन्जीनियर साहित्य के प्रति इतना अनुराग रखता है, यह कम गौरव की बात नहीं थी। चलते समय उन्होंने कामा को भी साथ ले लिया। न जाने कौन सा काम था। उसके जाते ही यामा के मुखसे उदासी के बादल फट गए। वह मेरी तरफ़ देखने लगी। स्त्रियों के लिए लज्जा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यामा के अन्दर कूट कूट कर भरी हुई थी। वह अपनी बहन की प्रतिकूल-मूर्ति थी। जहाँ कामा मुँहफट की तरह सारी बात साफ़-साफ़ कह देती वहाँ यामा मेरे बोलने की प्रतीक्षा में अपने भावों को दबाए हुए बैठी रहती। प्रायः सभी शीलवती ललनाओं में यही गुण होता है। वे "न" की आड़ में "हाँ" का प्रयोग और मौन में प्रणय-अख्यान प्रकट करती हैं। जब मैंने यामा को देखा कि वह मुझ से मेरी सफ़ाई सुनने के लिए उत्कंठित है तो मैंने कहा—"तुम्हारा लेख मैंने पढ़ लिया है।" यामा भोली सी बन कर बोली—"कौनसा ?"

'जिस में तुम ने लिखा है कि मैं मर जाती तो अच्छा था।' इतना कहना था कि न जाने उसकी आँखों में इतनी जल्दी आसूँ कहाँ से आगए। स्त्रियों में न जाने अभिनय की मात्रा ज्यादा होती है या करुणा की, मैंने अभी तक नहीं समझा। फिर भी मैं इतना कहने की जुर्रत कर सकता हूँ कि उन में करुणा और अभिनय की मात्रा करीब समान होती है। मैंने फिर कहा—"कामा, मेरे यहाँ गई थी, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली, मैं इस घटना से बहुत दुखी हूँ और तुम से वादा करता हूँ कि आगे से मेरा कोई भी काम तुम्हारी इच्छा के ख़िलाफ़ नहीं होगा।"

यामा बोली—"वह मेरी बड़ी बहन है। मैं उसके विषय में कुछ भी नहीं कह सकती, फिर भी आप को यह जान लेना बहुत ज़रूरी है कि आप ज़रा सावधानी से पेश आइएगा। वह बहुत क्रोधी और आवेगशील लड़की है।" यामा की समझदारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से भरी हुई चेतावनी वास्तव में कामा की रूपरेखा के अनुरूप ही थी। मैंने कहा—"मैंने उसको अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं मनुष्यों को उनकी आकृति से ही भाँप लिया करता हूँ।"

"आप ने मुझे भी पढ़ा है?"

"हाँ हाँ! खूब अच्छी तरह।"

"तो बताइए कि मैं किस प्रकार की लड़की हूँ।"

मैंने मुसकुराते हुए कहा "सुन्दर, सरल, अल्हड़ और..."

"और क्या?"

"शरारती!"

यामा हँसने लगी। मैंने भी उसका साथ दिया।

उसने पूछा—"आप हाथ भी देखना जानते हैं?"

"हाँ हाँ! भला यही नहीं जानूँगा! लाओ देखूँ।" उसने अपनी लाल हथेली मेरे सामने कर दी।

"अहाहा! कितना सुन्दर हाथ है!" मैंने ज्योतिषियों की तरह सिर झुकाते हुए कहा—"भाग्य-रेखा, हृदय-रेखा और आयु-रेखा सब की सब बलवती हैं। तीन लड़के हैं और दो लड़कियाँ। दूल्हा बहुत सुन्दर मिलेगा तुम्हें।"

यामा ने लपक कर मेरे मुँह पर हाथ रख दिया। शादी की बात से सभी लड़कियों को शर्म मालूम होती है। हालाँकि उनके कान अपने विवाह और दूल्हे के विषय में ज़्यादा से ज़्यादा बातें सुनने के लिए विह्वल रहते हैं। यामा ने दूल्हे और लड़के, लड़कियों की बातें सुन कर मेरे मुँह पर हाथ रख दिया था, लेकिन शीघ्र ही हटा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिया, क्यों कि मेरे ओठ अपना काम कर उठे थे। उसने शर्माते हुए कहा—"ऊँहूँ! आप को हाथ देखना नहीं आता।"

"क्यों?"

क्यों का उत्तर उसके पास नहीं था। वह मुसकराने लगी। मैंने कहा—"अच्छा! लाओ हाथ, एक और बढ़िया बात बताऊँ।"

उसने अपने बायें हाथ को पीछे छिपा लिया। मैं उसे आगे लाने के लिए उठा ही था कि कामा आ गई। मैं उठा तो था ही टेबुल से एक मोटी किताब ले कर देखने लगा। मेरी इस चालाकी से कामा पहले की बातों का अन्दाज़ नहीं लगा सकी। उसने कहा—"ये पिता जी की लाइब्रेरी है। आपको ये पुस्तकें अच्छी नहीं लगेंगी। सब इन्जीनियरी की हैं।"

मैं एक-आध क्षण तक किताबों को देख-भाल कर कुर्सी पर आ बैठा। एक घण्टे के बाद पढ़ाई समाप्त हो गई थी। चलते समय कामा ने छोटी बहन की आँख बचा कर मेरे हाथ में एक पत्र दे दिया। मैं तुरन्त ही पाकिट में डाल कर बाहर निकल आया। साइ-किल पर चढ़ने के पहले ही मैंने उसे पढ़ा।

"आज शाम को उसी समय! घर पर ही रहियेगा।

'यामा'।"

चिट्ठी पढ़ कर मिजाज़ खराब हो गया। कैसी बेहूदा लड़की है। मान चाहे न मान मैं तेरा महमान! न जाने मुझ में इसे रस-गुल्ला नज़र-आता है या कलाक़न्द! ख़ामख्वा जान मारे जा रही है। मैंने इरादा किया कि इस दफ़ा लैला साहिबा को छकाए बिना

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छोड़ूँगा नहीं। अगर इस बार इसे यों ही जाने दिया तो हाथ धोकर पीछे पड़ जायगी। इस में ऐसे कोई सुर्ख़ाब के पर भी नहीं लगे कि बदनामी भी सही जाय। जवानी की तरंग थी। फक्कड़पने की तबीयत! मैंने दो-चार दोस्तों से कहा कि आज शाम को एक चिड़िया आ रही है। तुम सब लोग आ जाना। चाण्डाल चौकड़ी के यारों को और क्या चाहिए था। उन्हों ने आठ बजे के बजाय सात बजे से ही मेरे यहाँ डेरा डाल दिया। करीब सआ आठ बजे दरवाज़े पर खटखटाहट सुनाई पड़ी। एक दोस्त भागा-भागा गया और दरवाज़ा खोल दिया। घुप अँधेरा था। कामा ने उनको न पहचानते हुए पूछा—"और कोई तो नहीं है?"

"नहीं।" दोस्त ने बोली बदल कर कहा, मगर वह तुरन्त ही समझ गई। वह कुछ कहता या करता इसके पहले ही वह तुरन्त बाहर चली गई। इस तरह पलक मारते ही उसका हाथ से निकल जाना मेरे मित्र को बहुत अखरा। उस ने आकर कहा—"आय हाय! बना-बनाया मामला बिगड़ गया!"

"क्यों क्या हुया? क्या हुआ?" को कितनी आवाज़ें निकलीं।

उस ने हाथ मलते हुए कहा—"अरे कुछ मत पूछो। बस यों समझो कि शिकार जाल में से निकल भागा।" उसने सब बातें हम लोगों को सुना दीं।

हँसी का फौव्वारा छट पड़ा। उन्होंने पूछा—"यह थी कौन?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने उन्हें ग़लत उत्तर दिया—"चौक की पनिहारिन की लड़की।" थोड़ी देर के कोलाहल के बाद मैं घर में अकेला ही रह गया, यह शरारत हो तो गई लेकिन इसका परिणाम भी अभी भुगतना पड़ेगा। कामा बड़ी अजीब लड़की है। इस दफ़ा वह ऐसा बदला लेगी कि अगले जन्म में भी नहीं भूल सकूँगा। डर के मारे मैं दूसरे दिन पढ़ाने नहीं गया। शाम को कामा का नौकर मेरे घर पर आया। उसने कहा—"बीबी जी ने पूछा है कि आपकी तबीयत तो अच्छी है!"

मैं बोला—ज़रा सिर में दर्द हो गया था इसी लिए पढ़ाने नहीं आया। उनसे कह देना कि कल ज़रूर आऊँगा।"

दूसरे दिन मैं हिम्मत करके पढ़ाने चला। मन में कई प्रकार का भय हो रहा था। वहाँ जाते ही कामा ने कहा—"न जाने आप कल कहाँ चले गए थे। मैं जाकर लौट आई। वहाँ जाने पर एक और आदमी ने दरवाज़ा खोल दिया। मैंने समझा कि आप ही हैं मगर अन्दर आते ही मेरा संदेह दूर हो गया। मैं वहाँ से तुरन्त ही चली आई।"

मैंने समझा कि चलो बेलाग बच गया। उसे मेरे षड्यन्त्रों का पता नहीं चला, लेकिन उसने कुछ रुक कर पूछा—"आप वहाँ पर थे या नहीं?"

"हाँ, मैं ऊपर लेटा हुआ था। सिर में कुछ दर्द था।"

उसने उठ कर कहा—"नहीं, आप झूठ बोलते हैं। मैं आप की तलाशी लूँगी।" उसने झट आगे बढ़ कर मेरे कुरते की पाकिट

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से सब कागज़ात निकाल लिए। उसमें यामा और उसकी दोनों चिट्ठियाँ थीं। उसने उन्हें निकाल कर शेष कागज़ों को मेरे सामने रख दिया। मैं मुँह बा कर देखता ही रह गया। उपन्यास की घटना की तरह सब घातें हो गई, मगर मैं तसवीर की भाँति हिल-डुल भी न सका। ऐसा मालूम हुआ मानों चन्द्रकांता सन्तति के ऐयारों के हाथ में पड़ गया हूँ। मेरे मुँह से चूँ भी नहीं निकल सका। उसने कहा—"पढ़ाना शुरू कीजिये, आज यामा को बुख़ार हो गया है। वह पढ़ने नहीं आयगी।"

मैंने देखा कि कामा मुझ पर ग़ालिब होने की कोशिश में है तो डपट कर कहा—"देखो, कामा, मुझे वे चिट्ठियाँ वापस कर दो वरना ठीक नहीं होगा।"

वह ज़ोर से हँस पड़ी। मेरी तो बुद्धि ही चकरा गई। उसने हँसते हुए कहा—"मास्टर जी! मुझे सब मालूम हो गया है। आप यामा को लेकर यहाँ से चम्पत हो जाना चाहते हैं। मैं आख़िर पसन्द नहीं आई न आपको?"

मैं चुप था। ऐसा मालूम हुआ कि यहाँ नारी-चरित्र के क्रियात्मक-रूप को देखने के लिए मैं किसी लेबोरेट्री में भेजा गया हूँ। उसने आगे बोलना शुरू किया—"आप आगे से किसी औरत को छकाने की कोशिश मत कीजियेगा। हम लोगों से खुदा भी डरता है।"

एक बार फ़ारसी के मशहूर शायर शेख़ सादी ने विचार किया कि मैं औरतों के जितने चरित्र हो सकते हैं लिखूँगा। इसी विचार को लेकर उन्होंने एक किताब लिखी और उसमें औरतों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की चालाकियों के साठ हज़ार तरीके बताए । उनको इस पुस्तक की समाप्ति का बहुत ही अभिमान था । एक दिन वे उस विशालकाय ग्रन्थ को ले कर बादशाह के ज़नानख़ाने के पास से गुज़र रहे थे । संयोग से वहाँ की शाहज़ादी महल की छत पर हवाख़ोरी कर रही थी । उसने लौंडियों से पूछा—"इतनी मोटी-चौड़ी किताब लेकर यह कौन जा रहा है ? जाकर पता तो लगाओ ।" लौंडियाँ भागी हुई गईं और वापस आकर अर्ज़ किया—"हुजूर ! वे अपने यहाँ के मशहूर शायर शेख़ सादी साहिब हैं । उस किताब में उन्होंने औरतों की सारी मुमकिन चालों का बयान दर्ज़ किया है ।"

शाहज़ादी को सुनकर बहुत हैरानी हुई । उसने लौंडियों को हुक्म दिया कि उन्हें बुला कर मेरे पास लाओ और एक लौंडी को कहा कि जाकर बादशाह को ख़बर दो कि समीम बीमार है । बादशाह अपनी इकलौती बेटी समीम को जी जान से प्यार करते थे । उस की बीमारी का हाल सुनकर हरम की ओर भागे । इधर शेख़सादी को पलंग पर बिठा कर शाहज़ादी समीम ने कहा—'आप ने इसको लिख कर पुरुष जाति की बुद्धि को ही बदनाम किया है । आप इसे पूर्ण समझते हैं, यह और भी दुख की बात है ।"

शेख़सादी ने कहा—"शाहज़ादी ! मैं तुम्हारी-बातों में आकर अपनी किताब की कीमत समझना भूल नहीं सकता । आख़िर तुम भी तो औरत हो न ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शेख़सादी का यह वाक्य समाप्त हुआ ही था कि बादशाह ने गरज कर कहा—"दरवाज़ा खोलो।"

शेख़सादी डर के मारे थर थर काँपने लगे। उन्होंने कहा—"जान तो मेरी जायगी ही, मगर यह घटना भी मेरी किताब में है, मुझे इस बात की बहुत ख़ुशी है।"

शाहज़ादी ने कहा—"आप इतनी जल्दी घबरा क्यों गए। जाकर उस सन्दूक में छिप रहिये देखिये क्या होता है।"

शेख़सादी चुपचाप जा कर सन्दूक में बैठ रहे। शाहज़ादी ने उसे बन्द करके ताला लगा दिया और कुञ्जी खूँटी पर टाँग दी। इसी छिपा-चोरी में ज़्यादा देर हो गई थी। बादशाह ने फिर चिल्ला कर कहा—"खोलो दरवाज़ा।"

शाहज़ादी ने जाकर दरवाज़ा खोल दिया। बादशाह क्रोध के मारे आग-बबूला हो रहे थे। उन्होंने शाहज़ादी का हाथ ज़ोर से पकड़कर पूछा—"बाहर जूता किस का है?"

शाहज़ादी-बोली—"मेरे यार का।"

बादशाह ने तलवार म्यान से बाहर निकाल कर पूछा—"कहाँ है वह शैतान?"

इधर शेख़ जी डर के मारे बेहोश हो रहे थे।

"उस सन्दूक में।" शाहज़ादी ने उत्तर दिया।

"और उसकी कुञ्जी?"

"उसी खूँटी पर टँगी—है।" उसने मुसकराते हुए कहा।

बादशाह ज्यों ही खूँटी से चाभी लेकर सन्दूक की ओर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बढ़े कि शाहज़ादी ने लपक कर उन्हें रोक दिया और शेरनी की तरह दहाड़ती हुई बोली—"तोबा ! तोबा !! इसी अक्ल पर आप बगदाद-की सल्तनत सम्भालने चले हैं ! अब्बा ज़रा सोचिये एक लड़की अपने यार को घर में छिपा कर अपने बाप को अन्दर बुला भेजेगी ? और उसे सन्दूक में बन्द करके उसकी कुञ्जी बाप ही के हाथ में रख देगी ? कितनी मोटी सी बात है, मगर गुस्से में आप को कुछ भी नहीं मालूम हो सका ।"

बादशाह का तो खून ही सूख गया। बेचारे मुँह बना कर सीधे दरबार में लौट गए। शेखसादी ने बाहर निकल कर अपनी किताब में आग लगा दी और बोले—मुझे आज मालूम हो गया कि औरतों पर कुछ लिखना खुदा पर लिखना है !" कामा ने कहानी सुनाकर कहा—आपने उसी शाहज़ादी के साथ विश्वास-घात किया है मगर वह उसका बदला नहीं लेना चाहती। अगर अब भी आप उसके प्रेम को नहीं पहचानते तो इसमें उसका कोई दोष नहीं ।"

उस समय मेरी अवस्था बहुत ही विचित्र हो गई थी। मैंने कहा—"कामा, मैं अपने अपराध के लिए बहुत दुखी हूँ। मुझे क्षमा करो ।"

कामा ने मेरा हाथ लेकर अपनी आँखों पर रख लिया और कहा—"अगर अब भी आप मुझे अपने चरणों में जगह दें तो मैं कृतार्थ हो जाऊँगी ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा कहते हुए वह मेरे पैरों से लिपट कर रोने लगी। मैं उसे पर्याप्त सान्त्वना देकर घर चला आया।

आज की घटना जीवन में कभी न भूल सकने वाली घटना थी। कामा का विराट् रूप देख कर मैं परेशान था। इस जैसी लड़की का ख्याल मैंने सपने में भी नहीं किया था। कैसी भयंकर और रहस्यमयी! वह साक्षात् यम के समान ही मुझे मालूम हुई। उस से प्रेम करना खतरे से खाली नहीं था। मैं ने निश्चय कर लिया कि ट्यूशन भी छोड़ने की नौबत आ जाय तो आजाब मगर उस से कोसों दूर रहूँगा। लेकिन एक बात यह भी थी कि कामा से दूर रह कर मैं यामा के निकट नहीं जा सकता था। दिल में दुविधात्मक संघर्ष चलने लगा। ट्यूशन को छोड़ देना यामा के प्रेम से वञ्चित रह जाना था और उसे जारी रखना कामा से मुसीबत मोल लेना था। फ़र्ज की अदायगी किस तरह हो सूझता नहीं था। अभी परीक्षा में भी डेढ़ मास की देरी थी। मैंने सोचा कि यामा के प्रेम से ज़बर्दस्त कामा का नाग-फाँस है इस लिए उस से बचकर ही रहना चाहिए। लड़कियों के ट्यूटर की बहुत ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। अगर एक बार बदनामी हो गई तो किसी घर में घुसना मुहाल हो जाता है।

मेरे एक दोस्त थे पं० विश्वनाथ शास्त्री। मैं उन्हें लेकर कामा के यहाँ गया और बोला—"आज से तुम लोगों को यही पढ़ायँगे।" दोनों चकित होकर मेरी ओर ताकने लगीं। कामा ने पूछा—"क्यों? आप कहीं जा रहे हैं क्या?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"हाँ ! घर जा रहा हूँ ।" मैंने झूठ बोल कर जान बचाई । "मेरे भाई की शादी है ।"

शास्त्री जी को वहाँ भेजने का अभिप्राय यह था कि कामा से छुटकारा भी मिल जायगा और साथ में यामा से पत्र-द्वारा प्रेम-व्यापार भी चलता रहेगा । दोनों को राज़ी करके मैं खुशी खुशी घर लौट आया । शास्त्री जी ने मौका पाकर यामा को सारी बातें बता दीं । वह मेरी इस चाल से उसे बहुत खुश हुई ।

अब रोज़ दिन हमारा पत्र-व्यवहार चलने लगा । कामा को तो मालूम था कि मैं भाई की शादी में घर गया हूँ । शास्त्री जी की होशियारी ने भी ग़ज़ब का करिश्मा दिखाया । प्रेम की दुनिया में हम लोग मस्त हो कर विचरने लगे । साँप भी मर गया और लाठी भी न टूटी । प्रसन्नता का पारावार न था । इसी चिट्ठी-पत्री में करीब दस-बारह दिन गुज़रे होंगे कि एक दिन शास्त्री जी आए और मुँह लटका कर बोले—"चन्द्र जी ! बहुत बुरी ख़बर है ।"

मैं घबराया, परमात्मा जाने यामा की मृत्यु हो गई या कामा ने अपने पिता जी को सारी बातें बता दीं । मैंने कहा—"जल्दी कहिए न ।"

वे बोले—"उनका सारा परिवार मुलतान जा रहा है । लड़कियाँ परीक्षा भी नहीं देंगी ।"

"कब जा रही हैं ?"

"आज आठ बजे भोर की ट्रेन से ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शास्त्री जी मेरे पास सात बजे आए थे ! उस समय किया ही क्या जा सकता था। मैं दिल मसोस कर रह गया। उसी वक्त सामने की कोठी में कोई संगीताचार्य लड़कियों को गाना सिखा रहे थे—

"जब चिड़ियों ने चुग खेत लिया फिर पछताये का होवत है।
उठ जाग मुसाफ़िर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है।"

———

Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE